श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान

(जिनशासन यक्ष-यक्षिणी सहित छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान)

आशीर्वाद
ग.ग. श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

संपादन
आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

श्री क्षेत्रपालजी-कुंथुगिरी

रचनाकार : मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी

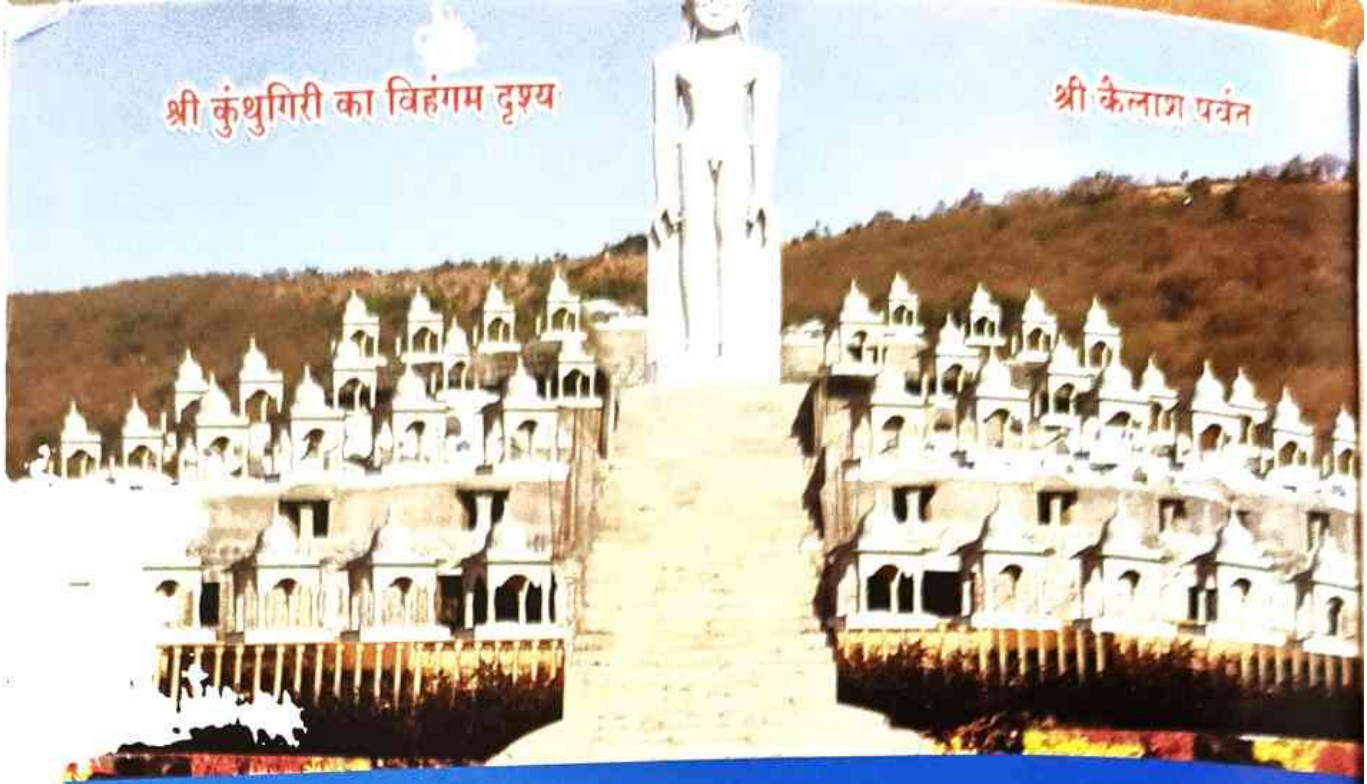

श्री कुंथुगिरी का विहंगम दृश्य

श्री कैलास पर्वत

श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान

(जिनशासन यक्ष-यक्षिणी सहित छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान)

मूलकर्त्ता

आचार्य श्री विश्वनंदीजी (पूर्वाचार्य)

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

ग.ग. श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव

आशीर्वाद एवं संपादन

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

मुनि चन्द्रगुप्तजी

परम पूज्य भारत गौरव
ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव के
50वीं स्वर्ण दीक्षा जयन्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में
पूज्य गुरुदेव के
कर-कमलों में सविनय समर्पित

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पुस्तक का नाम	:	श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
मूलकर्त्ता	:	आचार्य श्री विश्वनंदीजी (पूर्वाचार्य)
आशीर्वाद एवं प्रेरणा	:	गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव
आशीर्वाद एवं संपादन	:	प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव
विशेष सहयोग	:	मुनि श्री महिमासागरजी
संयोजन	:	मुनि श्री सुयशगुप्तजी
रचनाकार	:	मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी
सहयोग	:	गणिनी आर्यिका क्षमाश्री आर्यिका आस्थाश्री, क्षुल्लिका धन्यश्री
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	ग.ग. श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
संस्करण	:	द्वितीय-2016
प्रतियाँ	:	1000
प्रकाशक	:	श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, पोस्ट-कचनेर, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) www.jainacharyaguptinandiji.org E-mail : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान	:	श्री क्षेत्र कुंथुगिरी, ग.ग. कुंथुसागर विद्या शोध संस्थान रामलिंग रोड़, कुंथुगिरी, पो. आलते, ता. हातकडंगले जिला-कोल्हापुर (महा.)
मुद्रक	:	राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर फोन : 0141-2313339, मो.नं. : 9829050791 E-mail : shahsundeep@rocketmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	आशीर्वाद–ग.ग.आचार्य कुंथुसागर (कुंथुगिरी)	5
2.	शास्त्रों में जिनशासन प्रभावक शासनदेव–देवियों की मान्यता	6
3.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामना–आचार्य कनकनन्दी	18
4.	संपादकीय एवं आशीर्वाद – आचार्य गुप्तिनन्दी	23
5.	मेरा स्वर्णिम अवसर–मुनि चंद्रगुप्त	25
	प्रथम खण्ड	
6.	श्री नित्यमह पूजा–ग. आर्यिका राजश्री माताजी	29
7.	श्री नवदेवता पूजन–ग. आर्यिका राजश्री माताजी	33
8.	चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा–मुनि चन्द्रगुप्त	36
9.	श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ पूजा–आचार्य गुप्तिनंदी	39
10.	ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव पूजन –आचार्य गुप्तिनंदी	45
11.	प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की पूजन–मुनि चन्द्रगुप्त	49
	द्वितीय खण्ड	
12.	क्षेत्रपाल विधान मण्डल	52
13.	श्री क्षेत्रपाल विधान परिचय	53
14.	श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी श्री यक्ष–यक्षिणी पूजा	54
15.	लघु सकलीकरण विधि	57
16.	श्री क्षेत्रपालजी प्रशस्ति	58
17.	चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी छ्यानवे क्षेत्रपाल पूजा	59
18.	श्री क्षेत्रपाल स्तोत्र (श्री भैरवाष्टक स्तोत्र)	63
19.	श्री क्षेत्रपाल स्तोत्र (हिन्दी)	64
20.	श्री आदिनाथ क्षेत्रपाल पूजा	66
21.	श्री अजितनाथ क्षेत्रपाल पूजा	68
22.	श्री संभवनाथ क्षेत्रपाल पूजा	70
23.	श्री अभिनंदननाथ क्षेत्रपाल पूजा	72
24.	श्री सुमतिनाथ क्षेत्रपाल पूजा	74
25.	श्री पदमप्रभ क्षेत्रपाल पूजा	76
26.	श्री सुपार्श्वनाथ क्षेत्रपाल पूजा	78
27.	श्री चन्द्रप्रभ क्षेत्रपाल पूजा	80
28.	श्री पुष्पदंतनाथ क्षेत्रपाल पूजा	82
29.	श्री शीतलनाथ क्षेत्रपाल पूजा	84
30.	श्री श्रेयांसनाथ क्षेत्रपाल पूजा	86

31.	श्री वासुपूज्यनाथ क्षेत्रपाल पूजा	88
32.	श्री विमलनाथ क्षेत्रपाल पूजा	90
33.	श्री अनंतनाथ क्षेत्रपाल पूजा	92
34.	श्री धर्मनाथ क्षेत्रपाल पूजा	94
35.	श्री शांतिनाथ क्षेत्रपाल पूजा	96
36.	श्री कुंथुनाथ क्षेत्रपाल पूजा	98
37.	श्री अरहनाथ क्षेत्रपाल पूजा	100
38.	श्री मल्लिनाथ क्षेत्रपाल पूजा	102
39.	श्री मुनिसुव्रतनाथ क्षेत्रपाल पूजा	104
40.	श्री नमिनाथ क्षेत्रपाल पूजा	106
41.	श्री नेमिनाथ क्षेत्रपाल पूजा	108
42.	श्री पार्श्वनाथ क्षेत्रपाल पूजा	110
43.	श्री महावीर स्वामी क्षेत्रपाल पूजा	112
44.	वृहद् जयमाला	114
45.	विधान प्रशस्ति	117
46.	क्षेत्रपाल सिद्धि मंत्र	119

तृतीय खण्ड

47.	श्री पद्मावती पूजन	120
48.	श्री घंटाकर्ण यक्ष पूजन	124
49.	श्री मणिभद्र क्षेत्रपाल पूजा	127

चतुर्थ खण्ड (आरती, चालीसा आदि)

50.	श्री पंच परमेष्ठी आरती	130
51.	श्री कुन्थुगिरी पार्श्वनाथ की आरती	130
52.	ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव की आरती	131
53.	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव की आरती	132
54.	श्री क्षेत्रपाल की आरती	132
55.	जिनशासन भक्त धरणेन्द्र देव की आरती	133
56.	माँ पद्मावती की आरती	134
57.	श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ चालीसा	134
58.	क्षेत्रपाल चालीसा	136
59.	श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल स्तोत्रं (संस्कृत)	138
60.	श्री भैरव ध्यान मंत्र	140
61.	श्री घंटाकर्ण स्तोत्र	141
62.	श्री क्षेत्रपाल शृंगार पाठ (गीत)	142
63.	क्षेत्रपालजी के श्रृंगार का सामान	144

आशीर्वाद

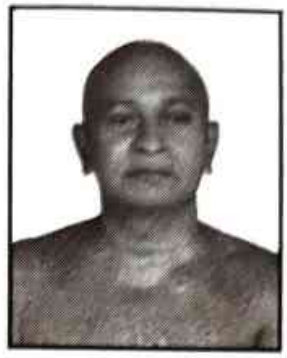

आचार्यों की कृतियों में एक और कृति आपके हाथों में छप कर आ रही है, आचार्य विश्वनन्दी कृत शासन देवता विधान व क्षेत्रपाल विधान; ये दोनों ही विधान मूलतः संस्कृत भाषा में है। एक हस्तलिखित प्राचीन प्रति हमको प्राप्त हुई, शास्त्र भंडारों से, प्रति एकदम शुद्ध व स्वच्छ लिखी हुई, मैंने उसे आद्योपांत देखा, मन में भाव आये कि इसका संपादन क्यों नहीं किया ताकि जनोपयोगी बने और धर्मात्मा बंधु इस विधान को करके पुण्य लाभ उठावें। जो संस्कृत भाषा में थी उसको वैसे ही संपादन किया और उसी का आधार लेकर दोहे, छंद, चौपाई में नवीनतम छियानवे क्षेत्रपाल पूजा की रचना की, ये दोनों ही पूजा विधान छप चुके हैं। श्रीमान् सेठ राजेन्द्र सेठ व उनके परिवार वालों ने छपाया, प्रतियाँ खत्म हो गई। इस पुस्तक का पुनः प्रकाशन के लिये संपादन का कार्य हमारे योग्य विद्वान् कवि शिष्य आचार्य गुप्तिनंदीजी महाराज को सौंपा। आचार्यश्री के शिष्य अर्थात् हमारे प्रशिष्य मुनि चंद्रगुप्तजी ने इस विधान को नवीन तरह से लिखकर तैयार किया है। कृति बहुत ही सुन्दर बनी है, विधान करने वाले को बहुत ही आनन्द आयेगा। भक्तगण संगीत के साथ अनेक रागों में पूजा करके पूजा का आनन्द उठा सकते हैं। विधान की आगमोक्त रचना हुई है। मैंने जब विधान देखा तो बहुत ही मन प्रसन्न हुआ, एक सुन्दर रचना हो गई है। इस विधान से भक्तों को अवश्य ही लाभ मिलेगा।

पुण्य बंध के साथ-साथ संसार कार्यों की भी सिद्धि होगी, यह विधान पूर्ण विधि-विधान पूर्वक है, श्रद्धा भक्ति और विनयपूर्वक इस विधान को करना चाहिये अवश्य लाभ होगा। लेखक को आशीर्वाद। इस विधान के प्रकाशन का सौभाग्य हरियाणा की रोहतक जैन समाज के श्रीमती कृष्णा जैन, कुलभूषण जैन (पहाड़ी-रोहतक) ने प्राप्त किया है। सबको मेरा आशीर्वाद।

- ग.ग.आचार्य कुंथुसागर (कुंथुगिरी)

शास्त्रों में जिनशासन प्रभावक शासनदेव-देवियों की मान्यता

इस हुण्डावसर्पिणी काल में 24 तीर्थंकर हुए हैं। प्रत्येक तीर्थंकर भगवान की शासन रक्षिका एक-एक देवी (यक्षिणी) और एक-एक शासन रक्षकदेव (यक्ष) रहते हैं तथा चार-चार क्षेत्रपाल भी होते हैं। वीतराग प्रभु के समवशरण में इन यक्ष-यक्षी का स्थान प्रभु चरणों में रहता है। अर्थात् अरिहन्त भगवान जिस समय समवशरण में उपदेश करते हैं या विराजते हैं उस समय यक्ष उनके दाहिने हाथ की ओर विराजमान रहते हैं और यक्षी बायें हाथ की ओर विराजमान रहती है। प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के जो चार-चार क्षेत्रपाल होते हैं, वे क्रमशः चारों दिशाओं में भगवद्वाणी अबाध रूप से सुनी जाती रहे इसकी व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार ये शासन देवता निरन्तर श्रद्धाभक्ति से जिन चरणों में रहकर जैनधर्म के उद्योतन कार्य में सतत् संलग्न रहते हैं। बड़े आश्चर्य की बात है कि जिनेन्द्र भगवान के दर्शन मात्र से निकाचित जैसा निकृष्ट कर्म भी शिथिल हो जाता है फिर प्रभु के चरणों भक्तियुत ये देव-देवियाँ कैसे मिथ्यादृष्टि रह जाते हैं ? इसलिए आइये आगम का अवलोकन करें।

अति प्राचीन महाग्रंथ तिलोयपण्णति में लिखा है-

गोवदण-महाजक्खा, तिमुहो जक्खेसरो य तुंबुरओ।
मादंग-विजय-अजियो, बम्हो बम्हेसरो य कोमारो॥943॥
छम्मुहओ पादालो किण्णर किंपुरिस गरुड़ गंधव्वा।
तह य कुबेरो वरुणो भकुडी-गोमेध-पास-मातंगा॥944॥
गुज्झकओ इदि एदे जक्खा चउबीस उसह-पहुदीहिं।
तित्थयराणं पासे चेट्ठंते भत्ति-संजुत्ता॥945॥

अर्थात् गोमुख यक्षों से लेकर मातंग यक्ष पर्यंत चौबीसों यक्ष अपने-अपने तीर्थंकर आदीश्वर भगवान आदि के निकट क्रमशः दाहिनी ओर रहते हैं। ये अत्यन्त भक्ति और श्रद्धा से बैठते हैं। अतएव ऐसे परम श्रद्धालु भक्तों को मिथ्यादृष्टि कहना अनुचित है। यह सुनिश्चित एवं परम सत्य है कि जिनशासन यक्ष एवं क्षेत्रपाल महाराज नियम से सम्यक्दृष्टि ही हुआ करते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक यक्षिणी भी उचित स्थान पर विराजती है।

दशभक्ति ग्रन्थ के पार्श्वनाथ स्तोत्र में श्लोक नं. 20 में लिखा है कि-

''पद्मावत्यान्वितं वामे धरणेन्द्रेण दक्षिणे॥''

पार्श्व प्रभु के वामपार्श्व (बायीं ओर) शासनदेवी पद्मावती विराजमान हैं और दाहिनी ओर धरणेन्द्र विराजित हैं- ऐसे पार्श्वनाथ भगवान का भव्यों को ध्यान करना चाहिए। अकृत्रिम जिनबिम्बों के साथ सर्वत्र उनके शासन रक्षक-यक्ष-यक्षिणी साथ रहते हैं। वर्तमान काल में भी जितने प्राचीन क्षेत्र हैं प्राचीन जिनबिम्ब हैं। प्रायः सभी यक्ष-यक्षिणी सहित हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि व पुरातत्त्व दृष्टि से भी देखा जावे तो जितनी भी पुरानी मूर्तियाँ हैं वे सब यक्ष-यक्षिणी सहित हैं व पुराने मन्दिरों में मणिभद्र व पद्मावती की मूर्तियाँ भी विराजमान हैं। दक्षिण में हुमचा पद्मावती, श्रवणबेलगोला, वरंग, मूढ़बिद्री आदि स्थानों पर तथा उत्तर प्रांत में भी देहली के लाल मंदिर, अजमेर में पद्मावती का मंदिर, बनारस में पद्मावती का मंदिर आदि स्थानों की मूर्तियाँ हमें बता रही हैं कि सम्यग्दृष्टि श्रावक उनका पूजा-सत्कार करते थे तभी तो इन मन्दिरों में शासन देव-देवियों की मूर्तियाँ हैं। यदि उनकी पूजा मिथ्यात्व होती तो पूर्वाचार्य उनका खण्डन करते परन्तु ऐसा नहीं किया। 8वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी तक किसी ने भी इन शासन देवताओं का तथा पद्मावती की पूजा का खंडन नहीं किया व निषेध भी नहीं किया किन्तु इन्हीं शासन देवियों ने समय-समय पर जैनधर्म की प्रभावना

बतलाई है। जैसे कुन्दकुन्दाचार्य के समय में गिरनार पर्वत पर अंबिका का बोलना ''आदि दिगम्बरा आदि दिगम्बरा''। अकलंक स्वामी के शास्त्रार्थ में चक्रेश्वरी एवं पद्मावती का आना। यदि ये मिथ्यादृष्टि होती तो क्यों दिगम्बर जैनधर्म की प्रभावना बतलाती। सम्यग्दृष्टि का आदर, पूजा, सत्कार करना मिथ्यात्व कभी नहीं हो सकता।

अतः यह बात पूर्णतः आगम तर्क व युक्तियों से सिद्ध हो गई है कि पद्मावती व शासन देवताओं की पूजा मिथ्यात्व नहीं है और हमें नित प्रति उनकी विनय, सत्कार, पूजा–आराधना करना ही चाहिये।

बड़वानीजी (बावनगजा) में 84 फुट ऊँची आदिनाथ भगवान् की मूर्ति है और उनके दक्षिण हाथ की ओर गोमुखयक्ष एवं बायें हाथ की ओर चक्रेश्वरी यक्षी विद्यमान हैं। गजपन्था क्षेत्र पर पार्श्वनाथ भगवान अपने यक्ष–यक्षी सहित हैं। इस परिस्थिति में जिनचरणों में लीन भक्तिपरायण शासनदेवी–देवताओं को मिथ्या दृष्टि कहना उनका घोर अवर्णवाद तो है ही और जिनवाणी के विपरीत कहने वाला मिथ्यादृष्टि हो जाता है। तथा स्तवनिधि (कर्ना.) , मांडल (महा.), रोहतक, बिजौलिया एवं खड़गदा (राज.), कुंथुगिरी (महा.), सम्मेदशिखरजी, सोनागिरीजी, बुरहानपुर, ललितपुर, मुक्तागिरी, नागपुर, तिजारा, कुण्डलपुर आदि अनेक तीर्थों एवं जिनालयों में प्राचीन क्षेत्रपाल विराजमान है तथा श्रवणबेलगोला, धर्मस्थल, कारकल तथा वेणूर आदि अनेक प्राचीन तीर्थों में ब्रह्मदेव के रूप में क्षेत्रपालजी विराजमान हैं।

वामे च यक्षी विभागं दक्षिणे यक्ष मुत्तमम्।
नवग्रहानधो भागे मध्ये च क्षेत्रपालकम्॥8॥

यक्षाणां देवतानां च सर्वालंकारभूषितम्।
स्व वाहनाव लोपेतं कुर्यात् सर्वाङ्गसुन्दरम्॥9॥

अर्थात् भगवान के बायीं ओर यक्षी और दक्षिण भाग में यक्ष नीचे की ओर

नवग्रह और मध्य भाग में क्षेत्रपाल महाराज अपने सब अलंकारों से सुसज्जित अपने-अपने वाहनों पर आसीन सर्वशक्तियुक्त तत्पर रहते हैं। जिनेन्द्र प्रभु के अत्यासन्न रहने वाला कदापि मिथ्यादृष्टि नहीं हो सकता। जिसको जिसके प्रति आस्था-विश्वास-श्रद्धा होती है वही उसका गुणानुवाद प्रशंसा या कीर्तन करता है। यदि शासन देवी-देवताओं का जिनेन्द्र भगवान् के प्रति आस्था, विश्वास नहीं होता तो वे जिनधर्म और जिन-धर्मावलम्बियों का रक्षण कैसे कर सकते हैं ? धर्म संकट के निवारण, जिनागम की प्रभावना में क्यों प्रवृत्त होते हैं ? जिन भगवान, जिन प्रणीत आगम और जिन गुरुओं में भक्ति होना ही तो सम्यक्दर्शन है। जिनेन्द्र प्रभु द्वारा जिनका सम्यग्दर्शन सुनिश्चित है। उन शासनभक्त देवी-देवताओं को मिथ्यादृष्टि कहना जिन भगवान और जिनवाणी की अवहेलना करना है। जिन भगवान का अविनय मिथ्यादृष्टि करते हैं।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि जितने भी महापुरुष जिनेन्द्र भक्तों पर आपत्ति आयी या धर्म पर संकट आये, महासतियों के ऊपर उपसर्ग हुए तब भवनवासी शासन रक्षक जिनभक्त देवी-देवताओं ने ही उनकी सहायता की। साक्षात् तीर्थंकरों पर आये हुए उपसर्गों को भी तो उन्होंने ही दूर किया। क्या मिथ्यादृष्टि विघ्न, बाधाएँ, उपसर्ग दूर कर सकते हैं ?

आश्चर्य तो इस बात का है कि बड़े-बड़े विद्वान्, पंडित, गणमान्य लोग आगम की जानकारी होकर भी स्वयं और भोले भव्य जीवों को मिथ्यात्व के गर्त में फँसने-फँसाने का अनुचित कार्य कर रहे हैं।

प्रतिष्ठाओं में सर्वप्रथम सम्पूर्ण देव-देवियों को अर्घ्य दिया जाता है। उनसे प्रार्थना की जाती है कि ''हमारे शुभ धर्म कार्य में विघ्न मत आने दीजियेगा, उपद्रव दूर करना, हमारा रक्षण करना आदि याचना की जाती है। ऋषिमण्डल महाविधान स्वयं भी गौतम गणधर द्वारा रचित है जिसमें सम्पूर्ण यक्ष-यक्षिणियों का आदर-सत्कार, पूजा, प्रतिष्ठा की गयी है जो सर्वमान्य हितावह है। हाँ,

शासन देव-देवियों की पूजा विधान वीतराग प्रभु जिनेन्द्र भगवान् के अनुसार नहीं है। जैसा जिसका पद है उसी रूप में उसका आदर भी करना चाहिए।''

भगवान की प्रतिमा के साथ यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमा होनी चाहिए या नहीं ? प्राचीनकाल की जितनी भी प्रतिमाएँ पाई जाती हैं वे अधिकांशतः अष्ट प्रातिहार्य, अष्ट मंगल और यक्ष-यक्षिणी सहित पाई जाती हैं। भगवान गोमटेश्वर बाहुबली की प्रतिमा 1000 वर्ष प्राचीन है। वहाँ भी कुष्माण्डनी देवी और गुल्लीका अज्जी की मूर्ति विद्यमान है। वहाँ प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा के समय गोम्मटसार (जीव काण्ड एवं कर्म काण्ड) के प्रणेता सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य उपस्थित थे, इतिहास में यह उल्लेख मिलता है। दूसरा दृष्टान्त हमारे सामने बड़वानी (बावनगजाजी) का है। वहाँ भगवान आदिनाथजी की प्रतिमा भी 3000 वर्ष प्राचीन अर्थात् भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर के समकालीन है। इस खड्गासन प्रतिमा के आजू-बाजू में गोमुख यक्ष और चक्रेश्वरी देवी की विशालकाय प्रतिमा स्थापित है। सम्पूर्ण विश्व में इतनी विशालकाय प्रतिमा सचमुच आश्चर्यजनक है। इस प्रतिमा में स्थापित शासन देव-देवी क्या गलत हैं ? यदि हैं तो स्थापनकर्ता पूर्वाचार्य भी गलत ठहरे और पूर्वाचार्य के साथ जिनेन्द्र देव भी गलत ठहरते हैं। यानि जिनशासन के किसी एक अंश को गलत साबित करने वाला मानव (प्राणी) जिनदेव को ही गलत साबित करता है। वर्तमान क्षेत्र कुण्डलपुर, सोनागिरि, सैरोनजी, थोवनजी, पपोरा, खजुराहो, केसरियाजी आदि में ये प्राचीन संस्कृति पाई जाती है। देवगढ़, ग्वालियर, खण्डगिरि-उदयगिरि, गजपंथा, चंपापुरी, श्री महावीरजी, दिल्ली (लाल मंदिर) आदि क्षेत्रों में प्रत्येक प्रतिमाएँ और कई क्षेत्रों में मूल प्रतिमा के साथ यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमा पाई जाती है। तो ये सभी प्रतिमाएँ क्या अपूज्य अर्थात् पूजने योग्य नहीं हैं ?

इन शासन देव-देवी के मिथ्यात्व आरोपित मान्यता को लेकर कई कुछ त्यागी, साधु-सन्तों, ब्रह्मचारियों ने जहाँ इनका वर्चस्व अधिकार चला

उन्हीं क्षेत्रों, मन्दिरों से यक्ष-यक्षिणी, क्षेत्रपाल की मूर्ति को निकलवा दिया है। जहाँ एकेन्द्रिय जीव की विराधना पाप-अपराध माना है वहाँ पंचेन्द्रिय जीवों का घात, अनादर क्या अपराध नहीं है ? निःसंदेह अपराध है, प्रकर्षता से आत्मघात है। शासनदेव का अनादर या मिथ्यात्वी बताने वाले उपर्युक्त क्षेत्रों की शासन देवी-देवता संयुक्त विशालकाय जिन प्रतिमा को क्या निकलवा सकते है ?

जैसे उदाहरण के लिए हम कोई कार्य करते हैं तो पुलिस, कलेक्टर, मंत्री आदि को सादर आमंत्रित कर उनको पुष्पमाला आदि से सम्मानित करते हैं तो क्या हम मिथ्यादृष्टि हो जाते हैं ?

कुछ साधु-सन्तों, त्यागीगणों एवं पंडितों की मान्यता है कि ये सभी भवनवासी एवं व्यन्तर जाति के देव हैं। यह उत्पत्ति के समय मिथ्यादृष्टि रहते हैं। यह बात बिल्कुल सत्य है कि स्त्रीपर्याय, नरक गति के नारकी तिर्यंच आदि गति में सम्यग्दृष्टि उत्पन्न नहीं होते लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि इन पर्यायों में सम्यक्त्व उत्पन्न नहीं होता। जिनागमानुसार चारों गतियों में सम्यग्दर्शन उत्पन्न हो सकता है। इन पर्यायों में उत्पत्ति के बाद जिनदर्शन आदि के निमित्त से सम्यग्दर्शन उत्पन्न हो सकता है, अतः भवनवासी एवं व्यन्तरवासी देवी-देवता के सम्बन्ध में मिथ्यात्वपने की मान्यता सर्वथा निराधार ठहरती है। ये समवशरण में जाते हैं। समवशरण में मिथ्यादृष्टि नहीं जा सकते हैं तो उन्हें मानस्तम्भ के प्रत्यक्ष दर्शनमात्र से ही सम्यग्दर्शन उत्पन्न हो जाता है और वे सम्यग्दृष्टि हो जाते हैं, यह बात निःसंदेह सिद्ध है।

पद्मपुराण में उल्लेख है कि जिस समय लंकाधिपति रावण भगवान शान्तिनाथ जिन चैत्यालय में विद्या सिद्ध करने के लिए जाता है सबसे पहले शान्तिनाथ भगवान की आराधना कर शासनदेव मणिभद्र पूर्णभद्र को अर्घ्य देते हुए विद्या सिद्धि हेतु तत्पर हुआ। राम की सेना में यह ज्ञात होने पर अंगद आदि योद्धाओं को साथ लेकर लंका के शान्तिनाथ चैत्यालय में उपद्रव करने लगे। वहाँ के दोनों क्षेत्रपालों ने विरोध किया और उन्हें रोक कर राम के पास

ले आए। राम ने दोनों क्षेत्रपालों को रत्नों के थाल भेंट कर सम्मान किया। तत्भव मोक्षगामी भगवान राम का यह व्यवहार क्या उचित था ? यदि हाँ तो सामान्यजन इनको अर्घ्य देवें तो कोई हर्ज नहीं, सम्यक्त्व बाधक नहीं। दूसरा विकल्प यदि नहीं तो क्या भगवान राम क्षायिक सम्यग्दृष्टि नहीं थे ? यदि क्षायिक सम्यग्दृष्टि थे तो उनके सम्यक्त्व में कोई बाधा नहीं हुई।

मंत्रशास्त्र की दृष्टि से विचार किया जाय तो मंत्रों में शासन देव–देवियों का अद्भुत चमत्कार और प्रभाव पड़ा हुआ है।

श्री मल्लिषेण रचित भैरव पद्मावती कल्प में तथा विद्यानुवाद शास्त्र में 'ॐ ह्रीं' का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि 'ॐ' परमेष्ठी वाचक है और 'ह्रीं शब्द में 'र् ह् इ' ये तीन वर्ण हैं। इनमें 'ह्' श्री पार्श्वनाथ भगवान का द्योतक है, र् धरणेन्द्र का वाचक है और 'ई' पद्मावती माताजी का संकेत करता है। इस प्रकार धरणेन्द्र पद्मावती सहित पार्श्वनाथ भगवान का ध्यान करना चाहिए। यदि कोई कहे कि मैं केवल पार्श्व प्रभु का जाप करूँगा, धरणेन्द्र पद्मावती का नहीं तो क्या मंत्र सिद्धि हो सकती है ? कार्य सिद्धि कभी नहीं होगी। बात तो यह है कि अपने–अपने स्थान पर सभी का ध्यान और स्मरण अपेक्षित है। शासन देवी–देवता सम्यग्दृष्टि हैं। यह तो सुनिश्चित हो गया अब उनकी पूजा–अर्चना किस रूप में की जाय यह विचारणीय है।

कुछ लोग सदासुखजी का 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' और टोडरमलजी की टीका के आधार पर कहते हैं कि ''शासन देवी–देवताओं की पूजा मिथ्यात्व है।'' देवमूढ़ता है। किन्तु यह कथन निराधार और निर्मूल है। ग्रंथकार आचार्य समन्तभद्र स्वामी की रचना श्लोक में इस प्रकार का उल्लेख नहीं है। वे देवमूढ़ता के निरूपण में लिखते हैं–

वरोपलिप्सयाशावान् रागद्वेषमलीमसाः।
देवता यदुपासीत देवतां मूढमुच्यते॥22॥ रत्नकरण्ड़

अर्थात् वर की इच्छा से आशावान होकर रागी, द्वेषी, मिथ्यात्वी देवता की उपासना करना देवमूढ़ता है। स्पष्ट है मिथ्यात्वरूपी रागद्वेष कल्मष से युक्त खोटे देव–देवताओं की पूजा नहीं करनी चाहिये। अब आप ही बताइये जिनशासन रक्षक चक्रेश्वरी, पद्मावती, गोमुख यक्ष, क्षेत्रपाल आदि निश्चित सम्यक् दृष्टि हैं। सम्यक्त्वपूर्वक राग, वात्सल्य, प्रेम से सहित है अर्थात् सराग सम्यक्त्व से युक्त हैं। उनके पूजने में देवमूढ़ता किस प्रकार हो सकती है ? ''हाँ, शासन यक्ष–यक्षियों को भगवान मानकर पूजना अनुचित है।'' सम्यग्दृष्टि साधर्मीजन के समान उनका आदर–सत्कार, पूजा–सम्मान करना मिथ्यात्व नहीं बल्कि सम्यक्त्ववर्धक है, सम्यक्त्व का रक्षक है। जिनागम में उल्लेख है कि–

विश्वेश्वरादयो ज्ञेया देवता शान्तिहेतवे।
क्रूरास्तु देवताः हेया, येषां सादृवृत्तिरामिषैः॥

अर्थ–विश्वेश्वर चक्रेश्वरी पद्मावती आदि देवता शान्ति हेतु हैं परन्तु जिन पर बलि चढ़ाई जाती है जो क्रूर चन्डी, मुन्डी, भैरव आदि हैं। वे त्यागने योग्य हैं। उनका आदर नहीं करना।

आचार्य विद्याभूषण कृत ऋषिमण्डल विधान में 24 देवियों की पृथक्–पृथक् पूजा का विधान दिया गया। यथा–

श्रयादिका सकलाः देव्यः शान्तितन्वंतुपूजिताः।
जलगंधाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपकफलादिकैः॥26॥

अर्थात् शान्ति के हेतु इन श्रयादि देवियों का यथायोग्य जल, गंध, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य फलादि से पूजन करना चाहिए। विधान समाप्ति पर क्षेत्रपालादिका अर्घ्यावतारण करना चाहिए।

सर्प दर्प कुसर्प भूषण चर भ्राजिष्णु सत्किंकनी।
ववाण हवानि तनुपुरंस्फुट नटत् मत्सार मेयासनं॥

रोभेशं घृतमस्तकौ तमजिनं दृष्ट्वा करालं भजे।
भ्रंगामं हरिदे भरे तिलगुडैरालोडय सिन्दूरकैः॥

इस प्रकार जिनशासन देव–देवियों की पूजा करनी चाहिए।

कुछ लोगों का कहना है कि जिन भगवान के मन्दिर में क्षेत्रपाल की क्या आवश्यकता है ? वीतराग प्रभु के साथ यक्ष–यक्षिणियों की क्या जरूरत है ? इत्यादि। प्रत्यक्ष देखिये जितने भी प्राचीन जिनालयों में प्राचीन भव्य जिनबिम्ब हैं वे प्रायः सभी अष्ट प्रातिहार्य और शासन रक्षक देव–देवी सहित हैं। सारा दक्षिण भारत भरा पड़ा है जहाँ जिनालय सुरक्षित रूप में हैं। मूर्तियों की चोरी नहीं होती क्योंकि उनके रक्षक यक्ष–यक्षिणियों की मान्यता उचित रूप से होती है। उत्तर भारत में अधिक चोरियाँ होती हैं यहाँ तक कि भगवान को भी उठाकर ले जाते हैं।

आगम में श्रीजिनबिम्ब का स्वरूप लिखा है–

रौद्रादिदोष निर्युक्त प्रातिहार्याष्ट यक्षयुत्।
निर्माप्य विधिनापीठे जिनबिम्ब निवेशयेत॥

अर्थात् रौद्रादि भावों से सहित, आठ प्रातिहार्य सहित और यक्ष–यक्षिणी सहित शुभ लक्षणों से संपन्न जिन प्रतिष्ठा कर पूजने योग्य है ऐसा 'जिनेन्द्र कल्याण अभ्युदय' में कहा है–

प्रातिहार्याष्टकोपेतां यक्षयक्षिसमन्विताम्।
स्व स्व लांछन संयुक्तां जिनार्चा कारयेत्सुधीः॥

श्री वसुनंदी पाठ में लिखा है–

यक्षंच दक्षिणे पार्श्वे वामे शासनदेवताम्।
लांछनम् पादपीठाद्यस्थापयेत् यस्य यद्भवेत॥
स्थिरेतराचयोः पादमपीठास्थादौ यथायथम्।
लांछयेत् दक्षिणे पार्श्वे यक्षोयक्षी च वामके॥

प्रतिमा चाहे चल हो चाहे अचल सभी यक्ष–यक्षिणियों से लांछित होना चाहिए। ये यक्ष–यक्षिणी सौम्य वस्त्रालंकार मण्डित होना चाहिए। इससे विपरीत प्रतिमा सिद्ध की प्रतिमा कहलाती है।

जिनसेनाचार्य ने खण्डेलवाल जाति के 84 गोत्र बताये हैं। प्रत्येक गोत्र की पृथक्–पृथक् कुलदेवियाँ हैं। आगे लिखा है कि राज्य में मरी रोग शान्ति के लिए राजा की प्रार्थना पर श्री जिनसेनाचार्य ने चक्रेश्वरी देवी का स्मरण किया। चक्रेश्वरी देवी ने ही रोग को उपशान्त किया। जिनधर्म की प्रभावना के लिए आचार्य स्वयं जिनशासन देवी–देवताओं को मान्यता देते आये हैं। भव्य श्रावक भी उनकी आराधना करते आये हैं।

साधारण व्यवहार में देखते हैं कि श्रावक पर कोई मुकदमा लग जाता है तो संबंधित अधिकारियों से चाहे वह किसी जाति का हो विनम्र हो जाते हैं, गिड़गिड़ाते हैं यहाँ तक कि घूस देते हैं, खुशामद करते हैं फिर भी अपने आपको सम्यग्दृष्टि बताते हैं यह तो मिथ्यादृष्टियों की खुशामद है। फिर क्या जिनशासन देवी–देवताओं की खुशामद आदर, पूजा से सिद्धि नहीं होगी ? उल्टा यह कहते हैं कि लौकिक व्यवहार है ''बाल–बच्चों को भूखा थोड़े ही मारा जाएगा।'' यह सबकुछ करना पड़ता है अगर यह बात है तो धर्म ध्यानपूर्वक शुभोपयोग में बाधा न आये इसी के लिए तो शासन देवी–देवता की आराधना आवश्यक है। इनकी पूजा भी आत्म सिद्धि का कारण है मिथ्यात्व नहीं, और बड़े–बड़े विधान पंचकल्याणकों में भी सर्वप्रथम ध्वजारोहण किया जाता है एवं ध्वजारोहण में सर्वाण्ह यक्ष आदि देवों का क्षेत्रपालों का आह्वान सम्मानादि किया जाता है एवं प्रत्येक आम्नाय में ये विधि की जाती है और इन कार्यक्रमों में अनेक नेतागण आदि आते हैं। जिनकी जाति, कुल, खानपान का भी कुछ ठिकाना नहीं है, फिर भी बड़े–बड़े साधु और विद्वान् इनका सम्मान कराते हैं। क्या ये नेता सम्यक्त्वी हैं। यदि इनका सम्मान किया जा सकता है तो जिन सम्यग्दृष्टि यक्ष–यक्षीणियों एवं क्षेत्रपालों ने, तीर्थंकर मुनि, सतियों एवं धर्म

पर आये संकटों का, उपसर्गों का निवारण किया, उन्हें माता–पिता के समान मानकर सम्मान करने में सम्यक्त्व में दूषण कैसे आ सकता, बल्कि सम्यक्त्व वृद्धिंगत होता है।

वीतराग प्रभु की पूजा में द्रव्य अर्पण करते समय 'निर्वपामीति स्वाहा' शब्द का प्रयोग होता है किन्तु शासन देवी–देवताओं की पूजा में 'गृहाण–गृहाण' समर्पयामि आदि कहा जाता है। इससे सिद्ध होता है कि जिन भगवान और शासन देवी–देवताओं की पूजा में जमीन–आसमान का अन्तर है।

पं. आशाधरजी ने सागारधर्मामृत में लिखा है ''पाक्षिक श्रावक जिसकी परमेष्ठी के चरणों में अन्तर्दृष्टि है कुदेव की आराधना नहीं करता, आपत्ति आने पर, आकुलित हो जाने पर शासन–देवताओं की आराधना कर सकता है।''

''येण्दुं कुर्कटसर्पगामि पवकोत्तं साद्विषोयात् षट।
पाशादि सदसत्कृते च धृतशंखास्यादिदोडष्टकां॥
तां शान्तामरुणां सकुरच्छणिसरोजन्माक्ष व्यालांबरां।
पद्मास्थां न व हस्तक प्रभुनतांयायाज्मि पद्मावतीम्॥''

''ॐ ह्रीं पद्मावती देवी इदं गंधं पुष्पं धूपं दीपं चरुं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्–3 इति स्वाहा।''

यह प्रतिष्ठा सारोद्धार पृष्ठ 73 श्लोक 177 पर उल्लिखित प्रकरण पद्मावती पूजा का विधायक है। इसी प्रकार धरणेन्द्र, यक्षपाल, क्षेत्रपाल आदि पूजा का विधान है। अभिषेक पाठ में सर्वप्रथम दशदिक्पाल पूजा करनी पड़ती है।

श्री देवसेनाचार्य, वामदेव, पूज्यपाद स्वामी, सकलकीर्तिजी, वसुनन्दी रविषेणाचार्य, सोमदेवसूरी, पात्रकेशरी, नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती आदि आचार्यों ने आवश्यकता पड़ने पर शासन देवताओं का स्मरण–आराधना किया था। धर्म पर संकटों का निवारण किया था, प्रभावना की। इस विषय के

समर्थन में अनेक आर्ष प्रमाण उपलब्ध हैं इसका लोप करने की अनधिकार चेष्टा करना मिथ्यात्व का द्योतक है।

वर्तमान में अनेक आचार्य साधुवर्ग शासनदेवी–देवताओं को यथोचित मान्यता प्रदान करते हैं। श्री चारित्र चक्रवर्ती समाधि सम्राट आचार्य शान्तिसागरजी, आचार्य वीरसागरजी, आचार्य प्रवर तीर्थभक्त शिरोमणि समाधि सम्राट आचार्य महावीरकीर्तिजी, आचार्यरत्न विमलसागरजी, आचार्य श्री देशभूषणजी, आचार्य वर्द्धमानसागरजी, आचार्य श्री सन्मतिसागरजी, ग.ग.कुन्थुसागरजी, आचार्य कनकनंदीजी, आचार्य गुणधरनंदीजी, आचार्य देवनंदीजी, आचार्य गुप्तिनंदीजी, आचार्य कुशाग्रनन्दीजी, आचार्य योगेन्द्रसागरजी एवं इनके संघस्थ सम्पूर्ण मुनि आर्यिकाएँ शासन देवी–देवताओं के प्रति अनुराग रखते हैं, सत्कार करते हैं, आशीर्वाद देते हैं, उनके प्रति वात्सल्यभाव प्रदर्शन कराने को जिनेन्द्र भगवान का गंधोदक भी दिलवाते हैं। गृहस्थ पूजा करता है साधु आशीर्वाद देते हैं।

आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी बताया करते थे कि ''नागौर के प्राचीन शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध शास्त्र में लिखा है कि पार्श्वनाथ भक्त पद्मावती देवी एक भवावतारी हैं।'' अर्थात् एक पुरुषभव लेकर मोक्ष जाने वाली है।

इस प्रकार विवेचन करने पर स्पष्ट हो जाता है कि जिनेन्द्रभक्त जिनशासन देवी–देवता क्षेत्रपाल आदि सम्यग्दृष्टि हैं उन्हें नियम से अवधिज्ञान होता है जिससे ये हमारी शक्ति और बुद्धि से परे कार्यों को सिद्ध कराने में समर्थ होते हैं इसीलिए इनकी मान्यता श्रद्धा और भक्तिपूर्ण बिना संशय होनी चाहिए॥

***

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामना

(जिनागम में वर्णित शासन–देवता)

देव जगत्त्रयीनेत्रं व्यन्तराद्याश्च देवताः।
समं पूजा विधानेषु पश्यन्दूरं व्रजेदधः॥ (240) पृ. 433
ताः शासनाधिरक्षार्थं कल्पिता परमागमे।
अतो यज्ञांशदानेन माननीयाः सुदृष्टिभिः॥(242)

जो श्रावक तीनों लोकों के दृष्ट जिनेन्द्र भगवान की और व्यन्तर आदि देवताओं की पूजा विधि में समान रूप से मानता है अर्थात् दोनों की एक सरीखी पूजा करता है, वह विशेष रूप से नरकगामी होता है। अभिप्रायः यह है कि विवेकी पुरुष को पूजा विधि में दूसरे देव जिनेन्द्र सरीखे पूज्य एवं सर्वोत्कृष्ट नहीं मानने चाहिए किन्तु उन्हें हीन (छोटा) समझना चाहिए।

जिनागम में जिनशासन की रक्षा के लिए उन शासन देवताओं की कल्पना की गई है, अतः पूजा का एक अंश देकर सम्यक् दृष्टियों को उनका सम्मान करना चाहिए।

तच्छासनैक भक्तिनां सुदृशां सुव्रतात्मनाम्।
स्वयमेव प्रसीदन्ति ताः पुंसां सपुरंदराः॥ (242)

व्यन्तरादि देवता और उनके इन्द्र, जिनशासन के अनन्य भक्त, सम्यग्दृष्टि व व्रती पुरुषों पर स्वयं प्रसन्न होते हैं।

तद्धामवद्धकलक्षाणां रत्नत्रयमहीयसाम्।
उभेकामदुधे स्यातां द्यावाभूमि मनोरथैः॥(243)

स्वर्ग व पृथ्वी दोनों ही उनके मनोरथों की पूर्ति द्वारा इच्छित वस्तु देने वाले होते हैं, जिन्होंने मोक्ष को अपने काख में बाँधा है जो रत्नत्रय से महान् हैं। (यशस्तिलक चम्पू आ. सोमदेव)

क्षेत्रपाल अर्चना :-

सद्येनाति सुगन्धेन स्वच्छेन बहुलेन च।
स्नपं क्षेत्रपालस्य तैलेन प्रकरोम्यहम्।। (62)

भोः क्षेत्रपाल ! जिनप प्रतिमां कपाल दंष्ट्राकराल जिनशासन रक्षपाल।
तैलाहिजन्म गुडचन्दन पुष्प धूपैर्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वर यज्ञकाले।।(63)

क्षेत्रपालस्य यज्ञेस्मिन्नेतत्क्षित्राधिरक्षिते।
बलिं ददामिदिसग्नेवेद्यां विघ्न विनाशिने।।(64) ''पूजा.स्नपं'' आ. गुणभद्र

ॐ आं क्रौं ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपाल ! आगच्छागच्छ संवौषट्, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, अर्घं गृहाण स्वाहा। (अभिषेक पाठ संग्रह पृ. 28 प्रकाशक इन्द्रलाल शास्त्री जैन)

क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्नेतत्क्षेत्राधिरक्षिणे।
बलिं दिशामि दिश्यग्नेर्वेद्या विघ्नविघातिने।। (128)

ॐ ह्रीं क्रौं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय इदं..... स्वाहा।

उत्तर वार पूरि तसमीकूततत्कृतायां
पुण्त्मनीह भगवन् भखमंडपोर्व्याम्।
वास्त्वर्चनादिविधिलब्धमखशमिभागं वेद्यां
यजामि शशिभृदिदशि वास्तुदेवम्।। (129)

पुष्पाञ्जलिं :-

श्री वास्तुदेववास्तुनाधिष्टातृतयानिशम्।
कुर्वन्ननुग्रहं कस्य मान्यो नास्तीति मान्य से।। (230)

ॐ वज्राधिपतये..... संर्वोषट् इसको बोलकर इक्कीस बार अपने को मंत्रित करें। इस प्रकार यज्ञदीक्षाविधि जानना। अब मंडप की प्रतिष्ठा विधि कहते हैं। ''ॐ परम्'' इत्यादि कहकर पुष्पों को क्षेपण करे। ''क्षेत्रपाल''

इत्यादि कहकर ''ॐ ह्रीं'' इत्यादि पढ़कर क्षेत्रपाल को जलादि चढ़ाये। (128) ''उखात'' इत्यादि श्लोक पढ़कर पुष्पाञ्जलि दे श्लोक तथा ''ॐ ह्रीं'' बोलकर वास्तुदेव को जल आदि आठ द्रव्य चढ़ावें। (130)

अथ यक्षादि प्रतिष्ठा :-

यक्षादयो जिनार्चाकमस्तकास्तत्यतिष्ठया।
प्रतिष्ठेयास्ततान्येषां प्रतिष्ठाविधि रुच्यते॥ (42)

यक्ष आदिकदेव भगवान् की प्रतिमा के रक्षक होते हैं इसलिए उनके मूर्ति आदि की भी प्रतिष्ठा करें।

दृप्यनूधर्वभूजा घृतसिफलकः सतृयेनराहवाहासितं
श्वानं सिंह समं करेण भयदामन्येन विभ्रन्ददाम्।
नागालंकरणः किलाशु उमरूकारावोल्वणांघ्रिंक-
सेखतर्धरमत्रयोस्त्यधि- कृतः क्षेत्रे स साक्षादयं॥ (55)

ॐ ह्रीं नियुक्त क्षेत्रपाल अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, ॐ ह्रीं मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधापनम्। ततः सूत्रोक्तविधिना तिलकं दत्वाधिवासनादिकं कृत्वा सद्वस्त्रभूषादिभिः सत्कुयद् ! इति यक्षादिप्रतिष्ठाविधानम्।

''ॐ ह्रीं'' इत्यादि कथित रीति से मांडला बनावे। ''दृष्य'' इत्यादि श्लोक तथा ''ॐ ह्रीं'' बोलकर क्षेत्रपाल का आह्वान आदि करें। (55)

उसके बाद जनशास्त्र कथित विधि से तिलक देकर अधिवासना करके उत्तम वस्त्र आभूषणादिकों से सत्कार करें। यह यक्षादि प्रतिष्ठा की विधि हुई। (प्रतिष्ठासारोद्धार पं. श्री आशाधर विरचित अनुवादक पं. मनोहरलाल शास्त्री)

तत् आह्वय दिग्राथान मन्त्रैः सूरि गुणो दितैः।
यक्ष-यक्षी ततः स्थाप्ये क्षेत्रपाल समन्विते॥ (350)

सकलीकरणं कार्यं मंत्र बीजाक्षरैस्तथा।
एवं शुद्धि कृतात्मासौ ततः पूजां समारभेत॥ (351)

(भव्यमार्गोपदेश उपासकाध्ययन जिनदेव विरचित/श्रावकाचार संग्रह)

पुनः आचार्यों के द्वारा कहे गये मंत्रों से दिक्पालों का आह्वान करके क्षेत्रपालों से युक्त यक्ष-यक्षिणी की स्थापना करें।

पुनः मंत्र बीजाक्षरों से सकलीकरण करना, इस प्रकार सर्व शुद्ध करके शुद्ध आत्मा श्रावक जिनपूजा करें।

आवाहिउण देवे सुखइ सिहि कालणेरिए वरूणे।
पणवे जखेस सूली सपिय सवाहणे ससत्थेय॥ (439)

भावसंग्रह-देवसेन विरचित पृ. 199

पुनः इन्द्र, अग्नि, काल (यम) नैऋत, वरुण, पवन, कुबेर, ईशान, धरणेन्द्र और चन्द्र को उनकी पत्नि वाहन और सादर सहित पूर्वादि दशों दिशाओं में क्रम से आह्वान करके स्थापित करना चाहिये।

दाउण पुज्ज दव्वं बलि चरुयं तह य जण्णभायं च।
सव्वेसिं मंतेहिय वीयक्खरणाम जुत्तेहिं॥ (440)

तत्पश्चात् इन दिग्पालों को बीजाक्षर नाम से युक्त मंत्रों के साथ पूजा, द्रव्य, बलि (अर्पण द्रव्य), नैवेद्य और यज्ञभाग देकर मंत्रों का उच्चारण करते हुए देवों के देव श्री अरिहंत देव का अभिषेक करना।

सिरि सुद देवीण तहा सव्वाण्ह सणक्कुमार जक्खाणं।
रूवाणिं पत्तेक्कं पडिमा वर रयण रइदाणिं॥ (905)

प्रत्येक प्रतिमा उत्तम रत्नादिकों से रचित है तथा श्रीदेवी, श्रुतदेवी तथा सर्वाण्ह एवं सनत्कुमार यक्षों की मूर्तियों से युक्त है।

(तिलोयपण्णत्ति 2 पृ. 528)

इन्द्रादिदशलोकपालपरिवारदेवतार्चनम्।
पूर्वाशादेश हत्यासन महिषगत नैर्ऋते पाशपाणे॥
वायो यक्षेन्द्र चन्द्राभरण फणिपते रोहिणी जीवितेश।
सर्वऽप्यायात यानायुधयुवतिजनैः साधर्मो भूर्भूवः स्वः।
स्वाहा ग्रहीत चार्घ्यं चरूममृतहिदं स्वस्तिकं यज्ञभागं॥

ॐ ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसम्पूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्न सपरिवारा इन्द्राग्नि यमनैऋतवरुण वाहन कुबेरेशानधरणेन्द्रसोमनाथनामदश लोकपाला आगच्छत संवौषट् स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ममात्र सन्निहित भवः भवः वषट् इदमर्घ्यं पाद्यं ग्रहणीध्वं ग्रहणीध्वं ॐ भूर्भूवः स्व स्वाहा स्वधा।

हमारे सुयोग्य शिष्य आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी के शिष्य मुनि चन्द्रगुप्त के अनुरोध से उपरोक्त विषय का संक्षिप्त वर्णन किया है। विशेष जिज्ञासु मेरी ''जिनार्चना'' I, II पुस्तकों से लाभान्वित हो सकते हैं। हमारे गुरुदेव ग.ग. श्री कुंथुसागरजी के आशीर्वाद एवं आचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी के संपादन से मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी ने इस क्षेत्रपाल विधान की रचना की है। मुनि श्री चन्द्रगुप्त स्वरचित ''**क्षेत्रपाल विधान**'' में मेरे आशीर्वाद सहित इस विषय को प्रकाशित करके क्षेत्रपाल का स्थान जैनागम में क्या है ? क्यों है ? को जानना चाहते हैं। इसके साथ-साथ आगम श्रद्धानी को भी लाभान्वित करना चाहते हैं। आगम श्रद्धानुसार ज्ञान एवं चारित्र को पालन कर भव्य जीव मोक्ष प्राप्त करें, ऐसी मेरी शुभकामना के साथ-साथ लेखक को प्रतिनमोऽस्तु सहित-

-आचार्य कनकनन्दी

19-2-2012 ओगणा (उदयपुर)

संपादकीय एवं आशीर्वाद

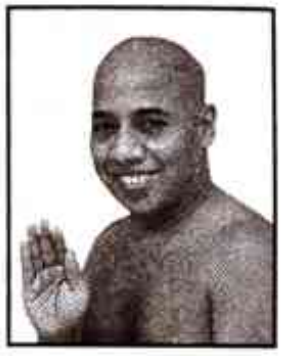

आचार्यों ने दिगम्बर जैन आगम में नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के भेद से पूजा छह प्रकार से बताई है। इन छहों प्रकार की पूजा में जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा तीर्थंकर भगवान की प्रतीक है और जिन मन्दिर समोशरण का प्रतीक है।

आधार-आधेय के सम्बन्ध से नवदेवता पूज्य कहे गये हैं। 'तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थ' के अनुसार अकृत्रिम चैत्यालयों में प्रत्येक जिन प्रतिमा के पास अनिवार्य रूप से सर्वाण्ह यक्ष, सानत्कुमार यक्ष एवं श्रीदेवी, श्रुतदेवी की प्रतिमा भी होती है। इस प्रकार 'तिलोय पण्णत्ति' सहित अनेक प्राचीन ग्रन्थों में जिनशासन देवी-देवता, यक्ष, क्षेत्रपाल आदि की स्थापना के मंत्र, विधी, विधान आदि का उल्लेख मिलता है।

वर्तमान में 100-200 वर्ष से लेकर हजारों वर्ष पुराने मंदिरों में क्षेत्रपाल आदि की स्थापित मूर्ति दिखाई देती है। अर्थात् आगम तर्क व इतिहास प्रमाण आदि सभी विधी से क्षेत्रपाल आदि शासन देवों की स्थापना बहुमान, सम्मान, यज्ञांशदान आदि विधी आगम सम्मत है।

विगत अनेक वर्षों से सभी प्रान्तों के जिनभक्तों की ओर से हिन्दी में क्षेत्रपाल विधान की माँग आ रही थी। भक्तों की भावनानुसार आचार्य श्री विश्वनंदीजी के संस्कृत क्षेत्रपाल विधान का हिन्दी अनुवाद हमारे दीक्षा गुरुवर ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव ने किया। तत्पश्चात् उन्होंने मुझको क्षेत्रपाल विधान लिखने का आदेश दिया, लेकिन हमारे संघस्थ मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी ने बचपन से ही क्षेत्रपाल, पद्मावती के श्रृंगार, पूजा आदि विधी-विधान को देखा है अतः मैंने यह **'श्री क्षेत्रपाल विधान'** उन्हें ही सौंप दिया। उन्होंने बहुत ही सुन्दरता से लेखन कार्य सम्पन्न किया। अपनी कल्पना से विधान को रोचक बनाते हुए सिद्धांतों का समावेश भी बड़े सुन्दर ढंग से किया है।

देखें (हिन्दी) क्षेत्रपाल स्तोत्र-

ये क्षेत्रपाल विशेष हैं हर तीर्थंकर के चार हैं।
चौबीस का कर चौगुना ये छ्यानवे मनहार हैं॥
हे ! देव आप समवशरण जाकर हरें मिथ्यात्व को।
शिवमार्ग की सीढ़ी प्रथम चढ़ने वरें सम्यक्त्व को॥

ये भक्त बनकर के रहें, भगवन स्वयं को ना कहें।
ये देव सम्यग्दृष्टि हैं, वागेश्वरी माता कहें॥
जिनधर्म रक्षा के लिए ये अस्त्र-शस्त्र सदा धरें।
जिनभक्त मुनि सति आदि की ये प्रीतिवश विपदा हरें॥

और भी देखें – श्री मुनिसुव्रतनाथजी के यक्ष का अर्घ–

जिस मंदिर के वरूण भाग में, रहते मुनिसुव्रत जिनराज।
'वरूण' यक्ष की अनुकंपा से, खुश रहती वो जैन समाज॥
वरूण यक्ष को अर्घ चढ़ा हम, उनसे माँगे ये वरदान।
वास्तु गणितमय आगमसम्मत, होवे जिनमंदिर निर्माण॥

इसी प्रकार नेमिनाथजी की यक्षिणी का अर्घ–

जब गोमटेश पर धाराऐं, नाभि से नीचे ना आई।
तब 'कुष्मांडिनी' गुल्लिका बन, प्रभुवर को पूर्ण भीगा पाई॥
क्यूँ व्यर्थ भला सब कहते हैं, नारी अभिषेक न कर सकती।
यदि ऐसा है तो कहो भला, ये घटना कैसे घट सकती॥

इस तरह आपने क्षेत्रपाल की संख्या, योग्यता, कार्य व अधिकार का सरल शब्दों में रोचक वर्णन किया है और किन–किन क्षेत्रपालों की स्थापना होती है–इसका वर्णन सुमतिनाथ क्षेत्रपाल पूजा में किया है।

कहीं 'मोतियादाम' तो कहीं 'धत्ता', कहीं 'चवपैया', कहीं 'स्रग्विणी', कहीं 'त्रोटक', तो कही 'मत्तगयंद ' और कहीं 'चामर' तो कहीं 'समानिका' आदि अनेक छन्दों का प्रयोग करते हुए मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी ने छन्दमय, काव्यमय, भक्तिमय व सिद्धांतमय क्षेत्रपाल विधान की रचना की है। विधान के स्तोत्र, जयमाला, प्रशस्ति विशेष पठनीय हैं। मात्र एक मास में इतने बड़े विधान की रचना कार्य पूर्ण करना ये कवि की काव्यपटुता ही कही जायेगी। हमारे सुयोग्य शिष्य युवा कविहृदय मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी ने इस विधान में बहुत अच्छा परिश्रम किया है और इस विधान को सरस, सरल, सुन्दर बनाया है। हम इस विधान के रचनाकार के रूप में पूज्य गुरुदेव का नाम ही डालना चाहते थे परन्तु पूज्यश्री ने उदार भाव से कहा कि मैं इस विधान का प्रेरक मात्र हूँ अतः जिसने इसकी रचना की है, उसके नाम ही ये विधान प्रकाशित होना चाहिए। ये पूज्य गुरुदेव की विशालता है, हम उन्हें कोटि–कोटि नमन करते हैं एवं रचनाकार, कृतिराज आगे भी उत्तम विधानों की सुन्दर रचना करे और पूजक से पूज्यता को प्राप्त हो यही उन्हें शुभाशीर्वाद है।

इस विधान के प्रकाशन में आचार्य गुरुदेव के एवं हमारे परम शिष्य एवं क्षेत्रपाल बाबा के आराधक श्रीमती कृष्णा एवं श्री कुलभूषणजी जैन, पहाड़ी–रोहतक ने श्री द्वीपकुमार जैन रोहतक वालों की प्रेरणा से प्रकाशन कराया। अतः द्रव्य दातार को, प्रेरक व प्रकाशक सभी को हमारा शुभाशीर्वाद।

सभी भक्तगण क्षेत्रपाल देवों की सम्यक् विधी से आराधना करते हुए जीवन की सर्वांगीण सफलता को प्राप्त हो, इसी शुभाशीर्वाद के साथ..

आचार्य गुप्तिनंदी
गुडी पाडवा, पानीपत (हरियाणा)

मेरा स्वर्णिम अवसर

नमामि पार्श्वनाथस्य, कलिकुंड यंत्र राजितं।
कुंथुसिंधुं नमस्तुभ्यं, गुप्तिनन्दीं नमो नमः॥

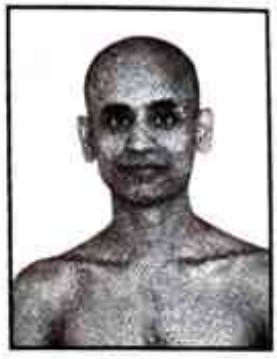

यह सम्पूर्ण भारत देश उत्सवप्रिय देश है। जहाँ धार्मिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्सव होते रहते हैं एवं अधिकतर उत्सव जैन संस्कृति एवं जैन इतिहास पर ही आधारित हैं। जैनधर्म भी उत्सवप्रधान धर्म है, जिसके अन्तर्गत अनेक व्रत, पूजा, पंचकल्याणक, दशलक्षण, सोलहकारण आदि अनेक रूप से उत्सव मनाये जाते हैं एवं उसी में लोकप्रिय एवं प्रचलित होते हैं विधान। विधान अर्थात् महापूजा/महाअर्चना इत्यादि। इन आगमोक्त विधान से श्रावकों के, अन्य जनमानस के एवं उस विधान क्षेत्र संबंधी सम्पूर्ण जैन-जैनेत्तर बंधुओं के शारीरिक, आर्थिक, मानसिक एवं सामूहिक पाप/कष्टों की शांति होती है। इसका एक कारण यह तो है ही कि इन विधानों के अंतर्गत की गई भक्ति, अर्चना से जीवों के पूर्वकृत कर्मबंध ढ़ीले पड़ते हैं और उसे इच्छित वस्तु की प्राप्ति होती है एवं उसके साथ दूसरा कारण यह भी है कि इन महानुष्ठानों में दिव्य शक्तियों को आमंत्रित किया जाता है, जो प्रत्येक धर्मात्मा जीव के प्रति वात्सल्य भाव रखकर उनका रक्षण करके अपने सम्यक्त्व को वृद्धिंगत करते हैं और इन दिव्य शक्तियों के बिना इतने बड़े अनुष्ठान सफल एवं संभव नहीं हो सकते हैं। अतः विधानों एवं पंचकल्याणक आदि के अंतर्गत अनुष्ठानकर्त्ता व्यक्ति, पूजक अथवा प्रतिष्ठाचार्य चाहे किसी भी पंथ अथवा आम्नाय का क्यूँ ना हो, वह इन दिव्य शक्तियों का आह्वान अवश्य करता ही है, चाहे गुप्त रूप से क्यूँ नहीं। क्योंकि इन विधान आदि अनुष्ठानों के प्रारम्भ में ध्वजारोहण होता ही है और ध्वजारोहण में सर्वाण्ह यक्ष आदि अनेक दिव्य शक्तियों का आह्वान किया जाता है। इतना ही नहीं, प्रतिदिन अभिषेक के पूर्व श्री दश दिग्पाल, क्षेत्रपाल आदि का और

पूर्णाहुति, हवन आदि के समय भी अनके देवी–देवताओं की दिव्य शक्तियों का आह्वान, सम्मान आदि किया जाता है तथा ये दिव्य शक्तियाँ होती हैं। तीर्थंकरों के शासन देवी–देव, यक्ष–यक्षिणी, पंचकुमार, दश दिग्पाल, सर्वाण्ह यक्ष आदि एवं उन्हीं में से होते हैं 'शासनरक्षक क्षेत्रपाल'।

प्रत्येक तीर्थंकर के काल में 4–4 क्षेत्रपाल उनके शासन के रक्षार्थ होते हैं। 24 तीर्थंकरों में प्रत्येक तीर्थंकर के 4–4 क्षेत्रपाल होते हैं एवं इस प्रकार 24 तीर्थंकर संबंधी विशेष रूप से 96 क्षेत्रपाल इस हुण्डावसर्पिणी काल में हुए। जो कि नियम से जिनेन्द्र भक्त, शासनरक्षक एवं सम्यग्दृष्टि होते हैं और इन्हीं 96 क्षेत्रपालों के नाम से इस **'क्षेत्रपाल विधान'** की आगमोक्त एवं प्रामाणिक रचना की गई है। जिसमें 96 क्षेत्रपाल एवं 24 यक्ष–यक्षिणी की अर्चना का विधान समायोजित है।

मूलतः इस विधान के रचनाकार प्राचीन दिगम्बर जैनाचार्य विश्वनंदीजी मुनिराज हैं एवं इस विधान रचना के प्रमुख प्रेरणास्रोत हमारे दादा गुरु ग.गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव हैं तथा इस विधान का संपादन मेरे दीक्षागुरु कविहृदय आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ने किया है। ग.ग. कुंथुसागरजी गुरुदेव, जिन्होंने स्वयं भी अनेक विधान, पूजन आदि की रचना की है तथा एक सुन्दर सा क्षेत्रपाल विधान भी लिखा है। फिर भी उन्होंने अपने कवि शिष्य अर्थात् हमारे गुरुदेव आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव को फिर से नवीन रूप में एक क्षेत्रपाल विधान लिखने की प्रेरणा दी। तब ही गुरुदेव ने अपने गुरु कुंथुसागरजी गुरुदेव से निवेदन किया था, इस विधान के रचनाकार के नाम में आपका अर्थात् ग.ग. श्री कुंथुसागरजी का ही नाम रहेगा।

अब इसे गुरु आशीष, मेरा सौभाग्य अथवा विधि का विधान ही समझो कि इस क्षेत्रपाल विधान की रचना करने का सुअवसर दादागुरु एवं दीक्षा गुरु के आशीर्वाद से मुझे प्राप्त होना था एवं जिस प्रकार से ये कार्य ग.ग. कुंथुसागरजी गुरुदेव ने अपने शिष्य को सौंपा उसी प्रकार से ये कार्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी

गुरुदेव ने अपने शिष्य को अर्थात् मुझे सौंपा। और कहते भी हैं कि दादा की संपत्ति पोतों के काम आती हैं।

लेकिन मुझे तो स्वयं पर विश्वास नहीं था, क्योंकि मैंने आज तक भजन, पूजन, कविता, चालीसा आदि तो बनाये है, परन्तु इतना बड़ा विधान लिखना मेरे बस की बात नहीं थी। मैंने अपने मन की यही बात गुरुदेव के समक्ष निवेदन की, परन्तु गुरुदेव ने तभी आशीर्वाद देते हुए कहा कि इस विधान की रचना आपके द्वारा बहुत ही सुन्दर ढंग से होगी। बस ! गुरु के इन शब्दों ने मुझे साहस दिया। परन्तु तब मैंने भी गुरुदेव से कहा था कि विधान मैं लिखूँगा परन्तु इस विधान के रचनाकार के रूप में नाम ग.ग. कुंथुसागरजी गुरुदेव का ही रहेगा। शायद गुरुओं के प्रति मेरी इस समर्पण भावना ने ही इस विधान को अल्प अवधि में ही एक सुन्दर एवं साकार रूप दे दिया, नहीं तो मुझमें इतनी शक्ति कहाँ थी। मेरी भावना थी कि लोग भौतिक वस्तु/संपदा को अपने प्रियजनों एवं बड़ों के नाम करते हैं, उसी प्रकार से मैं भी मुझे जो काव्य शैली इन गुरुओं के प्रसाद से प्राप्त हुई है उसके द्वारा रचित ये रचना मैं अपने दादागुरु के लिए भेंट करूँ, परन्तु मेरी इस भावना को ग.ग. कुंथुसागरजी गुरुदेव की उदार भावना ने पूरा नहीं होने दिया। जब ये विधान पूर्ण कर उनके पास कुंथुगिरी में भेजा गया, तब उन्होंने कहा कि विधान तो बहुत ही सुन्दर, नवीन एवं छंदबद्ध है, परन्तु इसमें रचनाकार के रूप में मेरा नाम (कुंथुसागरजी का) नहीं होना चाहिये, क्योंकि उससे मुझे चोरी का दोष लगेगा, अतः चन्द्रगुप्तजी ने इस विधान की रचना की है तो विधान रचनाकार के रूप में नाम भी उन्हीं का होगा। धन्य हैं भारत की वसुधा, जिसने ऐसे उदार हृदय महापुरुषों को जन्म दिया जो कि सूक्ष्म से सूक्ष्म अपराधों को भी अपनी साधना की रेखा से नहीं लांघते हैं। मैं इसे अपना सौभाग्य इसलिए नहीं मानूँगा कि मैंने प्रथम बार विधान लिखा बल्कि इसलिए कि मैंने अपने दादागुरु एवं दीक्षागुरु की भावना को साकार रूप दिया एवं ये सब काम इन्हीं गुरुओं के

आशीष एवं अनुकम्पा से हुआ है। मेरे गुरुदेव एवं ग.आर्यिका राजश्री माताजी जिन्होंने मुझे जिनागम के साथ काव्य शैली सिखाई तथा तथा ग.आ. क्षमाश्री माताजी जिन्होंने मेरी इस प्रतिभा को निखारा हैं। उसी के परिणामस्वरूप आज ये पहली बार मैंने विधान लिखा है।

हमारे संघस्थ चैत्यालय में विराजमान मूलनायक श्री कल्पतरु शांतिनाथ भगवान, जिनकी छत्र-छाँव में प्रत्येक कार्य सिद्ध होता है, उसी में से एक कार्य यह भी है तथा हमारे साधर्मी मुनि श्री सुयशगुप्तजी ने भी इसका संयोजन करके इस विधान में चार चाँद लगाये हैं। हमारे संघ के साधर्मी साधुवृंद, मुनि श्री महिमासागरजी, आर्यिका आस्थाश्री माताजी एवं क्षु. धन्यश्री माताजी; इन सभी का प्रोत्साहन मेरी लेखनी में स्याही के रूप में परिणत होता है। इन सारी अनुकुलताओं के धागे में बंधा ये विधान श्री चन्द्रप्रभु भगवान के चरणों में राधेपुरी दिल्ली में लिखना प्रारम्भ हुआ और श्री अजितनाथ भगवान की चरण सन्निधि में मंडी-बड़ौत (उ.प्र.) वर्षायोग-2011 में अर्थात् एक मास में पूर्ण हुआ एवं इसका प्रकाशन श्रीमती कृष्णा जैन, कुलभूषण जैन पहाड़ी परिवार (रोहतक) ने कराकर अपनी श्री को वृद्धिंगत करने का सत्कर्म किया है। अतः उन्हें भी शुभाशीर्वाद।

बस, इसी तरह से मेरी सारी योग्यताएँ गुरु के लिए एवं जिनशासन की सेवा में समर्पित होती हुई वृद्धिंगत होती रहे और मेरे लिए शाश्वत सुख की प्राप्ति में माध्यम बने एवं उनकी आशीष अनुकंपा से मेरा मोक्षमार्ग प्रशस्त रहे, इसी शुभेच्छा की और आशीर्वाद की भावना करते हुए गुरु चरणों में सविनय प्रणाम।

-मुनि चंद्रगुप्त
(संघस्थ आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव)
हस्तिनापुर (जंबूद्वीप) (6-3-2012)

प्रथम खण्ड

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा वृषभदेव जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल के चन्दा को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा आदिक तीर्थों को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री नवदेवता पूजन

रचयित्री : ग.आ. राजश्री माताजी

(शंभु छन्द)

अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू परमेष्ठी गुणधारी।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय सबके मन को सुखकारी॥
इन नवदेवों का आह्वानन कर ग्रह अरिष्ट का नाश करें।
तव गुण मन में धारण करके हम मोक्षपुरी में वास करें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पावन चरणों में हे प्रभुवर ! पावन जल भर कर लाया हूँ।
तव वीतराग मुद्रा लखकर मैं मन में अति हर्षाया हूँ॥
अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू को नमन हमारा है।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय लगता सबको प्यारा है॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

भव-भाव अभाव हमारा हो यह भाव संजोकर लाया हूँ।
चंदन सम शीतलता पाने मैं चंदन घिसकर लाया हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... भवआतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

अक्षयपद की अभिलाषा से अक्षत का पुंज चढ़ाता हूँ।
भौतिकपद शिवपद मिलता है यह जान शरण में आता हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

अध्यात्म सुमन की सुरभि से जीवन उपवन बन जाता है।
जल-भूमिज सुमन लिए पूजक आगम युत भक्ति रचाता है॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

इस क्षुधा-तृषा की बाधा से जीवन में मैं अति अकुलाया।
अतएव सरस प्रासुक व्यंजन भक्तिरस से भरकर लाया॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

अज्ञानभाव ही प्राणी को गति चार भ्रमण करवाता है।
सुज्ञान दीप की आरति से मिथ्यात्व मोह भग जाता है॥
अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू को नमन हमारा है।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय लगता सबको प्यारा है॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

तन-मन के रोग नशाने को कृष्णागुरु धूप चढ़ाता हूँ।
मैं कर्म बेड़ियाँ तोड़ सकूँ आशीष आपसे पाता हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

ताजे मीठे रसयुक्त सुफल जिनपूजन से अतिफल देते।
वटवृक्ष बीज सम पुण्य सहित शिवलक्ष्मी सा प्रतिफल देते॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जल-चंदन आदिक अर्घ मिला पूजन की थाली लाया हूँ।
मैं पद अनर्घ को प्राप्त करूँ यह भाव हृदय भर लाया हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा- **त्रय धारा जल की करूँ, आत्म शांति के हेत।**
श्री जिनवर का दास बन, पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **नवदेवों की अर्चना, करो भक्त त्रयकाल।**
गुण निधि पाने के लिए, गाओ प्रभु जयमाल॥

चौपाई

चार घातिया नाश किया है, गुणअनंत में वास किया है।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, परमौदारिक तन के वेषी॥1॥

समोशरण की महिमा न्यारी, आये देव-पशु नर-नारी।
अरिहंतों के गुण हम गायें, भक्तिभाव से शीश झुकायें॥2॥
अष्टकर्म बंधन को तोड़ा, निज स्वरूप से नाता जोड़ा।
तीन लोक के हो परमेश्वर, राजे लोक शिखर के ऊपर॥3॥
सिद्धप्रभु की पूजन कर लो, आधि-व्याधि विपदायें हर लो।
पंचाचारी आत्म विहारी, शिष्यगणों के संकटहारी॥4॥
दीक्षा देते पार लगाते, आत्मगुणों को जो विकसाते।
गुप्तित्रय का पालन करते, क्षमाभाव जो मन में धरते॥5॥
पठन और पाठन करवाते, उपाध्याय गुरुवर कहलाते।
रत्नत्रय को धारण करते, ज्ञान-ध्यान में रत जो रहते॥6॥
आठ बीस गुण पालन करते, विष समान विषयों को तजते।
प्राणी मात्र की रक्षा करता, जैनधर्म सबका दु:ख हरता॥7॥
श्री जिनवर ने इसे बताया, जैनधर्म जिससे कहलाया।
श्री जिनमुख से वाणी खिरती, द्वादशांग का रूप जो धरती॥8॥
अनेकांतमय रूप निराला, स्याद्वाद है जग में आला।
वीतराग प्रतिमा सुखकारी, नासादृष्टि लगती प्यारी॥9॥
पद्मासन खड्गासन धारी, जिनप्रतिमायें मंगलकारी।
कोटा-कोटी अशन समाना, जिनदर्शन का सुफल बखाना॥10॥
समोशरण की याद दिलाता, वो चैत्यालय है कहलाता।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय हैं, भक्त भक्ति में होते लय हैं॥11॥
नवदेवों का पूजन-दर्शन, हर लेता नवग्रह का बंधन।
'राजश्री' नित इनको ध्याये, ध्याते-ध्याते शिवपुर जाये॥12॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- तारण-तरण जिहाज, इनकी भक्ति मैं करूँ।
पाऊँ शिवपुर 'राज', अक्षयसुख निश्चय वरूँ॥

इत्याशीर्वादः दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा

स्थापना (गीता छन्द)

जिनवर वृषभ से वीर तक, चौबीस तीर्थंकर हुए।
वे पूज्य सुर नर यक्ष वा, शुभ क्षेत्रपालों से हुए।।
प्रभु के चरण अनुराग से, सब विघ्न बाधा दुःख टले।
उनको बसाने हृदय हम, आह्वान करते पुष्प ले।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

झटपट झटपट पयघट[1] हम सब ला रहे।
तीर्थंकर प्रतिमा पर आज ढुरा रहे।।
चौबीसों तीर्थंकर के पावन चरण।
उन चरणों में सुधरे ये जीवन मरण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णवर्णी चंदन की स्वर्ण कटोरियाँ।
गंध चढ़ा दुःख हरे भक्त की टोलियाँ।। चौबीसों....।।2।।

ॐ ह्रीं श्री .... संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नजड़ित थाली ये रत्नों से भरी।
हमने अर्चा आज अक्षतों से करी।। चौबीसों....।।3।।

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बागों में पुष्पों से सज्जित डालियाँ।
उन पुष्पों को चढ़ा काम विनशा दिया।। चौबीसों....।।4।।

ॐ ह्रीं श्री .... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. जल के घड़े।

पुड़ी पराठा खीर बताशा लायकै।
आतम रस हम पाये क्षुधा नशायकै॥
चौबीसों तीर्थंकर के पावन चरण।
उन चरणों में सुधरे ये जीवन मरण॥5॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर पर दीप सजा आरतियाँ गावते।
पग में घुँघरूँ बाँध छमा छम नाचते॥ चौबीसों....॥6॥

ॐ ह्रीं श्री .... महामोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमुख के घट में दशगंध चढ़ाइये।
दशों दिशा महकाकर पुण्य बढ़ाइये॥ चौबीसों....॥7॥

ॐ ह्रीं श्री .... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के वृक्षों पर शिवफल लगे।
सुफल चढ़ा रत्नत्रय गुण हम में जगे॥ चौबीसों....॥8॥

ॐ ह्रीं श्री .... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब अर्घ चढ़ायें भगवन आपको।
हर लो भगवन हम भक्तों के पाप को॥ चौबीसों....॥9॥

ॐ ह्रीं श्री .... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **शांतिधार हम कर रहे मंत्रनाद के साथ।**
चौबीसों प्रभु पर करें, पुष्पों की बरसात॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा– चौबीसों प्रभु के लिए, जयमाला चौबीस।
जयमाला हम गा रहे, जय जिनवर चौबीस॥

त्रोटक छंद

जय आद्य[1] जिनेश्वर आदि प्रभो, जय कर्म जयी अजितेश विभो।
समभाव धनी जिन संभव है, अभिनंदन से सुख संभव है॥1॥

सुमतीश सुकेवलज्ञान वरें, जय पद्म प्रभो शिव थान वरें।
जिनदेव सुपारस पार करें, जय चंद्रप्रभो भव भार हरें॥2॥

सुविधि सुख की विधि दान करें, शिव का थल शीतल दान करें।
जय श्रेय धनी प्रभु श्रेयस हैं, जय वासुपूज्य सुख के रस हैं॥3॥

विपदा भव की विमलेश हरें, दुःख अंत अनंत जिनेश करें।
जय धर्म जिनेश अधर्म हरें, जय शांति प्रभो जग शांति करें॥4॥

जय कुंथु प्रभो व्रत कुंत[2] धनी, अरनाथ बने अरिहंत गुणी।
प्रभु मल्लि सुमल्ल बने सच में, व्रत दान किया मुनिसुव्रत ने॥5॥

नमि को नमते नर देव सदा, तज राजुल नेम बने सुखदा॥
जय ज्ञानरसी प्रभु पारस हैं, जय वीर जिनागम का यश हैं॥6॥

जयमाल पढ़ो जयमाल सुनो, प्रभु से प्रभु की गुणमाल चुनो।
नित जो प्रभु की जयमाल पढ़े, उसका यश 'चंद्र' समान बढ़े॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चौबीसों प्रभु के चरण मनहर अड़तालीस।
'चंद्रगुप्त' प्रभु को करें, वंदन अड़तालीस॥

इत्याशीर्वादः, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. प्रथम, 2. भाला।

श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ पूजा

रचनाकार-आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी

स्थापना (गीता छंद)

श्री कुंथुगिरी के मूलनायक, पार्श्वप्रभु कलिकुण्ड हैं।
जिनकी सदा सेवा करें, पद्मावती धरणेन्द्र हैं॥
गुरु कुंथुसागर ने बिठाया, कुंथुगिरि में आपको।
हम पुष्पमाला ले खड़े, मन में बिठाने आपको॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

प्रभु पर कलशों की धार, कल-कल नाद करें।
कर तीन रोग परिहार, हम आल्हाद[1] भरें॥
कुं थु गुरुवर के नाम, कुं थुगिरी न्यारी।
जहाँ पार्श्वनाथ भगवान, भव्य चमत्कारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पद में चंदन आज, सोने सा चमके।
हम भी चंदन बन आज, प्रभु पद में चमके॥2॥ कुंथु ...

ॐ ह्रीं श्री ..... संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवलाक्षत मुक्ता पुंज, मुट्ठी में लाये।
मिल जायें मुक्ति निकुंज, अक्षय सुख पाये॥3॥ कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री ..... अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फूल कमल का फूल, उस पर पार्श्व प्रभो।
हम लाय कमल का फूल, हरलो काम विभो॥4॥ कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री ..... कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

1. आनंद।

नमकीन मधुर पकवान्न, फैनी आदि लिये।
नश जाय क्षुधा भगवान, विनती ये सुनिये ।।
कुंथु गुरुवर के नाम, कुंथुगिरी न्यारी।
जहाँ पार्श्वनाथ भगवान, भव्य चमत्कारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री ..... क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपों से तीर्थ सजाय, करते आरतियाँ।
केवल ज्योति मिल जाय, जय-जय साँवरियाँ।।6।। कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री ..... मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे कुंथुगिरी के भूप, तुमको धूप चढ़ा।
लखकर तुम सुंदर रूप, भरलें पुण्य घड़ा ।।7।। कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री ..... अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पारस को रसदार, आम अनार चढ़ा।
प्रभु कर दो अब उद्धार, मुक्ति द्वार चढ़ा।।8।। कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री ..... महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुगिरी के प्रभु पार्श्व, विघ्न नशाते हैं।
हम आये प्रभु के पार्श्व, अर्घ चढ़ाते हैं।।9।। कुंथु.....

ॐ ह्रीं श्री ..... अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(तर्ज- मीठो-मीठो बोल थारो काय बिगड़े...)

जय पारस जय पारस की, कुंथुगिरी के पारस की।
हम मंगल पूजा गा रहे, प्रभुवर के पंचकल्याणक की।। जय...

वदी वैशाख दूज की मंगल रात, सोलह सपने देखे वामा मात।
धनपति करता रत्नों की बरसात, गर्भ में आये प्रभुवर पारसनाथ।।

घूमर रचा, गरबा रचा।

हम जय-जयकार लगा रहे, प्रभुवर के गर्भकल्याणक की॥ जय...

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भ मंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी ग्यारस का भव्य प्रभात[1], पारस जन्में करने धर्म प्रभात।
कुंथुगिरी में जन्मोत्सव का ठाठ, आओ मनायें कुंथु गुरु के साथ॥
कलशे ढुरा, पलना झूला।
हम जय-जयकार लगा रहे, प्रभुवर के जन्म कल्याणक की॥ जय...

ॐ ह्रीं पौष कृष्णा एकादश्यां जन्म मंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारसनाथ बनारस के युवराज, बन गये चौथे बालयति ऋषिराज।
पौष वदी ग्यारस को दीक्षा धार, जन्म महोत्सव बना त्याग त्यौहार॥
संयम वरें, समता धरें।
हम जय-जयकार लगा रहे, प्रभुवर के तप कल्याणक की॥ जय...

ॐ ह्रीं पौष कृष्णा एकादश्यां तपो मंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमठ करें उपसर्ग दुष्ट हर्षाय, पद्मावती धरणेन्द्र उसे विनशाय।
कृष्णा चैत चतुर्थी बनी महान्, पारस प्रभु ने पाया केवलज्ञान॥
दीपार्चना, उत्सव मना।
हम जय-जयकार लगा रहे, जिनवर के ज्ञान कल्याणक की॥ जय...

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा चतुर्थ्यां ज्ञान मंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुकुट सप्तमी का पावन त्यौहार, प्रभु पहनें शिवराज मुकुट मनहार।
कुंथुगिरी में गिरी सम्मेद विशाल, वहाँ चढ़ायें आओ लड्डू थाल॥
पारस मेरे, द्वारे तेरे।
हम जय-जयकार लगा रहे, जिनवर के मोक्ष कल्याणक की। जय...

1. सुबह।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला सप्तम्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

आम्र वाटिका से चुने, आम्र पत्र मनहार।
उनको कलशों पर सजा, करते शांतिधार॥

शांतये शांतिधार...।

कुंथुगिरी के बाग से, चुनें पुष्प मनहार।
प्रभु के पद अरविंद[1] में, चढ़े पुष्प के हार॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- कुंथुगिरी के पार्श्व जिन, सर्व सुखों के धाम।
उनकी जयमाला पढ़ें, जपें प्रभु का नाम॥

शंभु छंद

जय-जय कुंथुगिरी के बाबा, जय पार्श्वनाथ अतिशयकारी।
हम माल लिए जयमाल पढ़े, मन आप गुणों पर बलिहारी॥
नृप अश्वसेन माँ वामा घर, लोकोत्तर प्रभु ने जन्म लिया।
वह नगर बनारस धन्य-धन्य, पाकर प्रभु पारस साँवलिया॥1॥

गजराज सजा घंटादि बजा, शुभ नृत्य रचा मदमस्त चला।
उस पर प्रभु को ले सुर नायक, मेरू पर्वत की ओर चला॥
सौधर्म सहित शचि इन्द्राणी, जन्माभिषेक करती प्रभु का।
मानो हर नारी से कहती, तुम भी अभिषेक करो प्रभु का॥2॥

1. कमल।

प्रभुवर ने नाग युगल तारे, जो पद्मावती धरणेन्द्र हुए।
उपसर्ग विजेता पारस का, शुभ यश धरती वा गगन छुए॥
ऐसे ही पारसनाथ प्रभु, कुंथु गुरुवर के मन मोहे।
कुंथुगिरी में कलिकुंड यंत्र, जिस पर पारस बाबा सोहे॥3॥

जब संघ सहित कुंथु गुरुवर, शुभ ग्राम आलते आये थे।
तब पद्मावती माता ने आ, गुरुवर को स्वप्न दिखाये थे॥
सपने में चंद्राकार गिरी, माता गुरुवर को दिखलाये।
वह पद्मा माँ पथ दिखलाये, जब गुरुवर इस गिरी पर आये॥4॥

तब चंद्राकार गिरी पर आ, गुरुवर ने ध्यान लगाया है।
कुंथुगिरी में सम्मेदशिखर, कैलाशशिखर बनवाया है॥
कलिकुंड यंत्र पर कमलासन, कमलासन पर पारस बाबा।
बाबा पर बने हजारों फण, रवि[1] सम मुखमंडल की आभा॥5॥

प्रभु पुरिमताल[2] उन्नत ललाट, दो नयन नयन के तारे हैं।
दो गोल कपोल[3] लगें ऐसे, ज्यों पूर्ण चंद्रमा प्यारे हैं॥
दो अधर[4] अमर संदेश कहे, नासा गुण गौरव दिखलाये।
श्री वत्स चिन्ह से सजा वक्ष, प्रभु की विशालता बतलाये॥6॥

शुभ चिन्ह सहित द्वय हस्त भुजा, भक्तों को सब सुख दान करे।
पद्मासन प्रभु का दर्शाये, मानो प्रभु चौथा ध्यान धरें॥
नख से घुँघराले केशों तक, हर अंग-अंग अति सुंदर है।
त्रय लोकों की सुंदरता का, मानो प्रभु आप समुंदर हैं॥7॥

प्रभु के दायें धरणेंद्र यक्ष, बायें पद्मावती माता है।
नभ चुंबी तीन शिखर उत्तम, जिन पर झण्डा लहराता है॥

1. सूर्य, 2. लंबे कान, 3. गाल, 4. ओठ।

प्रभु के दायें गुरु मंदिर में, रत्नों की सुन्दर प्रतिमायें।
बायें सुन्दर श्रुत[1] मंदिर में पूर्वाचार्यों की रचनायें॥8॥

श्री कूट सहस्र जिनालय में, जिनबिम्ब हजारों दु:खहारी।
मैना सुन्दरी श्रीपाल कथा, मंदिर में चित्रित मनहारी॥
प्रभु सम्मुख मानस्तंभ श्रेष्ठ, उत्तुंग घंटियों वाला है।
कुंथुगिरी का कीर्ति सूचक, श्री कीर्तिस्तंभ निराला है॥9॥

श्री मुनिसुव्रत मंदिर जिसका, हर भाग कलामय दिखता है।
नीचे श्री क्षेत्रपाल बाबा, तीरथ रक्षक दु:खहर्त्ता हैं॥
इन सबकी प्राण प्रतिष्ठा में, गुरु सब शिष्यों को बुलवायें।
गुरु आज्ञा पा आचार्य सभी, निज संघ सहित चलकर आये॥10॥

परगण के नाना संघ सहित, दो सौ पीछी का संघ यहाँ।
मानो पारस का समोशरण, लगता मन भावन दृश्य यहाँ॥
श्री चंद्राकार शिखर जिस पर, सम्मेदशिखर मन भावन है।
जिस पर राजे चौबीस प्रभु, ये दूजा मधुबन पावन है॥11॥

पारस प्रभु का पंचामृत से, अभिषेक करें सब नर-नारी।
शरणागत के सब दु:ख संकट, हरते प्रभु के अतिशय भारी॥
हे कुंथुगिरी के नाथ ! तुम्हें, पूजे कुंथु गुरु का नंदन।
ले भक्ति पुष्प की जयमाला, करता 'गुप्तिनंदी' वंदन॥12॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : कुंथुगिरी तब तक रहे, जब तक सूरज चाँद।
भक्तों को मिलता रहे, गुरु आशीष प्रसाद॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. सरस्वती।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव पूजन

रचनाकार-आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी

स्थापना (गीता छन्द)

हे कुन्थुसागर ! श्री गुरो आचार्य नंदी संघ के।
मुस्कान तुम मुख पे सदा, तुम हो धनी वात्सल्य के॥
गुरु की छवि मन में बसा, उर में उन्हें बैठा रहा।
पुष्पांजलि ले हाथ में, पूजा गुरु की गा रहा॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं प.पू.ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं प.पू.ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(शेर छन्द)

नवरत्न मणि युक्त स्वर्ण कुम्भ सजायें।
श्री कुन्थुसिंधु के पवित्र पाद[1] धुलायें॥
जिन धर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वन्दे कुन्थुसागरम॥1॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर चंदनादि द्रव्य मिलायें।
लेकर पवित्र गंध आप पाद लगायें॥ जिन धर्म...॥2॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती व अक्षतों के दिव्य पुंज चढ़ायें।
अक्षय अखंड दिव्य आत्म सौख्य जगायें॥ जिन धर्म...॥3॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुगिरी की वाटिका से पुष्प चुनायें।
कोमल हृदय गुरु के पाद पुष्प चढ़ायें॥ जिन धर्म...॥4॥

---

1. चरण।

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन प्रकार नेवजों की थाल सजा के।
तुमको चढ़ाई हमने आज नाच बजा के॥
जिन धर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वन्दे कुन्थुसागरम॥5॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतों में दीप आप तुम्हें दीप चढ़ायें।
दे ज्ञान दीप आप मोक्ष मार्ग दिखायें॥ जिन धर्म...॥6॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे संत भूप[1] ! धूप चढ़ायें जो मन हरे।
ये धूप अर्चना हमारे कर्म को हरे॥ जिन धर्म...॥7॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

राजा फलों का आम सूरि[2] राज को चढ़े।
हम मोक्ष फल को पाने आज द्वार पे खड़े॥ जिन धर्म...॥8॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव कुन्थुसिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य उनको अष्ट द्रव्य चढ़ाकर॥ जिन धर्म...॥9॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री.... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **कुन्थुसिंधु गुरुदेव का, शांति पूर्ण व्यवहार।**
शांति धार करके मिले, हमें वही व्यवहार॥

शांतये शांतिधारा.....

हँसती मुस्काती छवि, जिनकी पुष्प समान।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, जय भावी भगवान॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

1. राजा, 2. आचार्य।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रूं कुन्थुसागर सूरिभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- दुःखहरणी सुखकारिणी, जिनकी कला विशाल।
कुन्थुसिंधु गुरुराज की, गायें हम जयमाल॥

(नरेन्द्र छन्द)

जय-जय गुरु वात्सल्य दिवाकर, जय-जय कुन्थुसागर की।
विमल गुरु सम भोले बाबा, जय करुणा के सागर की॥
रेवा जिनदेवा के सेवक, सोहन देवी मैय्या है।
बाठेड़ा में जिनके घर में, जन्में बाल कन्हैया है॥1॥

पिता तुम्हारे आगम ज्ञाता, ज्योतिर्विद[1] जो कहलाये।
विद्यालय में गये बिना ही, उनसे सब विद्या पाये॥
द्रव्यार्जन का लक्ष्य बनाकर, नगर अहमदाबाद चले।
रोजगार से बढ़कर तुमको, सीमंधर अनगार[2] मिले॥2॥

बाल ब्रह्मचारी गुरुवर से, ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।
गुरु के संग बेलगोला में, गोम्मटेश का न्हवन किया॥
वहाँ आदिसागर के नंदन, महावीर कीर्ति आये।
उनकी विद्या त्याग तपस्या, व्रती कन्हैया को भाये॥3॥

हुम्बुज पद्मा माँ के द्वारे, गुरु से मुनिव्रत घोर लिया।
वय किशोर का शोर मिटाकर, जग सुख को झकझोर दिया॥
महावीर कीर्ति गुरुवर ने, गणधर पद का दान दिया।
अनुज[3] प्रेम रख विमल गुरु ने, पद आचार्य प्रदान किया॥4॥

गणधर वा आचार्य शब्द, इन दो शब्दों की संधी से।
आप गणधराचार्य कहाये, महके ज्ञान सुगंधी से॥

1. ज्योतिष, 2. मुनिराज, 3. छोटा भाई।

ग्रन्थ रचे बहु चलते-फिरते, तीर्थ बनाये गुरुवर ने।
कनक पद्म से रत्न अनेकों, गुरुवर तुम रत्नाकर में॥5॥

देव कल्पश्रुत श्री कुशाग्र वा, गुण-विद्या गुणधरनंदी।
गुरुवर के हैं शिष्य अनेकों, उसमें मैं गुप्तिनंदी॥
कुलभूषण माँ कमल राजश्री, आदि गणिनी आर्यायें।
कई आर्यिका और क्षुल्लिका, कहलाती तुम शिष्यायें॥6॥

नंदी संघ विशाल तिहारा, उसके नायक गुरुवर तुम।
जिस पर हो आशीष तुम्हारा, उसे कभी ना होवे गम॥
स्याद्वाद केसरि गुरुवर ने, धर्म ध्वजा फहराई है।
कर एकांत तिमिर का भंजन, आगम रीति बताई है॥7॥

रानीला आदिश्वर प्रगटा, तीर्थ अणिंदा चमकाया।
पद्माम्बा से प्रेरित होकर, कुंथुगिरी को विकसाया॥
गुरुवर तुम आदर्श हमारे, सबके संकट हरते हो।
बिन माँगे ही सब भक्तों की, झोली निशदिन भरते हो॥8॥

आर्ष मार्ग के संरक्षक तुम, हे भारत गौरव ! ज्ञानी।
जग में सब सुख कोष लुटाये, तुमसा ना कोई दानी॥
हे गुरुवर ! हम तुम गुण गायें, हम बच्चों की लाज रखो।
'गुप्तिनंदी' के सिर पर बाबा, अपने दोनों हाथ रखो॥9॥

ॐ ह्रीं प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं गणाधिपति गुरु, वात्सल्य रत्नाकर महा।
उन पर सदा आस्था धरें, करते सुखद अर्चन अहा॥
रवि चंद्र सम उनका सुयश, बढ़ता रहे त्रय लोक में।
गुरु भक्ति से सब सौख्य पा, पहुँचे परम शिवलोक में॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की पूजन

(नरेन्द्र छन्द)

श्री गुप्तिनंदी गुरुवर जी, कविहृदय प्रज्ञायोगी।
हृदय कमल में आन विराजो, बन जाये हम भी योगी॥
मन मंदिर की तुम हो प्रतिमा, कैसे महिमा गायें हम।
सुरभित मनहर पुष्पांजलि से, आह्वानन कर ध्यायें हम॥1॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव अत्र अवतर-अवतर सवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि सम निर्मल गुरु से, निर्मलता हम सब पाये।
क्षीरोदधि का जल लेकर हम, चरण कमल धोने आये॥
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी गुरु, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

गुरुवर तुमने मुनिपद धारा, भवसंताप मिटाने को।
तुम पद चंदन भक्त चढ़ायें, भव आताप नशाने को॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

भौतिक पद के त्यागी गुरु की, महिमा हम गाने आये।
मुक्ता अक्षत अर्पण करके, अक्षयपद पाने आये ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

कमल केतकी जूही चम्पा, पुष्प मनोहर लाये हम।
पद पंकज में सुमन चढ़ाकर, भक्तिनृत्य रचायें हम ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं ....कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

मधुर-मधुर वाणी है तेरी, जो हित का उपदेश करे।
षटरस व्यंजन से अर्चाकर, भक्त क्षुधा के क्लेश हरे ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

केवल प्रज्ञा दीप जलाने, जगमग दीप सजायें हम।
ज्ञान दिवाकर के चरणों में, शुभ आरतियाँ गायें हम।
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी गुरु, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो॥

ॐ ह्रीं .... मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

आठों कर्म नशाने गुरुवर, द्वादश तप को धरते हैं।
धूप घटों में धूप खिरा हम, पाप कर्म को हरते हैं ॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

षट् ऋतुओं के फल लेकर हम, गुरुभक्ति करने आये।
मोक्ष महाफल की आशा ले, नतमस्तक होने आये॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जलगंधादिक अष्टद्रव्य ले, जय-जय घोष लगाते हैं।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से, हम सब अर्घ चढ़ाते हैं॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा : शांतिदूत गुरु चरण में, करते शांतिधार।
चरण-पुष्प में हम करें, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा ...दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रूं गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(सखी छंद)

गुणमाला गुरु की गायें, फूलों की माला लायें।
हम जय-जयकार लगायें, जयमाला गुरु की गायें॥

(तर्ज : माईन माईन...)

श्रद्धा के फूलों की माला, भक्त सभी ले आये।
श्री गुप्तिनंदी गुरुवर की, जयमाला हम गाये॥ गुरुवर हो sss.....

सावन वद साते को खुशियाँ, सावन बनकर बरसे।
जन्म हुआ भोपाल नगर में, कोमलचंद जी हर्षे॥
मात त्रिवेणी बाल शिशु को, निरख निरख हर्षायें।
श्री गुप्तिनंदी गुरुवर की, जयमाला हम गायें॥ श्री गुप्तिनंदी....

पड़गाहन राजेन्द्र करे, गुरुवर को घर ले आये।
भक्ति से आहार दिया पर, अंतराय आ जाये॥
बोला मैं उपवास करूँगा, गुरुवर तब समझाये। श्री गुप्तिनंदी....

घर वालों से आज्ञा माँगी, मुक्तिपथ की ठानी।
बोले जब तक ना जाने दो, लूँ ना भोजन पानी॥
करके अनशन तीन दिवस का, शरणा गुरु की पायें। श्री गुप्तिनंदी....

रोहतक नगरी में आ करके, कुंथुगुरु को ध्यायें।
वर्ष अठारह की लघुवय में, उनसे मुनिव्रत पायें॥
श्री आचार्य कनकनंदी को, शिक्षा गुरु बनायें। श्री गुप्तिनंदी....

गोम्मटेश के द्वारे गोम्मट, गिरी इन्दौर नगर में।
नर-नारी जयघोष करें, आचार्य पदारोहण में॥
श्रुतपंचमी को मुनिवर 'गुप्ति', जैनाचार्य कहायें। श्री गुप्तिनंदी....

हे गुरुवर ! तुम कविहृदय हो, मनहर काव्य बनाते।
कलम चला भौतिक मानव की, भौतिकता छुड़वाते॥
जो तेरे चरणों में आये, सच्चा भक्त कहाये। श्री गुप्तिनंदी....

हे भवसिंधु तारणहारी, मेरी नाव तिराना।
मुक्तिराजश्री पाने हेतु, संयम शक्ति दिलाना॥
'चन्द्रगुप्त' गुरु शरणा पाके, पूजन-भजन बनायें। श्री गुप्तिनंदी....

ॐ ह्रीं ...जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : झाँझर-ढपली-ढोल ले, करते जय-जयनाद।
श्री गुप्तिनंदी गुरु, दे दो आशीर्वाद॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

द्वितीय खण्ड

श्री क्षेत्रपाल विधान मंडल

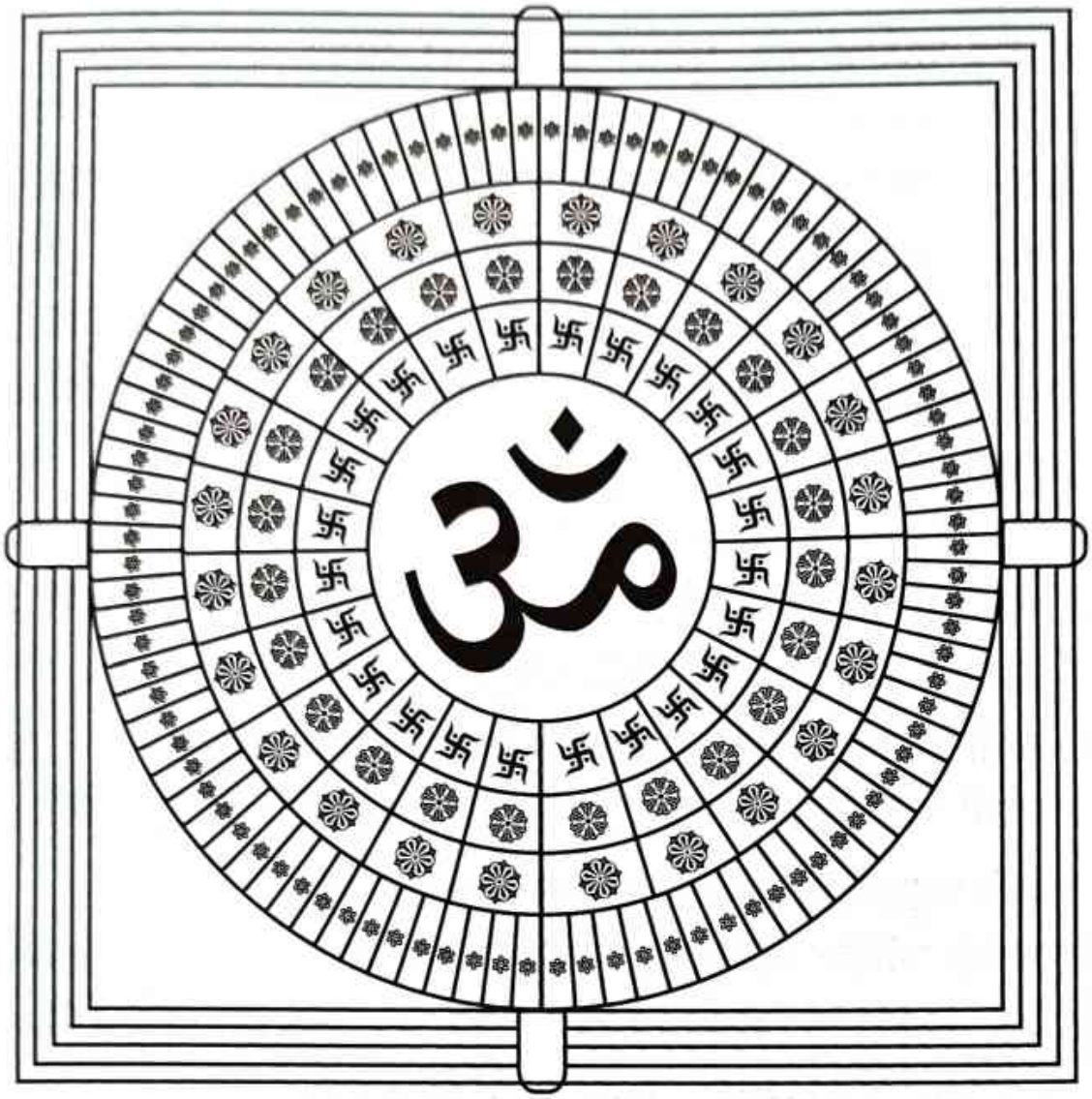

वलय–1 : चौबीस तीर्थंकर पूजा के लिए।

वलय–2 : चौबीस यक्ष देवता पूजा के लिए।

वलय–3 : चौबीस यक्षी देवी पूजा के लिए।

वलय–4 : 96 क्षेत्रपाल पूजा के लिए

इस विधान में 24 पूर्णार्घ सहित कुल 192 अर्घ होते हैं।

श्री क्षेत्रपाल विधान परिचय

इस आगमोक्त क्षेत्रपाल विधान की रचना प्राचीन दिगम्बर आचार्य श्री विश्वनंदीजी के संस्कृत क्षेत्रपाल विधान के आधार से की गई है। अर्थात् यह विधान जिनागम के अनुसार पूर्वाचार्यों के द्वारा प्रामाणिक हैं।

इस विधान में प्रत्येक तीर्थंकर, उनके यक्ष-यक्षिणी एवं 4-4 क्षेत्रपाल एवं 1 पूर्णार्घ, इस प्रकार से एक तीर्थंकर संबंधी पूजन में 8 अर्घ होते हैं।

इस प्रकार से (24X8=192) इस विधान में कुल 192 अर्घ हैं। अतः पूजक को 1 दिन में जितने तीर्थंकर संबंधी पूजन करना है वह उतने अर्घ आदि सामग्री लावें।

जैसे- 1. तीर्थंकर संबंधी पूजन में - 8 अर्घ लाये।

2. तीर्थंकर संबंधी पूजन में - 16 अर्घ लाये इत्यादि।

जितने अर्घ हैं उतने ही ध्वजा, पुष्प, नैवेद्य आदि सामग्री लाये एवं उसमें भी नित्यमह पूजा, समुच्चय क्षेत्रपाल पूजा एवं यक्ष-यक्षिणी पूजा हेतु अर्घ आदि सामग्री शक्ति-इच्छानुसार अलग से भी ला सकते हैं।

एक तीर्थंकर संबंधी पूजन हेतु सामग्री (कम से कम)

पुष्प	**- 8**
नैवेद्य (मिठाई) (घर की शुद्ध बनी)	**- 8**
हरे फल अथवा श्रीफल	**- 8**
जनेऊ	**- 5**
लाल ध्वजा	**- 8**
देवी के वस्त्र आभूषण आदि	**- 1 जोड़ी**
देव एवं क्षेत्रपाल के वस्त्र आभूषण आदि	**- 5 जोड़ी या दो जोड़ी (शक्ति अनुसार)**
तेल	**- 50 ग्राम**
तिल, चना, गुड़, उड़द, सिंदूर आदि	**- 50-50 ग्राम**
दक्षिणा (सिक्का)	**- 6 सिक्का**

नोट-यह सम्पूर्ण सामग्री पूजक अपनी-अपनी शक्ति अनुसार जितना भी कम ज्यादा लाना चाहे ला सकता है एवं सरलता से विधान कर सकता है।

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी यक्ष-यक्षिणी पूजा

स्थापना (शंभु छन्द)

श्री ऋषभदेव से सन्मति तक, तीर्थंकर तीर्थ प्रवर्त्तक हैं।
श्री यक्ष यक्षिणी चौबीसों, उनके जिनशासन रक्षक हैं॥
ये प्रभु के समवशरण में जा, सम्यग्दर्शन स्वीकार करें।
ले पुष्प उन्हें आमंत्रण दे, हम मनहारी मनुहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिणी समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

हम चाँद के समान चाँदी के कलश भरें।
जल धार दे समस्त देवता को खुश करें॥
चौबीस जिनवरों के यक्ष और यक्षिणी।
जिनकी महान अर्चना हैं कष्ट भक्षिणी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो जलं समर्पयामीति स्वाहा।

धर धर्म प्रेम तुम अधर्मी को सुधारते।
हम गंध चढ़ा आपको सदा पुकारते॥ चौबीस....॥2॥

ॐ ह्रीं श्री ..... चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

हम ताल बजा थाल सजा रत्न ला रहे।
तुम सम हि रत्नत्रय की भावना बढ़ा रहे॥ चौबीस....॥3॥

ॐ ह्रीं श्री ..... अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

जसवंत कमल केवड़ा गुलाब मोगरा।
तुमको चढ़ा डँसे न हमें पाप कोबरा॥ चौबीस....॥4॥

ॐ ह्रीं श्री ..... पुष्पाणि समर्पयामीति स्वाहा।

तिलपट्टी गजक रसमलाई खीर सिवैया।
स्वीकारिये हे यक्ष और यक्षिणी मैया॥ चौबीस....॥5॥

ॐ ह्रीं श्री ..... नैवेद्यम् समर्पयामीति स्वाहा।

सुज्ञान दीप तीन आप में सदा जले।
हम आरती करें हमारे विघ्न दुःख टले॥ चौबीस....॥6॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

जाकर समोशरण में आप धूप चढ़ाते।
हे धर्म मित्र हम भी तुम्हें धूप चढ़ाते॥
चौबीस जिनवरों के यक्ष और यक्षिणी।
जिनकी महान अर्चना हैं कष्ट भक्षिणी॥7॥

ॐ ह्रीं श्री ..... धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

तोता दशहरी कलमी हाफूसादि आम ले।
तुमको चढ़ायें हम सभी तुम्हारा नाम ले॥ चौबीस....॥8॥

ॐ ह्रीं श्री ..... फलं समर्पयामीति स्वाहा।

माता-पिता समान यक्ष और यक्षिणी।
वसुद्रव्य चढ़ा हम हो धर्म पुण्य से धनी॥ चौबीस....॥9॥

ॐ ह्रीं श्री ..... अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व आभरण से तुम स्वयं को सजाते।
हम दिव्य वस्त्र आभरण से तुमको सजाते॥ चौबीस....॥10॥

ॐ ह्रीं श्री ..... वस्त्राभरणं समर्पयामीति स्वाहा।

शासन देवी देव को, शांतिधार से पूज।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, पाऊँ सौख्य निकुंज॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चतुर्विंशति यक्ष-यक्षिणीभ्यो नमः (9, 27 या 108 बार जाप करे।)

जयमाला

दोहा- यक्ष यक्षिणी आपने, पाया पुण्य विशाल।
उसी पुण्य का गीत ये, सुंदर सी जयमाल॥

नरेन्द्र छंद

वृषभदेव से महावीर का, समोशरण मन भावन था।
सुर नर पशुओं के कोठे का, जिसमें श्रेष्ठ विभाजन था॥
उन बारह कोठों में से शुभ, आठ कोठ देवों के हैं।
उनमें से भी शुभ छह कोठे, भवनत्रिक देवों के हैं॥1॥

उन भवनत्रिक देवों में कुछ, यक्ष-यक्षिणी देव बने।
जनम जनम के पुण्य योग से, ये जिनशासन देव बने॥
समोशरण में जाकर के ये, सम्यग्दर्शन पाते हैं।
धर्म धर्मी की रक्षा करके, अपना धर्म निभाते हैं॥2॥
तीर्थंकर के भक्तों में ये, प्रमुख भक्त कहलाते हैं।
इस हित जिन प्रतिमा में भविजन, इनकी मूर्ति बनाते हैं॥
जैनधर्म में इनकी प्रीति, और प्रीत जिन भक्तों में।
इस कारण ये साथ निभाते, जिन भक्तों का कष्टों में॥3॥
पार्श्वनाथ के उपसर्गों को, पद्मावती धरणेन्द्र हरें।
गुल्लिकाजी बन कुष्मांडिणी माँ, गोम्मटेश का न्हवन करें॥
कुंदकुंद आचार्य गये जब, श्री गिरनारी की चोंटी।
तब कुष्मांडिणी जिनमत जय हित, आद्य दिगम्बर बोल उठी॥4॥
अहिच्छत्र पारस के फण पर, पद्मावती माँ श्लोक लिखे।
जिसको पढ़ कल्याण करें, श्री पात्रकेसरि मुनि बनके॥
वाद विजय अकलंकदेव को, चक्रेश्वरी दिलाती हैं।
मानतुंग मुनि की रक्षा हित, भक्तामर लिखवाती हैं॥5॥
भद्र समंत महामुनिवर के, ज्वाला माँ दुर्दैव हरें।
सोमा सीता चंदन अंजन, सबकी रक्षा देव करें॥
जो श्रद्धा से नित्य आपका, शुभ सम्यक् सम्मान करें।
परम दयालु देव आप सब, उनको सब कुछ दान करें॥6॥
हमें आप धन धर्म पुण्य वा, पुत्र संपदा दान करो।
हम बच्चों के मात-पिता तुम, हम बच्चों पर ध्यान करो॥
अर्घ वस्त्र भूषण हम लाये, उसको तुम स्वीकार करो।
आप हमारे अपने ही हो, अपनों का उद्धार करो॥7॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी सर्व यक्ष-यक्षिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- माता-पिता सम आप हो, हे जिनशासन देव।
हम बालक हैं आपके, रखना लाज सदैव॥
जिनशासन की कीर्ति को, करदो 'चंद्र' समान।
तुम जिनशासन देव हो, जिनशासन के प्राण॥

इत्याशीर्वादः, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

लघु सकलीकरण विधि

अंगन्यास मंत्र :-

1. ॐ हां क्षां नमो भैरवाय ! मम अभिमुखांगं रक्ष-रक्ष स्वाहा।
2. ॐ हीं क्षीं नमो भैरवाय ! मम हृदयं रक्ष-रक्ष स्वाहा।
3. ॐ हूं क्षूं नमो भैरवाय ! मम नाभिं रक्ष-रक्ष स्वाहा।
4. ॐ हौं क्षौं नमो भैरवाय ! मम जानुं रक्ष-रक्ष स्वाहा।
5. ॐ हः क्षः नमो भैरवाय ! मम पादं रक्ष-रक्ष स्वाहा।

अथ नमस्कार मंत्र :-

1. ॐ रुद्राय नमः।
2. ॐ रुद्ररुपाय नमः।
3. ॐ बहुरुपाय नमः।
4. ॐ यक्षरुपाय नमः।
5. ॐ यक्षाय नमः।
6. ॐ त्र्यंबकाय नमः।
7. ॐ गदानुवास धनुर्धराय नमो नमः।

(पुष्पाक्षत, तांबूल स्वर्ण, वस्त्राभूषण, यज्ञभाग सामग्री समर्पण करके ही नमस्कार करना चाहिए।)

अथ दिग्बंधन मंत्र :-

ॐ हीं नमो भैरवाय दिशां बंध-बंध स्वाहा।
ॐ हीं नमो भैरवाय विदिशां बंध-बंध स्वाहा।
ॐ हीं नमो भैरवाय आकाशं बंध-बंध स्वाहा।
ॐ हीं नमो भैरवाय पातालं बंध-बंध स्वाहा।
ॐ हीं नमो भैरवाय मंडलं बंध-बंध स्वाहा।
ॐ हीं नमो भैरवाय सर्वविध रक्षां बंध-बंध स्वाहा।
ॐ रुद्राय नमो, रुद्ररूपाय नमो, सत्पुरुषाय नमो, यक्षाय नमो, त्र्यंबकाय नमो, गदाधराय नमो नमः।

अथ श्री क्षेत्रपाल प्रशस्ति

ॐ जय जयकाररवगुंजित भव्यजन पुण्यदायकं श्री जिनमंदिर रक्षणादक्ष श्री क्षेत्रपाल नामांकित प्रसिद्ध शासक देव। प्रसीद ऽ प्रसीद ऽ.... !

जय जय श्री पुण्यातिशय क्षेत्र, श्री सिद्ध क्षेत्राधिस्थित, जिनायतन, संरक्षण धुरीऽण सुगंधित जलचंदन पुष्पमालाद्यलंकार भूषित गुड़, तिल तैल, सिंधूराभिसिंचन संप्रति क्षेत्र रक्षक श्री क्षेत्रपाल ! रात्रौ गदां धृत्वा, शुनक वाहने संचरन्, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच, चोर भयादि शत्रुबाधा दूरीकरण विचक्षण, शत्रु भयंकर, शिष्टप्रियंकरः अतिवृष्टिः अनावृष्टिः जन्य सकल क्षेत्र बाधाभिः दूरीकरण क्षेत्रं पालयित्वा क्षेत्रपालेऽतिस्वनामधेय सार्थक्यं कुरु-कुरु... ! जय... जय... जय... जय...

प्रशस्ति रचनाकार :

दि. पंडित श्री शिशुपाल पार्श्वनाथ शास्त्रीकृत

मूड़बिद्री (कर्नाटक)

चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी छ्यानवे क्षेत्रपाल पूजा

स्थापना (गीता छन्द)

वृषभादि सब तीर्थेश के श्री क्षेत्रपाल सुज्ञानमय।
प्रत्येक प्रभु के चार वा, कुल छानवे सम्यक्त्वमय॥
श्री क्षेत्रपाल विधान में, सब क्षेत्रपाल पधारिये।
जिनभक्त की बिगड़ी घड़ी, हे क्षेत्रपाल सुधारिये॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपाल समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चामर छंद)

तीर्थक्षेत्र का सुनीर क्षेत्रपाल के लिये।
नीर धार दे समस्त भक्त शांति से जिये॥
क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल आइये।
भक्त के समस्त विघ्न कष्ट को नशाइये॥1॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यो शाकिनीभूतप्रेत-पिशाचादिकृत घोरोपद्रव विनाशकाय महाक्षामडामरदुरितारिमारी घोरोपद्रव विध्वंसकाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

आपके लिए गुलाल तेल गंध इत्र हैं।
आज देव रूप में मिले हमें सुमित्र हैं॥ क्षेत्रपाल....॥2॥

ॐ ह्रां ह्रीं ..... चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

रत्न अक्षतों स्वरूप रत्न का किरीट[1] ले।
आपको चढ़ाय छाँव सर्व विघ्न की टलें॥ क्षेत्रपाल....॥3॥

ॐ ह्रां ह्रीं ..... अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

पितृ तुल्य क्षेत्रपाल देव आप छानवे।
आपके लिए गुलाब आदि पुष्प छानवे॥ क्षेत्रपाल....॥4॥

ॐ ह्रां ह्रीं ..... पुष्पाणि समर्पयामीति स्वाहा।

1. मुकुट।

राजभोग रेवड़ी जलेबियाँ मिठाइयाँ।
क्षेत्रपाल देव को चढ़ा प्रसन्न हैं किया॥
क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल आइये।
भक्त के समस्त विघ्न कष्ट को नशाइये॥5॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यो शाकिनीभूतप्रेत-पिशाचादिकृत घोरोपद्रव विनाशकाय महाक्षामडामरदुरितारिमारी घोरोपद्रव विध्वंसकाय नैवेद्यम् समर्पयामीति स्वाहा।

स्वर्णथाल भव्य लक्ष[1] लक्ष दीपमाल की।
आरती करो सभी समस्त क्षेत्रपाल की॥ क्षेत्रपाल....॥6॥

ॐ ह्रां ह्रीं ..... दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

आप मातृ-पितृ भातृ बंधु के समान हो।
देव आपके लिये विशेष धूप दान हो॥ क्षेत्रपाल....॥7॥

ॐ ह्रां ह्रीं ..... धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

भेंट आपको खजूर बैर-बिल्व[2] आँवला।
दो हमें सुगीत काव्य वाद्य नाट्य की कला॥ क्षेत्रपाल....॥8॥

ॐ ह्रां ह्रीं ..... फलं समर्पयामीति स्वाहा।

दिव्य नीर दिव्य पुष्प आदि दिव्य अर्घ ले।
दिव्य अर्घ आपको चढ़ाय आपदा टले॥ क्षेत्रपाल....॥9॥

ॐ ह्रां ह्रीं ..... अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री क्षेत्रपाल शृंगार (मोतियादाम छंद)

(तर्ज : आरती कुंज बिहारी की..) (मारने वाला है भगवान....)

वस्त्र में कनकझरी कनकाभ, चढ़ाकर हो सारे सुख लाभ।
मिले हमको उनका आभार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यो वस्त्रं समर्पयामीति स्वाहा।

जनेऊ जिसकी धातु हेम[3], चढ़ाकर मिले कुशलता क्षेम।
बढ़े हम में श्रावक संस्कार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार॥2॥

1. लाख, 2. बेल नाम का फल, 3. सोना।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यो यज्ञोपवीतं समर्पयामीति स्वाहा।

अंगूठी कण्ठी बाजूबंद, चढ़ाकर मिले सदा आनंद।
सजा बहु भूषण से मनहार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार॥3॥

ॐ ह्रीं श्री ..... आभरणं समर्पयामीति स्वाहा।

चढ़ाकर चमचम रत्नकिरीट, सदा हो हम भक्तों की जीत।
हृदय में नहीं भक्ति का पार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार॥4॥

ॐ ह्रीं श्री ..... किरीटं समर्पयामीति स्वाहा।

तेल गुड़ चना व तिल सिंदूर, थाल में ध्वज वा उड़द मसूर।
चढ़ाकर हो सब दुःख परिहार, करें हम क्षेत्रपाल शृंगार॥5॥

ॐ ह्रीं श्री ..... तेल गुड़ आदि यज्ञभागं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल के चरण में, शांतिधार मनहार।
पुष्पांजलि कर आपको, जीवन हो सुखकार॥

जाप्य मंत्र : ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षेत्रपालेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **क्षेत्रपाल के नेत्र से, अपने नेत्र मिलाय।**
जयमाला पढ़कर हमें, इच्छित फल मिल जाय॥

शेर छंद

जय क्षेत्रपाल आप तीर्थ क्षेत्र पालते।
जय क्षेत्रपाल तीर्थ के सब दोष टालते॥
जय क्षेत्रपाल आप धर्म क्षेत्र पालते।
जय क्षेत्रपाल धर्म के सब विघ्न टालते॥1॥
जय क्षेत्रपाल सर्व जैन शास्त्र पालते।
जय क्षेत्रपाल सर्व अन्य शास्त्र टालते॥
जय क्षेत्रपाल श्रेष्ठ है सम्यक्त्व पालते।
जय क्षेत्रपाल देवजी मिथ्यात्त्व टालते॥2॥

जय क्षेत्रपाल सब जिनायतन को पालते।
जय क्षेत्रपाल सब अनायतन को टालते।।
जय क्षेत्रपाल देव जैनधर्म पालते।
जय क्षेत्रपाल देव अन्य धर्म टालते।।3।।
जय क्षेत्रपाल ऋषि-मुनि को नित्य पालते।
जय क्षेत्रपाल मुनियों के उपसर्ग टालते।।
जय क्षेत्रपाल संघ चतुर्विध को पालते।
जय क्षेत्रपाल संघ के संकट को टालते।।4।।
जय क्षेत्रपाल शीलवान नर को पालते।
जय क्षेत्रपाल उनके सर्व दुःख को टालते।।
जय क्षेत्रपाल जी सदा सतियों को पालते।
जय क्षेत्रपाल सतियों के अपवाद टालते।।5।।
जय क्षेत्रपाल सर्व धर्मीजन को पालते।
जय क्षेत्रपाल धर्मीजन के क्लेश टालते।।
जय क्षेत्रपाल भक्त को सदा ही पालते।
जय क्षेत्रपाल भक्त की व्यथा को टालते।।16।।
जय क्षेत्रपाल छहों आयतन को पालते।
जय क्षेत्रपाल छह अनायतन को टालते।।
जय क्षेत्रपाल जैन मंदिरों में राजते।
जय क्षेत्रपाल उनके सर्व कष्ट टालते।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यो शाकिनीभूतप्रेत-पिशाचादिकृत घोरोपद्रव विनाशकाय महाक्षामडामरदुरितारिमारी घोरोपद्रव विध्वंसकाय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- क्षेत्रपाल बाबा रखो, सब क्षेत्रों की लाज।
'चंद्रगुप्त' कहता सुनो, भक्तों की आवाज।।

इत्याशीर्वादः, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री क्षेत्रपाल स्तोत्र (संस्कृत)

(श्री भैरवाष्टक स्तोत्र)

यं यं यं यक्षरूपं ! दशदिशिदिगितं ! भूमिकंपायमानं।
सं सं सं संहारमूर्तिं ! शिरमुकुटजटा ! शेखरं चंद्रबिंबं॥
धं धं धं दीर्घकायां ! विकृतनरमुखं ! उर्ध्वरोत्म करालं।
पं पं पं पापनाशं ! प्रणमतु सततं ! भैरवं क्षेत्रपालं॥1॥

रं रं रं रक्तवर्णं किरिकिरिततनुं तीक्ष्णदंष्ट्रा करालं।
घं घं घं घोषघोऽषं घट-घटघटितं घर्घरा घोरनादं॥
कं कं कं भालनेत्रं धगधगधगितं ज्वालितं दिव्यदेहं।
तं तं तं दिव्यदेहं प्रणमतु सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥2॥

लं लं लं लंबलंब लललल लुलितं दीर्घ जिह्वाकरालं।
धं धं धं धूम्रवर्णं स्फुटविकृतमुखं भासुरं भीमरूपं॥
रुं रुं रुं रुंडमालं रुधितमयमयं ताम्रनेत्रं करालं।
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमतु सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥3॥

वं वं वं वायुवेगं प्रलयपरिवृतं ब्रह्मरूपं स्वरूपं।
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिपुरमयमयं कालरूपं प्रदृश्यं॥
चं चं चं चालरूपं चलचलितं चालिता भूतरुंडं।
मं मं मं मायरूपं प्रणमतु सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥4॥

शं शं शं शंखहस्तं शशिकर धवलं यक्षसंपूर्ण तेजं।
लं लं लं लांतरिक्षं कुलम कुलकुलं मंत्रमूर्तीशनित्यं॥
तं तं तं भूतनाथं किष्ठि किलितरवं गृण्ह गृण्हालुमंत्रं।
मं मं मं मायरूपं प्रणमतु सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥5॥

खं खं खं खालभेदं विषयमृतकरं काल कालांतरालं।
क्षं क्षं क्षं क्षिप्रवेगं दहदह दहनं नेत्र संदीर्घमानं॥

हूं हूं हूं हूंकारनादं हरिहर सहितं एहि एहि प्रचंडं।
मं मं मं मंत्रसिद्धं प्रणमतु सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥6॥

सं सं सं सांध्ययोगं सकलगुण महादेव देवं प्रसन्नं।
पं पं पं पद्मनाभं हरिहरभुवनं चंद्रसूर्यादिवासं॥
यो यो यो योगीनाथं सकलसुरगणां सिद्धिगंधर्वनागं।
रुं रुं रुं रुद्ररूपं प्रणमतु सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥7॥

हं हं हं हंस हंसा हसित कुहकुहामुख्ययोगप्रहासं।
यं यं यं यक्षनाथं शिरकपिलजटा भिन्दभिन्दांतहस्तं॥
रं रं रं रत्नरुपं प्रहसितवदनं पिंगकेशं करालं।
सं सं सं साध्ययोगं प्रणमतु सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥8॥

भैरवाष्टकमिदं पुण्यं, सर्वकाले पठेन्नरः।
सर्वबाधाविनाशाय, चिंतितार्थ फलप्रदः॥9॥

॥ इति क्षेत्रपाल स्तोत्र सम्पूर्ण॥

श्री क्षेत्रपाल स्तोत्र (हिन्दी)

(गीता छंद)

जय जय सभी तीर्थेश की, जय द्वादशांग विशेष की।
जय वीतराग गणेश की, जय-जय दिगम्बर वेष की॥
जय क्षेत्रपाल महान की, जय रक्षपाल महान की।
जय धर्मपाल महान की, जय भक्तपाल महान की॥1॥

शुभ जम्बूद्वीप महा जहाँ, इक भरत क्षेत्र विशेष हैं।
जन्मे जहाँ पुरुदेव[1] सम, चौबीस जिन तीर्थेश है॥
उन तीर्थकर के काल में, श्री क्षेत्रपाल सुखद हुए।
जिनने महासौभाग्य से, तीर्थंकरों के पद छुए॥2॥

1. आदिनाथ जी।

ये क्षेत्रपाल विशेष हैं, हर तीर्थकर के चार हैं।
चौबीस का कर चौगुना, ये छानवे मनहार है।।
हे देव ! आप समवशरण, जाकर हरें मिथ्यात्व को।
शिवमार्ग की सीढ़ी प्रथम, चढ़ने वरें सम्यक्त्व को।।3।।

ये भक्त बनकर के रहे, भगवन स्वयं को ना कहे।
ये देव सम्यग्दृष्टि हैं, वागीश्वरी माता कहे।।
जिनधर्म रक्षा के लिये, ये अस्त्र शस्त्र सदा धरें।
जिनभक्त मुनि सति आदि की, ये प्रीतिवश विपदा हरें।।4।।

डाकिन पिशाचिन भूत आदिक, देवकृत सारी व्यथा।
हर लो व्यथा की सब कथा, हे जैनशासन देवता।।
सुत रहित को सुत दीजिए, धनरहित को धन-धान्य दो।
जिनभक्त हो हे देव ! तुम, जिनभक्त पर कुछ ध्यान दो।।5।।

तिल गुड़ मसूर जनेऊ चरू, सिंदूर तेल उड़द चना।
भूषण वसन अर्घादि ले, हम पूजते तुमको मना।।
बाबा हमारे आप हो, दुःख शोक हम सबका हरो।
धन धर्म का सहयोग कर, हे देव अनुकंपा करो।।6।।

(दोहा)

बाबा हमको आपकी छत्र छाँव मिल जाय।
सूना जीवन भक्त का, खुशियों से खिल जाय।।
'चंद्रगुप्त' की भावना, बाबा सुनलो आज।
दिव्य शक्ति से तुम रखो, जिनशासन की लाज।।

***

श्री आदिनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

नाभितनुज श्री आदिनाथ जिन, तीर्थंकर में ज्येष्ठ हुए।
भोगभूमि में कर्मभूमि की, शिक्षा दे जग श्रेष्ठ हुए॥
अष्टखंड की स्वर्णथाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
ज्येष्ठ जिनेश्वर आदिनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(गीता छंद)

सौभाग्य गोमुख यक्ष का जो आदिप्रभु के यक्ष हैं।
धर्मात्मा वा धर्म की रक्षार्थ जिनका लक्ष्य है॥
गोमुख सरीखा है सुमुख यक्षेश गोमुख आपका।
सम्मान करते अर्घ से हम आपके सम्यक्त्व का॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गोमुख यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

चक्री[1] पिता वृषभेश की यक्षी बनी चक्रेश्वरी।
शोभे सुनहरे चक्र से वात्सल्य मय मातेश्वरी॥
गो बच्छ जैसी प्रीत हैं, जिनभक्त पर उसको सदा।
केयूर कंकण अर्घमय, चोला उसे अर्पित सदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चक्रेश्वरी यक्ष्यै अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(शेर छंद)*

'जयभद्र' क्षेत्रपाल की जयकार लगाओ।
श्रीफल पे जयध्वजा चढ़ा के अर्घ चढ़ाओ॥
जिनदेव आदिनाथ के तुम क्षेत्रपाल हो।
सम्यक्त्व गुण सहित सरस्वती के लाल हो॥1॥

1. चक्रवर्ती भरत।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री जयभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

गुणगान 'विजयभद्र' क्षेत्रपाल का करो।
फिर भद्र भाव से सदा विजय रमा वरो॥
जिनदेव आदिनाथ के तुम क्षेत्रपाल हो।
सम्यक्त्व गुण सहित सरस्वती के लाल हो॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विजयभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अपराजितेश[1] में बसे अपराजितेश[2] जी।
वे राजते वहाँ जहाँ बसे जिनेश जी॥ जिनदेव...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अपराजित क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'मणिभद्र' क्षेत्रपाल जो भी क्षेत्र पालते।
उस क्षेत्र के समस्त विघ्न दोष टालते॥ जिनदेव...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री आदिप्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहें सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वृषभनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

---

1. अपराजित क्षेत्रपाल , 2. आदिनाथ जी।

श्री अजितनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

अजितनाथ त्रैलोक्यनाथ वसुकर्म जीत जगमीत[1] बने।
शतइन्द्रादिक भवि जीवों के निर्मल मन का गीत बने॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
श्रेष्ठ जितेन्द्रिय अजितनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(चौपाई)

'महायक्ष' का मुख मनहारा, जहाँ कुदेवों का मुख हारा।
अजितनाथ के यक्ष कहाये, हम सब उनको अर्घ चढ़ायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महायक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अजितनाथ की शासन देवी, अजितनाथ प्रभु की पद सेवी।
महायक्ष की ये पटरानी, नाम 'रोहिणी' माता रानी॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री रोहिणी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

'क्षेमभद्र' ने भद्रभाव से, क्षेमकुशल सबकी कर दी।
जिनभक्तों के संकट हर के, जीवन में खुशियाँ भर दी॥
अजितनाथ के क्षेत्रपालजी, जिन क्षेत्रों में जाते हैं।
उन क्षेत्रों में जिनभक्तों के, सब संकट कट जाते हैं॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री क्षेमभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'क्षांतिभद्र' में भद्र भाव से, क्षांति[2] धर्म से ललक लगी।
पितातुल्य उन क्षेत्रपाल से, जिनभक्तों को लगन लगी॥ अजितनाथ..॥2॥

---

1. जगत् के मित्र, 2. क्षमा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री क्षांतिभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'श्रीभद्राधिप' भद्र भाव से, सम्यक्श्री का ध्यान करें।
प्रभु भक्ति से प्रभु भक्तों को, धनश्री दे श्रीमान् करें॥
अजितनाथ के क्षेत्रपालजी, जिन क्षेत्रों में जाते हैं।
उन क्षेत्रों में जिनभक्तों के, सब संकट कट जाते हैं॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री श्रीभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'शांतिभद्र' ने भद्र भाव से, जग की सर्व अशांति हरी।
जब शांति से काम बना ना, तब-तब उनने क्रांति करी॥ अजितनाथ..॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शांतिभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(नव गीता छंद)

श्री अजित प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अजितनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री संभवनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

सर्व असंभव संभव होते, संभव प्रभु की छाया में।
अति उत्तम अणु बसे हुए थे, जिनकी सुंदर काया में॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
भव दुःखहर्त्ता संभव प्रभु को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(सखी छंद)

(तर्ज - सुनिये जिन अरज हमारी...)

जिनका मुखमंडल शोभे, वो यक्षराज यक्षों के।
वो 'त्रिमुख' यक्ष कहलायें, हम उनको अर्घ चढ़ायें॥
तीर्थंकर संभव तीजे, ये यक्ष उन्हें नित पूजे।
ये सम्यग्दर्शन पाये, जिनवाणी माँ बतलाये॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री त्रिमुखयक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'प्रज्ञप्ति' देवी माता, प्रज्ञप्ति विद्या दाता।
प्रज्ञप्ति नाम निराला, सम्यक् प्रज्ञा का प्याला॥
ये सूनी गोदी भरती, निर्धन को धन से भरती।
हम इनकी गोद भरेंगे, नाचेंगे मोद करेंगे॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री प्रज्ञप्ति यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(चौपाई)

'वीरभद्र' वीरों में वीरा, हरते भक्तों की दुःख पीड़ा।
संभव प्रभु के शासन देवा, करते जिनशासन की सेवा॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वीरभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'बलिभद्र' महाबलशाली, जिनके बल की बात निराली।
संभव प्रभु के शासन देवा, करते जिनशासन की सेवा॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री बलिभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

गुण ग्राहक दृष्टि को धारे, गुणपूजक 'गुणभद्र' हमारे।
संभव प्रभु के शासन देवा, करते जिनशासन की सेवा॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गुणभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

चंद्रतुल्य धवलाक्षत लाओ, 'चंद्रभद्र' को अर्घ चढ़ाओ।
संभव प्रभु के शासन देवा, करते जिनशासन की सेवा॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चंद्रभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(नव गीता छंद)

संभव प्रभो के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहें सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री संभवनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अभिनंदन क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

अभिवंदित अभिनंदन स्वामी, त्रय जग में अभिनंदित है।
जिनका अभिनंदन कर करके, सुर नर पशु आनंदित है॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
त्रिजग वंद्य अभिनंदन प्रभु को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(अवतार छंद) (तर्ज : श्री वीर महा अतिवीर...)

यक्षेश्वर यक्ष महान, प्रभु अभिनंदन के।
वे करते सुंदर काम, श्रुत संवर्द्धन के॥
हम वस्त्राभूषण आज, तुमको पहनाये।
वसु द्रव्य चढ़ाकर आज, सब दुःख मिट जाये॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री यक्षेश्वर यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री वज्रश्रृंखला मात, भक्तों की सुनती।
दुःख संकट हरने मात, वज्रकवच बनती॥
हे मैया ! करती आप, जिनशासन सेवा।
मस्तक पर तेरे मात, अभिनंदन देवा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वज्रश्रृंखला यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

चौपाई (आँचलीबद्ध)

(तर्ज-पाँचों मेरु असि....)

'महाभद्र' जिनशासन देव, आम जाम नारंगी सेब।
समर्पित हो, सुन्दर अर्घ समर्पित हो॥
तुमको वस्त्राभरण खजूर, चना तेल गुड़ वा सिंदूर।
समर्पित हो, सुन्दर अर्घ समर्पित हो॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महाभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

भद्रभद्र सुर हैं गुणवान, उनको हलुआदिक मिष्ठान्न।
समर्पित हो, सुन्दर अर्घ समर्पित हो ॥
तुमको वस्त्राभरण खजूर, चना तेल गुड़ वा सिंदूर।
समर्पित हो, सुन्दर अर्घ समर्पित हो॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भद्रभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'शतभद्र' मनोहर नाम, उनको मनहर शत पकवान्न।
समर्पित हो, सुन्दर अर्घ समर्पित हो॥ तुमको... ॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शतभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'दानभद्र' में करुणादान, उनको वस्त्राभूषण दान।
समर्पित हो, सुन्दर अर्घ समर्पित हो॥ तुमको... ॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री दानभद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (नव गीता छंद)

संवर[1] तनुज[2] के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहें सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अभिनंदननाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. अभिनंदन भगवान के पिता, 2. पुत्र।

श्री सुमतिनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

सुमतिनाथ से दुर्मतियों को, सुमतिज्ञान का दान मिले।
सुमतिज्ञान के साधन द्वारा, क्षायिक केवलज्ञान मिले॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
सुमति प्रदाता सुमतिनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(शेर छंद) (तर्ज- दे दी हमें आजादी...)

जिनदेव सुमतिनाथ के हैं यक्ष 'तुम्बरू'।
दुःख तुम्बीफल[1] को फोड़ने में दक्ष तुम्बरू॥
काजू बदाम द्राक्ष मखाने सजा दिये।
यज्ञांश दान रूप आपको चढ़ा दिये॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री तुम्बरू यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दो शब्द से बना मनोज्ञ नाम जँच रहा।
दत्ता के पूर्व 'पुरुष' शब्द भव्य लग रहा॥
ये सुमतिनाथजी की यक्षिणी महान है।
जो सुमतिनाथ की शरण से सुमतिवान हैं॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पुरुषदत्ता यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(अडिल्ल छंद) (तर्ज- सरव परव में बढ़ों..)

क्षेत्रपाल की मूर्ति कीर्तिरूप है।
अतत् रूप वा तदाकार चिद्रूप है॥
क्षेत्रपाल 'कल्याणचंद्र' को पूजकर।
सुख शांति पा जाऊँ दुःख से छूटकर॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कल्याणचंद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

1. तुमड़ी नामक कड़वा फल।

क्षेत्रपाल की पुंगी[1] से मूर्ति बने।
उस पर शुभ सिंदूर चढ़ा संकट हने॥
क्षेत्रपाल श्री 'महाचंद्र' को पूजकर।
सुख शांति पा जाऊँ दुःख से छूटकर॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महाचन्द्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्रीफलमय श्री क्षेत्रपाल की मूर्तियाँ।
करती जिनभक्तों की इच्छा पूर्तियाँ॥
क्षेत्रपाल 'नयचंद्र' देव को पूजकर।
सुख शांति पा जाऊँ दुःख से छूटकर॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नयचन्द्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सर्व अंगमय मूर्ति शासन देव की।
हरती विपदा भक्तों के दुर्दैव[2] की॥
क्षेत्रपाल श्री 'पद्मचन्द्र' को पूजकर।
सुख शांति पा जाऊँ दुःख से छूटकर॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पद्मचन्द्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री सुमति प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहें सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. सुपारी, 2. दुर्भाग्य।

श्री पदमप्रभ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

पद्मप्रभो के पादपद्म में , पद्म[1] आदि लांछन सुन्दर।
पद्मपुष्प पर पद्मासन में, पद्म जिनेश्वर बसे अधर।।
अष्टखण्ड की स्वर्णथाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
पद्मचिह्नयुत पद्मनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(दोहा)

पद्मप्रभो पद पुष्प में, 'पुष्प' यक्ष का स्थान।
उनका पुष्पों से करें, श्रुत[2] सम्मत सम्मान।।
तुमको सम्यक् रूप से, मतिश्रुत अवधिज्ञान।
अर्घ चढ़ायें आपको, हम सब अपना मान।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पुष्प (कुसुम) यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

शुभ मन से करती मनन, पद्मप्रभो को देख।
मात 'मनोवेगा' हरे, मन के सब दुर्वेग।।
पद्मनाथ की भक्ति का, मिला तुझे संयोग।
हे जगदम्बे माँ ! तुझे, अर्पित छप्पन भोग।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मनोवेगा यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(पद्धरि छन्द)

श्री 'कलाचंद्र' सुर कलावान, दे सर्व कला इनका विधान।
तुम पद्मनाथ के क्षेत्रपाल, करते धन वैभव से निहाल।।1।।

1. कमल, 2. आगम।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कलाचंद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सब कल्पनीय मिथ्यात्व नाश, श्री 'कल्पचंद्र' में श्रुत प्रकाश।
तुम पद्मनाथ के क्षेत्रपाल, करते धन वैभव से निहाल॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कल्पचंद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

त्रय शत त्रेसठ मत कुमत ज्ञान, पर 'कुमुतचंद्र' जिनमत प्रधान।
तुम पद्मनाथ के क्षेत्रपाल, करते धन वैभव से निहाल॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुमुतचंद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'कुमुदचंद्र' चंदा समान, मन कुमुद खिले तुम सन्निधान[1]।
तुम पद्मनाथ के क्षेत्रपाल, करते धन वैभव से निहाल॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुमुदचंद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(नव गीता छंद)

श्री पद्मप्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करे सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहें सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पद्मप्रभस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पात्र में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

---

1. पास में।

श्री सुपार्श्वनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

नाथ सुपारस का रस पीकर, सुर नर पशु संतुष्ट हुए।
जिनवाणी का रस पी-पीकर, भव्य व्रतों से पुष्ट हुए॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
जिन सुपार्श्व उपसर्गजयी को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(चामर छंद) (तर्ज-नीर गंध अक्षतान्....)

'नंदि' यक्ष नंदि सेन आदि संघ को भजें।
जैनधर्म धार सर्व अन्य धर्म को तजें॥
श्री सुपार्श्वनाथ के महान यक्ष आप हो।
अर्घ संग स्वर्ण की जनेऊ भेंट आपको

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नंदि यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

मात 'कालि' यक्षिणी प्रभो सुपार्श्वनाथ की।
जैनधर्म भक्त वो न भक्त जाँत-पाँत की॥
स्वर्णफूल कर्णफूल हाथफूल ला रहे।
यज्ञ अंश दान पूर्व आपको सजा रहे॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कालि यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(शंभु छंद)

श्री 'विद्याचंद्र' सुविद्याधर, सम्मानित नर विद्याधर से।
जो विद्या तज मुनि बनता है, ये उनकी सेवा को तरसे॥

हे देव ! आप बड़भागी हो, जो प्रभु सुपार्श्व के पार्श्व रहे।
तुम उनकी रक्षा करते हो, जो प्रभु सुपार्श्व के पार्श्व रहे॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विद्याचंद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

गुण दोषों की पहचान करें, 'गुणचंद्र' गुणों पर ध्यान करें।
वे देख गुणीजन का मन से, वात्सल्य धार गुणगान करें॥ हे देव..॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गुणचंद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'खेमचंद्र' जी क्षेत्रपाल, सब तीर्थ क्षेत्र के रक्षक हैं।
जिनधर्म जिनागम जिनमंदिर, जिनशासन के संरक्षक हैं॥ हे देव..॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री खेमचंद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

नैगम आदिक सातों नय से, श्री 'विनयचंद्र' श्रुत विनय करें।
वे छोड़ विनय मिथ्यात्व पाप, चारों प्रकार की विनय करें॥ हे देव..॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विनयचंद्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल सुपार्श्व प्रभु के श्रेष्ठतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहें सदा।
जिनभक्त की जिन भक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री चन्द्रप्रभ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

चंद्रनाथ की दिव्य चाँदनी, अविनाशी अकलंकित है।
कोटिचंद्र की आभा जिनसे, लज्जित और कलंकित है॥
अष्टखण्ड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
चंद्र चिह्न युत चंद्रनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(जोगीरासा छंद)

'श्याम यक्ष' हर सुबह शाम में, चंद्रप्रभो को पूजे।
तब जिनमंदिर के शिखरों में, जय-जय चंदा गूँजे॥
चंद्रनाथ के सेवक के हित, चंद्रकांत मणि कुण्डल।
उन्हें अर्घ दे हुआ सुशोभित, इस विधान का मंडल॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री श्याम (विजय) यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

चंद्रनाथ के जिनमंदिर में, घन-घन घंटे बाजे।
श्याम यक्ष के संग जहाँ, पर 'ज्वालामालिनी' नाचे॥
नाम तेरा ज्वाला पर तू माँ, ममता रस का प्याला।
जिसको पी-पीकर भक्तों की, बुझती दुःख की ज्वाला॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री ज्वालामालिनी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(काव्य छंद) (तर्ज- रोम-रोम से निकले...)

सोमकांत[1] मणि कुंभ, 'सोमकांति' भर लाते।
चंद्रप्रभो को पूज, उनका न्हवन कराते॥
तुम हो शासन देव, चंदाप्रभु के न्यारे।
तुमको देख कुदेव, थर-थर काँपे सारे॥1॥

1. चंद्रकांतमणि

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सोमकांति क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सूर्यकांत मणि कुंभ, श्री 'रविकांति' लाते।
उसमें भरकर दूध, प्रभुवर को नहलाते॥
तुम हो शासन देव, चंदाप्रभु के न्यारे।
तुमको देख कुदेव, थर-थर काँपे सारे॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री रविकांति क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'शुभ्रकांति' शुभ कुंभ, फल रस से भर लाते।
देव झुंड के झुंड, जिन अभिषेक रचाते॥ तुम हो...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शुभ्रकांति क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

हेममयी घृत[1] कुंभ, 'हेमकांति' सुर लाते।
मचा भक्ति की धूम, मंत्रों के सुर गाते॥ तुम हो...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री हेमकांति क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री चंद्रप्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चंद्रप्रभस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. घी।

श्री पुष्पदंत क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

पुष्पदंत के चरण पुष्प में, नभ से पुष्प बरसते हैं।
श्री चरणों के नीचे सुरगण, स्वर्ण पुष्प को रचते हैं॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
सुखविधिदायक सुविधिनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(चौपाई)

सुविधिनाथ की मूर्ति जहाँ हो, 'अजित' यक्ष की मूर्ति वहाँ हो।
उस मूरत को वस्त्र चढ़ाओ, आगम सम्मत अर्घ चढ़ाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अजित यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

मात 'महाकाली' है आली[1], सुविधिनाथ की भक्त निराली।
उनको हम सब अर्घ चढ़ाऐं, सुंदर लाल चुनर ओढ़ाऐं॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री 'महाकाली' यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(चामर छंद)*

'वज्रकांति' वज्र धार धर्म शत्रु से लड़े।
रक्षणार्थ जैनमंदिराग्र[2] द्वार पे खड़े॥
क्षेत्रपाल आप पुष्पदंतजी जिनेश के।
भक्त वीतराग देव-शास्त्र साधु वेष के॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वज्रकांति क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'वीरकांति' क्षेत्रपाल धीर धर्मवीर हैं।
सप्त धातु मुक्त दिव्य आपका शरीर हैं॥ क्षेत्रपाल... ॥2॥

---

1. सुंदर, 2. जैन मंदिर के आगे

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वीरकांति क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'विष्णुकांति' कल्पनीय विष्णु को न मानते।
मात्र नौ महान विष्णु को हि विष्णु जानते॥
क्षेत्रपाल आप पुष्पदंतजी जिनेश के।
भक्त वीतराग देव-शास्त्र साधु वेष के॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विष्णुकांति क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'चंद्रकांति' चंद्र के समान कांतिमान हो।
चंद्र तुल्य छत्र से भजे त्रिलोकनाथ को॥ क्षेत्रपाल... ॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चंद्रकांति क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

(नव गीता छंद)

श्री सुविधि प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री शीतलनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

शीतल प्रभुवर के चरणों से, बहती जो शीतल गंगा।
नहा-नहा जिसमें भव्यों का, हो जाता हैं मन चंगा[1]॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
शिवथलवासी शीतल प्रभु को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(वसंततिलका छंद)

जो ब्रह्मचर्य व्रत श्रेष्ठ धरें खुशी से।
श्री 'ब्रह्मयक्ष' उनको भजते खुशी से॥
यज्ञोपवीत[2] फल नेवज पुष्प माला।
यज्ञांश दान हम दे तुमको निराला॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री ब्रह्म यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

वात्सल्यमूर्ति ममतामय 'मानवी' माँ।
श्री शीतलेश प्रभु की तुम यक्षिणी माँ॥
श्रृंगार सोलह करें हम मात तेरा।
पीड़ा मिटा कर करो सुख का सवेरा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मानवी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(सोरठा)*

श्री 'शतवीर्य' महान, शत इंद्रों के साथ में।
जय जय शीतल नाथ, कह-कह झूमे नाचते॥
पूजे अर्चे देव, श्री शीतल जिनदेव को।
अर्पित अर्घ सदैव, उनके शासन देव को॥1॥

1. स्वच्छ (साफ), 2. जनेऊ

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शतवीर्य क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'महावीर्य' शुभ नाम, जिनको सम्यक्ज्ञान है।
नाम सरीखा काम, उनका वीर्य[1] महान हैं॥
पूजे अर्चे देव, श्री शीतल जिनदेव को।
अर्पित अर्घ सदैव, उनके शासन देव को॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महावीर्य क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

निर्बल को बलदान, निर्धन को धन दान दे।
महाबली गुणवान, श्री 'बलवीर्य' महान हैं॥ पूजे...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री बलवीर्य क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

चम चम चंद्र समान, 'कीर्तिवीर्य' की कीर्ति हैं।
फैले कीर्ति महान्, जिस मंदिर तव मूर्ति हैं॥ पूजे...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कीर्तिवीर्य क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

शीतल प्रभो के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शीतलनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. शक्ति।

श्री श्रेयांसनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

श्री श्रेयांस जिनेश्वर जिनने, सारे जग का श्रेय[1] किया।
श्रेय भावना से हमने भी, श्रेयनाथ का श्रेय लिया॥
अष्टखण्ड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
जग श्रेयस्कर श्रेयनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(मत्तगयंद छंद) (तर्ज-वीर हिमाचलतें...)

श्री परमेश्वर श्री जगदीश्वर श्रेय जिनेश्वर श्रेय प्रदाता।
यक्ष पतीश्वर 'ईश्वर' यक्ष बने जिनके जिनशासन त्राता॥
तेल चना गुड़ वा उड़दादिक संग जनेऊ ध्वजा हम लाये।
थाल सजाकर ताल बजाकर नाच नचाकर अर्घ चढ़ायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री ईश्वर यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

गौरव है जिसपे हमको वह हैं जगमात मनोहर 'गौरी'।
मूर्ति रहे जिस मंदिर में उस मंदिर में नहि हो कुछ चोरी॥
हार महावर पायल काजल से तुझको हम नित्य सजाऐं।
ठुम्मक ठुम्मक ता थइ ता थइ नाच छमाछम अर्घ चढ़ाऐं॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गौरी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(चवपैया छंद)*

तीर्थों में जाते, तीर्थ सजाते, 'तीर्थरुचि' कहलाते।
ये तीर्थ बचाते, क्षेत्र बचाते, क्षेत्रपाल कहलाते॥
श्रेयस जिनवरजी, श्रेयस्करजी उनके आप पुजारी।
हे क्षेत्रपालजी, रक्षपालजी, रक्षा करो हमारी॥1॥

1. कल्याण।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री तीर्थरुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जो द्रव्य अर्चना, भाव अर्चना, दोनों पे रुचि रखते।
ये सम्यक्ज्ञानी इनको ज्ञानी, 'भावरुचि' नित कहते॥
श्रेयस जिनवरजी, श्रेयस्करजी उनके आप पुजारी।
हे क्षेत्रपालजी, रक्षपालजी, रक्षा करो हमारी॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भावरुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'भव्यरुचि' सुर, तत्त्व रुचिधर, श्रीजी पर रुचि रखते।
ये भरे तिजोरी उन भक्तों की, जो इनपे रुचि रखते॥ श्रेयस...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भव्यरुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जो शांति भाव से, श्रेयनाथ पे, शांतिधार करते हैं।
हम उन्हें खुशी से, सदा रुचि से, 'शांतिरुचि' कहते हैं॥ श्रेयस...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शांतिरुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (नव गीता छंद)

श्रेयांस प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री वासुपूज्य क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

शिवपुरवासी वासुपूज्य का, वास हमारे तन मन में।
श्री प्रसाद से ही खुशियों का, वास हमारे जीवन में॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
कामसुभट श्री वासुपूज्य को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(रोला छंद)

(तर्ज : सम्यक् साथै ज्ञान होय (चौथी ढाल))

यक्ष 'कुमार' कुमति आदिक त्रय ज्ञान विनाशे।
वासुपूज्य पद वास पाय सद्ज्ञान विकासे॥
मुनियों पर उपसर्ग न हो सुकुमार सरीखा।
अगर पुण्य से आये यक्ष 'कुमार' सरीखा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुमार यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

वासुपूज्य पर करती जो गंधोदक धारा।
उस गांधारी माता का पुण्योदय न्यारा॥
गंधोदक से आत्म पवित्र करें 'गांधारी'।
उनको अर्पित इत्र गंध दाड़िम कंधारी[1]॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गांधारी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(समानिका छंद)*

क्षायिकादि लब्धियाँ आपको रुचे सदा।
'लब्धिरुचि' देव को भक्त ये भजे सदा॥

1. कंधारी जाति का एक अनार (दाड़िम)।

वासुपूज्य नाथ के क्षेत्रपाल आप हो।
अर्घ संग भेंट हैं पुष्पमाल आप को॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री लब्धिरुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जीव आदि तत्त्व में, आपकी रुची रहे।
'तत्त्वरुचि' को सदा, तत्त्व पे रुची रहे॥ वासुपूज्य... ॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री तत्त्वरुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सत्य श्रेष्ठ ज्ञान से, आपको महारुची।
सत्य ज्ञानवान से, आपको सदा खुशी॥ वासुपूज्य... ॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सम्यक्रुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

तुर्य[1] आदि वाद्य ले 'वाद्यरुचि' आ रहे।
वासुपूज्य द्वार पे, नाच के बजा रहे॥ वासुपूज्य... ॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वाद्यरुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

वसुपूज्य[2] सुत के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. तुरही नाम का बाजा, 2. वासुपुज्यजी के पिता।

श्री विमलनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

विमलनाथ के समवशरण में, विमल प्रभामंडल प्यारा।
जिसमें अपने सातभवों को, देखे भवि मंडल न्यारा॥
अष्टखंड की स्वर्णथाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
निर्मल अमल विमल जिनवर को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(सखी छंद)

(तर्ज : सुनिये जिन अरज हमारी...)

यक्षेश्वर 'षण्मुख' देवा, लख चतुर्मुखी जिनदेवा।
ऋद्धि से बहुमुख धारे, जिनवर का रूप निहारे॥
हम स्वर्ण मुकुट ले आये, उनके सिर पर पहनाये।
हम श्रेष्ठ अर्घ ले आये, धर्मादि चार सुख पाये॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चतुर्मुख यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

यक्षी माता 'वैरोटी', जिसकी सुंदर सी चोटी।
लेकर रत्नों की ज्योति, जाती मेरू की चोटी॥
जो इसकी माँग सजाती, वो नार सुहाग बचाती।
भर करके इसकी गोदी, भर जाती सूनी गोदी॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वैरोटी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(शंभु छंद)

श्री 'विमलभक्ति' के रग-रग में, श्री विमलनाथ की भक्ति बहे।
श्री विमलनाथ के भक्तों पर, हे सुर ! तुमको अनुरक्ति रहे॥

यश ख्याति मान की इच्छाएँ, हे बाबा ! तुम ना करते हो।
जो विमलनाथ की भक्ति करे, तुम उसकी झोली भरते हो॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विमलभक्ति क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री क्षेत्रपाल 'आराध्यरुचि', आराध्य विमल के आराधक।
वे तरसे चौ आराधन के, साधन से बनने को साधक॥ यश...॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री आराध्यरुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ की वैद्य कला ज्ञानामृत औषध देती है।
वह रामबाण औषध मनहर श्री 'वैद्यरुचि' को रुचती है॥ यश...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वैद्यरुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'वाद्यरुचि' की वाद्य कला, लख सुर नर मुनि उत्साहित हैं।
जो इनसे वाद-विवाद करें, वो मिथ्यादृष्टि पराजित हैं॥ यश...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वाद्यरुचि क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री विमल प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करे सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विमलनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अनंतनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

प्रभु अनंत का लांछन[1] सेही, हमको प्रीति उनसे ही।
धन्य जन्म जिन पूजन से ही, धन्य मरण जिनवर से ही॥
अष्टखण्ड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
गुण अनंत युत प्रभु अनंत को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(कुसुमलता छंद)

थाल सजाकर ताल बजाकर, नाचे यक्षाधिप 'पाताल'।
ऊर्ध्व मध्य पाताल लोक के, चैत्यों को पूजे त्रयकाल॥
प्रभु अनंत के भक्त आपको, अर्पित नवरत्नों की माल।
नाना द्रव्य समर्पित तुमको, हरलो नवग्रह के दुष्काल॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पाताल यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

प्रभु अनंत से माँ 'अनंतमति', सम्यकमति के दीप जलाय।
मिथ्यादिक सातों प्रकृति से, बच अनंत मिथ्यात्व नशाय॥
लाल महावर लाल मेंहदी, लाल चुनरिया साड़ी लाल।
लाल आभरण तुझे चढ़ाऊँ, कर दे मैया मालामाल॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अनंतमति यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(काव्य छंद)*

शासन देव 'स्वभाव', निश्छल सरल स्वभावी।
पा अनंत पद छाँव, बनते धर्म प्रभावी॥
क्षेत्रपाल सुरराज, राजाओं के राजा।
तुमको पूजे आज, भक्त बजाकर बाजा॥1॥

---

1. चिन्ह।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री स्वभाव क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

इह भव के दुर्भाव, भव-भव में दुःखकारी।
इस हित सुर 'परभाव', पुण्य करे सुखकारी॥
क्षेत्रपाल सुरराज, राजाओं के राजा।
तुमको पूजे आज, भक्त बजाकर बाजा॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री परभाव क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल 'अनुपम्य', अनुपम क्षेत्र बचाते।
प्रभु अनंत पर धन्य, अपने नेत्र लगाते॥ क्षेत्रपाल...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अनुपम्य क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सरल सहज आनंद, 'सहजानंद' मनाते।
जल फल फूल सुगंध, जिन अर्चन हित लाते॥ क्षेत्रपाल...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सहजानंद क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल अनंत प्रभु के श्रेष्ठतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अनंतनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री धर्मनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

धर्मनाथ के धर्म तीर्थ ने, धर्म देशना फैलाई।
धर्म करो पर मर्म[1] समझकर, यही धर्म विधि बतलाई॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
धर्मतीर्थ नृप धर्मनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(हरिगीता छंद)

सब किन्नरादिक सुर प्रसन्नित, देव 'किन्नर' आपसे।
तुम भक्तिमय संगीत गाते, छंद मय आलाप से॥
तप रूप धन बल ज्ञान प्रभुता, पितृ मातुल[2] मद तजे।
हे अष्ट मद[3] विरहित तुम्हें हम, अष्ट द्रव्यों से भजे॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री किन्नर यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

प्रतिमूर्ति माँ की मानसी माँ, भक्त को माँ सी लगे।
प्रभु मूर्ति दर्शन हेतु जिसकी, आँख दो प्यासी लगे॥
कुगुरू कुदेव कुवृष[4] व उनके, भक्त षष्ठ अनायतन।
तज ये सभी श्री 'मानसी' माँ, पूजती धर्मायतन॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मानसी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(मोतियादाम छंद)

(तर्ज : मारने वाला है भगवान.....)

'धर्मकर' करते धर्म प्रचार, करें जिनधर्मी पर उपकार।
जिनेश्वर धर्मनाथ के संग, बजाया तुमने धर्म मृदंग॥1॥

---

1. अर्थ, 2. मामा, 3. घमंड, 4. कुधर्म।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री धर्मकर क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

धर्म पर जिनका दृढ़ श्रद्धान, वही हैं 'धर्मकरी' श्रीमान्।
जिनेश्वर धर्मनाथ के संग, बजाया तुमने धर्म मृदंग॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री धर्मकरी क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अष्ट कर्मों को करने शांत, बने श्री 'शांतकर्म' विक्रांत।
जिनेश्वर धर्मनाथ के संग, बजाया तुमने धर्म मृदंग॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शांतकर्म क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

देव श्रुत गुरु की विनय सदैव, करें श्री 'विनयनाम' के देव।
जिनेश्वर धर्मनाथ के संग, बजाया तुमने धर्म मृदंग॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विनयनाम क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(नव गीता छंद)

श्री धर्म प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहें सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री धर्मनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री शांतिनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

शांतिनाथ जिन जगतशांति कर, सर्व उपद्रव शांति करें।
शांति संदेश सुना भव्यों को, आत्म शांति हित क्रांति करें॥
अष्ट खंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
शांति प्रदाता शांतिनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(शंभु छंद)

श्री शांति भक्त श्री 'गरुड़' यक्ष, जो सम्यक् गरुड़ मणी पाये।
फिर मिथ्या नागपाश वाले, दृढ़ बंधन सारे खुल जाये॥
सुख शांति सुधा की गरुड़मणी[1], दो हमें 'गरुड़' सुर गरुड़मुखी।
दुःख नागपाश के बंधन से, फिर हम सब ना हो कभी दुःखी॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गरुड़ यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

धर्मी मानस से प्रेम करें, श्री 'महामानसी' जगदंबा।
गोधुलिकाल में गो शिशु पर, ज्यों प्रेम करे रंभा रंभा॥
गोरस[2] के व्यंजन लेकर हम, माँ तुझको अर्घ चढ़ायेंगे।
हे मोरवाहिनी मात तुझे, हम मोर मुकुट पहनायेंगे॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महामानसी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(जोगीरासा छंद)*

सिद्ध भक्त श्री 'सिद्धसेन' जी, कार्य सिद्ध करवाते।
सिद्धचक्र मंडल विधान हित, नंदीश्वर में जाते॥
शांतिनाथ पर शांतिमंत्र पढ़, शांतिधार जो करते।
क्षेत्रपालजी उनका जीवन, सौख्य शांति से भरते॥1॥

1. सर्प का जहर उतारने वाली एक मणी। 2. दूध, दही, घी आदि।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सिद्धसेन क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

महापुरुष इक सौ उनसत्तर, होते क्षेत्र भरत में।
'महासेन' के इष्ट जिनेश्वर, शांतिनाथजी उनमें॥
शांतिनाथ पर शांतिमंत्र पढ़, शांतिधार जो करते।
क्षेत्रपालजी उनका जीवन, सौख्य शांति से भरते॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महासेन क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

चौदह राजु प्रमाण लोक ये, लोकपुरुष कहलाता।
उनमें से लोकाग्र शिखर ही, 'लोकसेन' को भाता॥ शांतिनाथ...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री लोकसेन क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

विनयावनत रहे जो निशदिन, शांतिनाथ के आगे।
इसी पुण्य से 'विनयकेतु' की, सेना सबसे आगे॥ शांतिनाथ...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विनयकेतु क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री शांति प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करे सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शांतिनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री कुंथुनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

सिद्धशिला में सिद्धि प्रदाता, सिद्ध अनंतानंत रहे।
उन अनंत सिद्धों के गण[1] में, कुंथुनाथ भगवंत रहे॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
सिद्धि प्रदाता कुंथुनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(धत्ता छंद)

'गंधर्व' नाम के, कुंथुनाथ के, यक्षराज, यशवान बड़े।
हम सब हे देवा !, लेकर मेवा, अर्घ चढ़ाते आन खड़े॥
हाथों में डमरू, पग में घुँघरू, थिरक थिरक नाचे हर्षा।
हम तुम्हें मनाते, कीर्तन गाते, सा रे गा मा प ध नी सा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गंधर्व यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'गांधारी' माता, भाग्य विधाता, जगमाता, जगकल्याणी।
हम सबका नाता, तुझसे माता, माँ-बेटे का, सुखदानी॥
हम झुमके लाये, झूमें गाये, तुझे चढ़ाये, हरषायें।
तू जिन पर खुश है, वो सब खुश हैं, उनको सुख हैं, ना दुःख है॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गांधारी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(स्रग्विणी छंद)*

'यक्षनाथ' ने तजी, पाप की मूढ़ता।
छोड़ दी देव वा, लोक गुरू मूढ़ता॥
देव तुम अमूढ़ हो, छोड़ के मूढ़ता।
आप में समा रही, ज्ञान की गूढ़ता॥1॥

1. समूह।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री यक्षनाथ क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'भूमिनाथ' देव में धर्म की भूमिका।
लोकमूढ़ता तजी पा जिनेश्वर कृपा।।
देव तुम अमूढ़ हो, छोड़ के मूढ़ता।
आप में समा रही, ज्ञान की गूढ़ता[1] ।।2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भूमिनाथ क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

देव मूढ़ता तजी, आपने देव जी।
'देशनाथ' देव ने, मूढ़ दृष्टि तजी।। देव तुम....।।3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री देशनाथ क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'विनयनाथ' में, जैन गुरू की विनय।
त्याग गुरू मूढ़ता, पाय सम्यक्त्व नय।। देव तुम....।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विनयनाथ क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री कुंथु प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम।।
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुंथुनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे।।
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो।।

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. गहराई।

श्री अरहनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

अरहनाथ ने अर्हम् बनकर, सबको सम्यक्ज्ञान दिया।
हमने अर्हम् बीजाक्षर से, अरहनाथ का ध्यान किया॥
अष्टखंड की स्वर्णथाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
त्रय पदधारी अरहनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(सखी छंद) (तर्ज : सुनिये जिन अरज हमारी...)

यक्षेन्द्र 'खगेन्द्र' हमारे, सम्यग्दर्शन को धारें।
ले खड्ग[1] धनुष वा भाले, दुःखियों के संकट टाले॥
पहना के लाल दुपट्टा, मिट जाये दुःख का सट्टा।
गहनों से आज सजायें, घर में धन धर्म बढ़ायें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री खगेन्द्र (महेन्द्र) यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

माँ 'तारावती' हमारी, सतियों की तारणहारी।
जो माँ का नयन सितारा, वो भक्त कभी ना हारा॥
चमके जो स्वर्ण झरी से, ऐसी सुंदर साड़ी से।
माँ तारा तुझे सजा दे, तारों जैसी चमका दें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री तारावती (विजया) यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(शेर छंद)

नरकों की मार काट से सदा ही जो डरें।
'गिरिनाथ' इसलिए ही, रौद्र ध्यान ना करें॥

1. तलवार।

हे देव ! आप धन्य-धन्य धर्म ध्यान से।
हम भी हैं धन्य-धन्य आपके विधान से॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गिरिनाथ क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पशु दुर्गति में जीव छेद भेद दुःख सहे।
अतएव 'गव्हरनाथ' आर्त्त ध्यान ना चहे॥ हे देव ...॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गव्हरनाथ क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

शुभ मनुज[1] गति जिससे, मनुज मोक्ष पा रहे।
श्री 'वरुणनाथ' अतः धर्म ध्यान ध्या रहे॥ हे देव...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वरुणनाथ क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सब देव गण भी मानसिक व्यथा में जूझते।
श्री 'मैत्रनाथ' शुक्ल ध्यानियों को पूजते॥ हे देव...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मैत्रनाथ क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री अरह प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अरहनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. मनुष्य।

श्री मल्लिनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

मल्लिनाथ ने कर्म मल्ल से, बिना क्रुद्ध[1] हो युद्ध किया।
प्रभु की लीला प्रभु ही जाने, कैसे ऐसा युद्ध किया॥
अष्टखंड की स्वर्णथाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
बालयतीश्वर मल्लिनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(गीता छंद)

प्रभु मल्लि के दरबार में, ना देर ना अंधेर हैं।
अनमोल जिनके बोल ये, वो यक्षराज 'कुबेर' है॥
मंदिर सजा हम आपका, तोरण व वंदनबार से।
रंगोलियाँ रच पूजते, हम अर्घ के उपहार से॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुबेर यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

मुनि संघ पे अपवाद[2] को, सहती न माँ 'अपराजिता'।
मुनि संघ रक्षा हित बनी, हे मात ! तू माता-पिता॥
सिंदूर बाजूबंद नथ, लेकर बिछुड़िया पैजनी।
शृंगार कर माँ आपका, हर भक्त की बिगड़ी बनी॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अपराजिता यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(पद्धरि छंद)*

चक्रीकृत कल्पतरू[3] विधान, श्री 'क्षितिप' वहाँ जाते महान।
तुम मल्लिनाथ के भक्त देव, हम भक्त भजे तुमको सदैव॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री क्षितिप क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

---

1. क्रोधित, 2. झूठा आरोप, 3. कल्पद्रुम विधान।

सुरपतिकृत इंद्रध्वजा[1] विधान, श्री 'भवप' करें आनंद मान।
तुम मल्लिनाथ के भक्त देव, हम भक्त भजे तुमको सदैव॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भवप क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सुविधान सर्वतोभद्र नाम, 'क्षांतिप' माने कल्याण धाम।
तुम मल्लिनाथ के भक्त देव, हम भक्त भजे तुमको सदैव॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री क्षांतिप क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जिनभक्ति नित्यमह मन लुभाय, 'क्षेत्रप' उसमें निज मन लगाय।
तुम मल्लिनाथ के भक्त देव, हम भक्त भजे तुमको सदैव॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री क्षेत्रप क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

(नव गीता छंद)

श्री मल्लि प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मल्लिनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

---

1. इंद्रध्वज विधान।

श्री मुनिसुव्रतनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

मुनिसुव्रत जिन व्रत छैनी से, शिल्पकार का काम करें।
छील छील भव्यों के दुर्गुण, मुनियों का निर्माण करें॥
अष्टखण्ड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
व्रतियों के पति मुनिसुव्रत को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(कुसुमलता छंद)

जिस मंदिर के वरूण[1] भाग में, रहते मुनिसुव्रत जिनराज।
'वरुण' यक्ष की अनुकंपा से, खुश रहती वो जैन समाज॥
वरुण यक्ष को अर्घ चढ़ा हम, उनसे माँगे ये वरदान।
वास्तु गणितमय आगमसम्मत, होवे जिनमंदिर निर्माण॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वरुण यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'बहुरूपिणी' माँ मुनिभक्तों हित, धरती चंद्रमुखी का रूप।
किन्तु मुनिद्रोही दुष्टों पर, बनती ज्वालामुखी अनूप॥
हे बहुरूपी ! तुझे समर्पित, बहुरत्नों के सुंदर हार।
चंद्रमुखी का रूप बनाकर, इस बालक को देना प्यार॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री बहुरूपिणी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(चौपाई)*

'तंद्रराज' अघतंद्रा[2] छोड़े, चंचल मन जिनपद से जोड़े।
जिन वच में शंका ना धारें, निःशंकित शुभ अंग संवारे॥
तुमने मुनिसुव्रत को ध्याया, जिनशासन का मान बढ़ाया।
आठों अंगों को अपनाया, जिससे सम्यग्दर्शन पाया॥1॥

1. पश्चिममध्य, 2. पापरूपी नींद।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री तंद्रराज क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

श्री 'गुणराज' गुणों के राजा, उनको अर्पित पारसखाजा[1]।
भव सुख वांछा वे परिहारे, अंग निकांक्षित गुण को धारे॥
तुमने मुनिसुव्रत को ध्याया, जिनशासन का मान बढ़ाया।
आठों अंगों को अपनाया, जिससे सम्यग्दर्शन पाया॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गुणराज क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक पर्व मनायें, वो 'कल्याणराज' कहलायें।
ग्लानि[2] करें ना ये मुनियों से, निर्विचिकित्सा धरें खुशी से॥ तुमने..॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कल्याणराज क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'भव्यराज' को अर्घ चढ़ाओ, धर्म महोत्सव भव्य बनाओ।
ये अमूढ़ दृष्टि को धारे, मूढ़ दृष्टि बन कभी न हारे॥ तुमने..॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भव्यराज क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

सुव्रत प्रभो के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. एक मिठाई, 2. घृणा।

श्री नमिनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

नमि जिनवर को नम्रीभूत[1] हो, शत शत नमन हमारा है।
प्रभु से प्रभु का जिनगुण वैभव, पाना भाव हमारा है॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
त्रिभुवन पूजित नमि जिनेश को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(जोगीरासा छंद)

नमि जिनवर की सौम्य भुकुटि[2] पे, 'भृकुटि' यक्ष की भृकुटी।
सूक्ष्म स्निग्ध[3] बालों से सुंदर, लगती बड़ी अनूठी॥
जिनमत पर जो भृकुटी उठायें, उनको आप सुधारें।
जिसके ऊपर भृकुटी आपकी, उसके वारे-न्यारे॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भृकुटि यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

नमि जिनेश के द्वारे नाचे, छम छम माँ 'चामुंडी'।
प्रभु चरणों में नित्य चढ़ायें, फूल कमल निर्गुंडी[4]॥
आओ सखियों रत्नचूर्ण से, माँ की माँग सजाओ।
सदा सुहागन का वर पाने, मंगल अर्घ चढ़ाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चामुंडी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(चौपाई)*

क्षेत्रपाल श्री 'कपिल' हमारे, कपि[5] सम चंचल मन को मारे।
निज गुण वा पर[6] अवगुण ढांके, मन में उपगूहन गुण राखे॥
नमि जिनेश के शासन देवा, करते जिनशासन की सेवा।
अष्ट अंग भूषण ये पाये, सम्यग्दर्शन को विकसाये॥1॥

1. झुककर, 2. भौंह , 3. चिकने, 4. एक फूल का नाम, 5. बंदर, 6. दूसरों के।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कपिल क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

बटुक[1] ब्रह्मचारी जो होते, उन पर 'बटुक' सदा खुश होते।
भटकों को ये धर्म सिखावे, सुस्थितिकरण गुणी कहलावे॥
नमि जिनेश के शासन देवा, करते जिनशासन की सेवा।
अष्ट अंग भूषण ये पाये, सम्यग्दर्शन को विकसाये॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री बटुक क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'भैरवनाथ' बजा के भेरी, जिनमंदिर की करते फेरी।
धर्मी से वात्सल्य तिहारा, जो तीर्थंकर पद दातारा॥ नमि....॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भैरवनाथ क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सुंदर-सुंदर काव्य बनाते, 'मल्लाकाख्य' सुकाव्य सुनाते।
जग में धर्म प्रभाव बढ़ाते, शुभ प्रभावना गुण अपनाते॥ नमि....॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मल्लाकाख्य क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

नमिनाथ प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहें सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नमिनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. छोटी उम्र के।

श्री नेमिनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

शिवरानी से ब्याह रचाने, जिनने राजुल को छोड़ा।
ऐसे जिनवर नेमिनाथ से, हमने अपना मन जोड़ा॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
परम विरागी नेमिनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(शंभु छंद)

गोमेद रत्न की प्रतिमाऐं, 'गोमेद' यक्ष को प्यारी है।
ये नेमिनाथ के शासन के, शासन रक्षक प्रतिहारी है॥
प्रभु चरणों में ये भरत नाट्य, वा कत्थक नृत्य रचाते हैं।
हम गरबा घूमर नाच-नाच, तुमको शुभ द्रव्य चढ़ाते हैं॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गोमेद (सर्वाण्ह) यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जब गोमटेश पर धाराऐं, नाभि से नीचे ना आई।
तब 'कुष्मांडिनी' गुल्लिका बन, प्रभुवर को पूर्ण भीगा पाई॥
क्यूँ व्यर्थ भला सब कहते हैं, नारी अभिषेक न कर सकती।
यदि ऐसा है तो कहो भला, ये घटना कैसे घट सकती॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुष्मांडिणी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(धत्ता छंद) (तर्ज-वसु द्रव्य संवारी....)

ज्यों कोयल गायें, हूक मचायें, वैसे 'कोकल' सुर गायें।
ये सर्वौषधि से, बड़ी खुशी से, नेमिनाथ को नहलायें॥
यह गुड़ की भेली, हमने ले ली, लिया तेल सिंदूर चना।
हम अर्घ चढ़ायें, नाचे गायें, बाबा तुमको मना मना॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कोकल क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

ज्यों खग[1] नभ गामी, त्यों नभगामी, श्री 'खगनाम' कहाते हैं।
ये अष्ट गंध से, दिव्य रंग से, जिन अभिषेक रचाते हैं॥
यह गुड़ की भेली, हमने ले ली, लिया तेल सिंदूर चना।
हम अर्घ चढ़ायें, नाचे गायें, बाबा तुमको मना मना॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री खगनाम क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जिनकी मधु[2] बोली, सूरत भोली, वही 'त्रिनेत्र' भजे प्रभु को।
देवों की टोली, खेले होली, तंदुल पिण्ड[3] चढ़ा प्रभु को॥ यह...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री त्रिनेत्र क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

भर भरके झोली, पुष्प चमेली, ले 'कलिंग' जिन भक्ति करें।
ले हलुआ रबड़ी, खाजे पपड़ी, चढ़ा-चढ़ा शिव शक्ति वरें॥ यह...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कलिंग क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री नेमिप्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नेमिनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. पक्षी, 2. मीठी, 3. चावल का आटा।

श्री पार्श्वनाथ क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

पार नहीं जिनके रस का वो, प्रभु पारस कहलाते हैं।
पिला पिला जिनवाणी का रस, सबको पार लगाते हैं॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
चिंतामणि श्री पार्श्वनाथ को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(शंभु छंद)

हे देव ! आप धनभागी जो, पारस प्रभु से नवकार सुना।
मानो 'धरणेन्द्र' बना तुमको, प्रभुवर ने अपना यक्ष चुना॥
तुमको सिंहासन पर बैठा, हम स्वर्णिम छत्र चढ़ाते हैं।
कुमकुम का टीका लगा तुम्हें, वरराजा सम चमकाते हैं॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री धरणेन्द्र यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

धरणेन्द्र देव की अर्द्धांगिन[1], शोभे उनके अर्द्धासन पे।
बैठी हैं चार भुजा वाली, 'पद्मावती' माँ हंसासन पे॥
हम शुक्रवार का व्रत करके, हे माता ! तुझे मनायेंगे।
अंगूठी मंगलसूत्र वस्त्र, कण्ठी से तुझे सजायेंगे॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पद्मावती यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

(शेर छंद) (तर्ज- दे दी हमें आजादी..)

प्रभु पार्श्व का जो अष्ट द्रव्य ले भजन करें।
जिनधर्म की कीर्ति का 'कीर्तिधर' सृजन करें॥
हम ले मृदंग ढोल भक्ति नृत्य करेंगे।
श्री क्षेत्रपाल देव को प्रसन्न करेंगे॥1॥

1. पत्नि।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कीर्तिधर क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जो अष्ट प्रातिहार्य पार्श्व जिन को चढ़ायें।
'स्मृतिधरजी' ज्ञान बुद्धि स्मृति पुण्य बढ़ायें॥
हम ले मृदंग ढोल भक्ति नृत्य करेंगे।
श्री क्षेत्रपाल देव को प्रसन्न करेंगे॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री स्मृतिधर क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जो अष्ट मांगलिक सुद्रव्य नित्य ला रहे।
श्री 'विनयधर' विनय से भक्ति गीत गा रहे॥ हम ले...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विनयधर क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अष्टाह्निका के अष्ट दिन में भक्ति जो करें।
श्री पार्श्वभक्ति अब्ज[1] से श्री 'अब्जधर' करें॥ हम ले...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अब्जधर क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री पार्श्वप्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहें सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. कमल।

श्री महावीर स्वामी क्षेत्रपाल पूजा

(नरेन्द्र छंद)

वर्तमान के शासन नायक, वर्धमान प्रभु कहलाते।
पाँच नामधारी प्रभु को भज, भविजन पंचम गति[1] पाते॥
अष्टखंड की स्वर्ण थाल में, अष्ट द्रव्य हम लाते हैं।
धर्म क्रांतिकारी सन्मति को, मंगल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष-यक्षी पूजा

(अडिल्ल छंद) (तर्ज- सरव परव में....)

महावीर के यक्षराज 'मातंग' हैं।
अंग-अंग में जिनके दिव्य उमंग हैं॥
वर्तमान के शासन देव महान ये।
सम्यग्दर्शन युक्त बड़े विद्वान ये॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मातंग यक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सिद्धायिनी माँ करती धर्म प्रभावना।
वीरा प्रभु की यक्षी ये वीरांगना॥
तुझे समर्पित अर्घ बिंदि वा पैजनी[2]।
सर्व कार्य सिद्धि दे माँ सिद्धायिनी॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सिद्धायिनी यक्ष्यै इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा *(काव्य छंद)*

'कुमुद' देव के द्वार, हम सब कुमुद[3] चढ़ाते।
सुखी रहे परिवार, हम यह अरज सुनाते॥
क्षेत्रपालजी आप, वीरा प्रभु के न्यारे।
संकट दुःख संताप, हर लो आप हमारे॥1॥

1. पंचम गति-मोक्ष, 2. पायल, 3. फूल।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुमुद क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'अंजन' देव महान, जन-जन के मन भाते।
खुश हो भक्त समाज, हम यह अरज सुनाते॥
क्षेत्रपालजी आप, वीरा प्रभु के न्यारे।
संकट दुःख संताप, हर लो आप हमारे॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अंजन क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'चामर' देव विशेष, प्रभु पर चँवर ढुराते।
खुश हो भारत देश, हम यह अरज सुनाते॥ क्षेत्रपालजी...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चामर क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

'पुष्पदंत' के द्वार, पुष्प सभी बरसाते।
सुखी रहे संसार, हम यह अरज सुनाते॥ क्षेत्रपालजी...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पुष्पदंत क्षेत्रपालाय इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नव गीता छंद)

श्री वीर प्रभु के यक्ष यक्षी क्षेत्रपाल महानतम।
तिल तेल गुड़ वस्त्रादि से उनका करें सम्मान हम॥
उनको समुच्चय अर्घ दे हम जय जिनेन्द्र कहे सदा।
जिनभक्त की जिनभक्ति से प्रमुदित रहे ये सर्वदा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रस्य जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षीश्च क्षेत्रपालेभ्यो इदं जलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षेत्रपालेभ्यो नमः।

वृहद् जयमाला

दोहा- श्री गणेश जिसका हुआ, मंगलाष्टक के साथ।
उस विधान की पूर्णता, जयमाला के साथ॥

(शंभु छंद)

जय चौबीसों प्रभुवर की जय, जय क्षेत्रपाल बाबा की जय।
जिन यक्ष यक्षिणी की जय जय, जय जिनशासन देवों की जय॥
वृषभादिक चौबीसों प्रभु का, शुभ समवशरण मनभावन था।
वो स्वर्णिम काल जहाँ रिमझिम, जिन दिव्य वचन का सावन था॥1॥
तब क्षेत्रपालजी चार-चार, हर तीर्थंकर के शासन में।
अरु यक्ष-यक्षिणी एक एक, सब भवनत्रिक सुर बन जन्में।
जिन समवशरण में जा इनने, सम्यग्दर्शन को पाया है।
जिनशासन की सेवा करके, बहु पुण्य सातिशय पाया है॥2॥
कम से कम इनकी ऋद्धि आठ, अरु ठाठ-बाट वैभव भारी।
धरते शुभ मतिश्रुत अवधिज्ञान, ना होते ये कवलाहारी॥
अठ मद, त्रय शठ वा आठ दोष, अरु छह अनायतन दुःखकारी।
ये सब मिल कुल पच्चीस दोष, सम्यग्दर्शन हरते भारी॥3॥
पर ये जिनशासन देव सभी, इन सब दोषों को दूर करें।
यश ख्याति लाभ की वांछा भी, ना कभी इन्हें मजबूर करें॥
अरिहंत सिद्ध जो बनते हैं, वो देव सुदेव कहाते हैं।
पर जो खुद को भगवान कहे, वो देव कुदेव कहाते हैं॥4॥
पर ये जिनशासन देव सभी, जिनभक्त स्वयं को बतलाते।
भगवन् बनने का नाटक कर, जनता को कभी न भटकाते॥
मुनि वा मुनिभक्तों के ऊपर, ये जितनी अनुकंपा करते।
उतना ही मुनिविद्रोही का, ताड़न[1] कर दुर्जनता हरते॥5॥
जब जब पापी जन सतियों पर, मतिभ्रम हो आँख उठाते हैं।
तब तब ये ईंटों का जवाब, पत्थर से उन्हें सिखाते हैं॥

1. सजा देना

ना इनका कोई वैरी[1] है, ना इनको वैर किसी से हैं।
ये केवल शासन रक्षा का, करते कर्त्तव्य खुशी से हैं॥6॥
ये साम दाम वा दंड भेद, प्रत्येक नीति अपनाते हैं।
ये नीति कुशल हर नीति को, समयानुसार अपनाते हैं॥
कुछ मिथ्यात्त्वी इन देवों को, मिथ्यादृष्टि बतलाते हैं।
ये देव नरक में जायेंगे, कहकर सबको भटकाते हैं॥7॥
ये देव अगर मिथ्यात्वी हैं, तो समवशरण कैसे जाते।
देवों की गति से नरक गति, कोई भी जीव नहीं पाते॥
अब कुछ तो सोच भले मानुष, उपसर्ग हुआ जब पारस पर।
तब वो उपसर्ग मिटाया था, अहिपति[2] पद्मावती ने आकर॥8॥
श्रुतसागर मुनि के ऊपर जब, तलवार उठी मंत्री जन की।
तब रक्षा करते क्षेत्रपाल, ये घटना रक्षाबंधन की॥
जब गणिनी राजश्री माता की, आँखों में छाये अंधियारे।
तब क्षेत्रपाल मांडल वाले, बन गये आँख के उजियारे॥9॥
प्रत्येक पुरातन मंदिर में, ये शासन देव विराजित हैं।
जिनके अतिशय द्वारा अब तक, जिन धर्म ध्वजा अपराजित हैं॥
कुंथुगिरी में इच्छापूरक, श्री क्षेत्रपाल की छैया हैं।
ऊपर भी पारस मंदिर में, अहिपति पद्मावती मैया हैं॥10॥
श्री क्षेत्रपाल मांडल देहरा, मुक्तागिरि मधुवन रोहतक में।
बुरहान ललितपुर सोनागिर, स्तवनिधि बिजौलिया आदिक में॥
जिनने इन शासन देवों को, मंदिर से बाहर कर डाला।
उनने पापों की कालिख से, कर दिया स्वयं का मुँह काला॥11॥
जो केवलिश्रुत वृष संघ और, देवों को करता अपमानित।
श्री उमास्वामी गुरुदेव कहें, वो जीव मोह से अभिशापित॥
महावीर कीर्ति सन्मति गुरु वा, कुंथुसागर तप शक्ति वरें।
श्री पद्मावती वा क्षेत्रपाल, आदिक सुर इनकी भक्ति करें॥12॥

1. शत्रु, 2. धरणेन्द्र।

श्री क्षेत्रपाल बाबा के कर[1], डमरु आदिक से शोभित हैं।
बहु अस्त्र शस्त्र भालादिक ये, रखते शासन रक्षा हित हैं॥
श्री क्षेत्रपाल जी का विधान, भक्तों के संकट को काटे।
जो जितनी प्रभु की भक्ति करें, उतनी उनको खुशियाँ बाँटे॥13॥
हे देव दयालु आप बड़े, रोगी के रोग निदान करो।
निर्बल को बल निर्धन को धन, दुखियों को सुख का दान करो॥
डाकिन शाकिन वा भूतप्रेत, ये सारी बाधा विनशाओ।
सूनी गोदी भरके हम पर, अपनी अनुकंपा बरसाओ॥14॥
हे शासन देवी देव हमें, जिनशासन रक्षा का वर दो।
जिनभक्ति का रस रग-रग में, हम सब जिनभक्तों के भर दो॥
आचार्य कुंथुसागर के सब, शुभ कार्य सिद्ध अनिवार्य करो।
जिससे जिनशासन वृद्धि हो, ऐसे मंगलमय कार्य करो॥15॥
आचार्यवर्य कुंथुसागर, गुरु गुप्तिनंदि उनके नंदन।
उनका नंदन मुनि 'चंद्रगुप्त', सुन लो इन सबके क्षेम वचन॥
जिस मुक्तिराज की आश तुम्हें, वह मुक्तिराजश्री तुम पाओ।
जो मुक्तिमार्ग राही उनके, हे क्षेत्रपाल दुःख विनशाओ॥16॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी षण्णवति क्षेत्रपालेभ्यश्च यक्ष-यक्षिभ्यो शाकिनीभूतप्रेत-पिशाचादिकृत घोरोपद्रव विनाशकाय महाक्षामड़ामरदुरितारिमारी घोरोपद्रव विध्वंसकाय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण जग की शांति हित हम, शांतिधारा कर रहे।
पुष्पांजलि हे देव ! हम, कर पुष्प में ले कर रहे॥
श्री क्षेत्रपाल विधान से, सब क्षेत्रपाल प्रसन्न हो।
सुख शांति धन वा धर्म से, हम सब सुखी संपन्न हो॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा- क्षेत्रपाल बाबा हमें दो ऐसा वरदान।
हम जिनेन्द्र भक्ति करें, जब तक घट में प्राण॥
'चंद्रगुप्त' की आश ये, फैले जिनमत शान।
इस हित बाबा तुम बनो, सहयोगी गुणवान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

1. हाथ।

विधान प्रशस्ति

(मोतियादाम छंद) (तर्ज – मारने वाला है भगवान...)

जयो जय चंद्रनाथ चंद्रेश, जयो जय शांतिनाथ चक्रेश।
जयो जय चौबीसों तीर्थेश, जयो जय उनके सर्व गणेश॥1॥

जयो जय जय केवल ज्ञानेश, जयो जय परम दिगम्बर वेष।
जयो जय कुंथुसिंधु गुरुदेव, जयो जय गुप्तिनंदी गुरुदेव॥2॥

वीर के शासन युग में वीर, हुए महावीरकीर्ति गंभीर।
सूर्यवर कुंथुसिंधु ऋषिराज, बने उनके नंदन मुनिराज॥3॥

बनाया उनने नंदी संघ, बजाया जिसने धर्म मृदंग।
बने उस नंदि संघ की शान, कवीश्वर गुप्तिनंदी गुणखान॥4॥

वही मेरे दीक्षा गुरुदेव, किया है शिक्षित मुझे सदैव।
भजन पूजन विधान भरपूर, काव्य कौशल में गुरुवर शूर॥5॥

आपके संग राजश्री मात, वही मेरी मुक्ति पथ मात।
आर्यिकाओं में वो गुणवान, लिखे श्री गणधर वलय विधान॥6॥

गुरु गुप्ति व राजश्री मात, करूँ कैसे इनका गुणगान।
जिनागम का सम्यकमय ज्ञान, मिला इनसे मुझको वरदान॥7॥

उसी संग काव्य कलादिक ज्ञान, ग्रहण कर लिखा महान विधान।
नहीं तो मेरी क्या औकात, सभी कुछ ये गुरु आशीर्वाद॥8॥

हमारे गुरुवर के गुरुराज, गणधराचार्य कुंथु ऋषिराज।
उन्होंने भेजा इक पैगाम[1], गुरुवर गुप्तिनंदि के नाम॥9॥

छ्यानवे क्षेत्रपाल के नाम, लिखो तुम क्षेत्रपाल सुविधान।
गुरु ने पा निज गुरु निर्देश, दिया मुझको स्वर्णिम आदेश॥10॥

1. संदेश

कहा मैंने गुरुवर ये काम, करूँगा मैं कैसे नादान।
गुरुवर ने सिर पर रख हाथ, दिया साहसमय आशीर्वाद॥11॥

संघ के नाथ हमारे ईश, तीर्थकर शांतिनाथ जगदीश।
उन्हीं की शांत छवि को देख, लिखे हैं इस विधान के लेख॥12॥

कुंथु गुरुवर भी दे वरदान, कहे हो पूर्ण सफल अभियान।
गुप्ति गुरु का संपादन पाय, प्रथम ही ये विधान बन जाय॥13॥

गुरु वा दादा गुरु ने हाथ, रखा है मुझ बालक के माथ।
शुरू दिल्ली में रचना काम, समाप्ति की बड़ौत में आन॥14॥

मुनि श्री महिमा सुयश महान्, क्षमाश्री आस्थाश्री गुणवान।
धन्यश्री क्षुल्लिका सुखखान, सभी है सहयोगी विद्वान्॥15॥

मुझे ना छंद आदि का ज्ञान, अल्पधी[1] मैंने रचा विधान।
अगर हो प्रामाणिक विद्वान, तभी शोधन करना धीमान॥16॥

रहे जब तक धरती आकाश, और रवि[2] शशि[3] का दिव्य प्रकाश।
रहे जब तक मुनि संघ महान्, रहे तब तक ये श्रेष्ठ विधान॥17॥

करेगा जो भी ये सुविधान, रखेंगे क्षेत्रपाल नित ध्यान।
सुखी होगा वह घर परिवार, मिले धन धर्म उसे हर बार॥18॥

जिनागम का लेकर आधार, लिखा है ये विधान साकार।
गुरुजन का आशीष प्रकाश, रहे नित 'चंद्रगुप्त' के पास॥19॥

विश्वनंदि गुरुदेव का, पा संस्कृत सुविधान।
इस विधान का ये सृजन, क्षेत्रपाल के नाम॥
वीराब्दे संवत महा, पच्चीस सौ अड़तीस।
ये रचना पूरण हुई, पाकर गुरु आशीष॥
गुप्तिनंदि गुरु का तनुज, 'चंद्रगुप्त' मम नाम।
इस विधान से वृष[4] ध्वजा, फहरें ललित ललाम॥

1. अल्प बुद्धि, 2. सूर्य, 3. चाँद, 4. धर्म।

श्री क्षेत्रपाल सिद्धि मंत्र

1. **क्षेत्रपाल मंत्र**– ॐ खं क्षेत्रपालाय नमः।

विधि एवं फल– ताम्र पत्र पर क्षेत्रपाल की मूर्ति बनाकर उस पर जल व दुग्ध धारा करते हुए सवा लाख जाप करने से मंत्र सिद्ध होता है एवं क्षेत्रपाल प्रसन्न होते हैं।

2. **क्षेत्रपाल सिद्धि मंत्र**– ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः।

विधि एवं फल–इस मंत्र की त्रिकाल 12000 जाप करने से क्षेत्रपालजी प्रसन्न होते हैं।

3. **क्षेत्रपाल मंत्र**–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टम क्षेत्रपालाय शाकिनी डाकिनी भूतप्रेतपिशाचादिकृत घोरोपद्रव विनाशकाय महाक्षामडामर दुरितारिमारी–घोरोपद्रवविध्वंसक (अमुक नामधेयस्य) तथा मम सर्वशांतिं कुरु–कुरु स्वाहा।

विधि एवं फल–इस मंत्र के जाप करने से समस्त उपद्रव एवं भूत–प्रेत संबंधी बाधा दूर होती है।

(4) अथश्री सर्वाकर्षण भैरव मंत्र :– ॐ ऐं क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं सं वं वः आपदुद्धारणाय, अजामलबद्धाय लोकेश्वराय सर्वाकर्षण भैरवाय दारिद्रय विद्वेषणाय, ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः।

विधि एवं फल–इस मंत्र को प्रतिदिन 108 बार जपने से सर्वमनोकामना सिद्ध होती है।

(5) अष्ट क्षेत्रपाल मंत्र–

ॐ नमोऽभगवते मणिभद्राद्यष्ट क्षेत्रपाल देवाय जैनशासन वत्सलाय भव्यजन हितंकराय, दुष्टजन प्रमर्दनाय, हिली–हिली, खिली–खिली, बालय–बालय जलगंधाक्षतपुष्पचरुधूपदीपफलादीन्, गृण्ह–गृण्ह, मुंच–मुंच, भयंकररूपाय, दर–दर, दुरु–दुरु, आँ झौं अजपाल देवराज नागपाश, बंध–बंध ह्म्ल्व्र्यूं, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा (देवदत्त नामधेयस्य) सर्वग्रहानाकर्षय आकर्षय, शोभय–शोभय, घे घे ह्रूँ फट् स्वाहाः॥

फल– इस मंत्र का जाप करने से भूत–प्रेत–शाकिनी आदि समस्त ऊपरी बाधा एवं दूसरों के द्वारा किये गये खोटे मंत्रों का दुष्प्रभाव नहीं होता है और नवग्रह संबंधी बाधा भी समाप्त होती है।

तृतीय खण्ड

श्री पद्मावती पूजन

स्थापना (गीता छंद)

हंसासनी जिनशासनी पद्मासनी पद्मावती।
श्री पार्श्वजिन चरणासनी कमलासिनी पद्मावती॥
श्री पार्श्वप्रभु के पार्श्व में तुमने वरा सम्यक्त्व को।
हम पूजते माँ आपके सम्यक्त्वमय व्यक्तित्व को॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री प्रशस्त वर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहन-सचिह्न सपरिवार हे पद्मावती देवी ! अत्र ऐहि-ऐहि संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

पद्मावती को पद्म सरोवर का जल चढ़ा।
जीवन में सबके सौख्य सरोवर का जल बढ़ा॥
पद्मावती माँ हमको संकटों से तार दे॥
हे भगवती ! पद्मावती बिगड़ी सुधार दे॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पार्श्वनाथभक्त धरणेन्द्र भार्यायै श्री पद्मावती महादेव्यै जलं समर्पयामीति स्वाहा।

मेंहदी व महावर में चंदनादि मिलाके।
चरणों को रंगू लाल-लाल रंग खिलाके॥ पद्मावती...॥2॥

ॐ आं ..... चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

अक्षत स्वरूप रत्नमयी दिव्य आभरण।
माँ आपको चढ़ा सफल है तन व मन वचन॥ पद्मावती...॥3॥

ॐ आं ..... अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

पदपद्म में पद्मावती के पद्म सजाऐं।
बन धर्मपुत्र पद्मिनि मैया को रिझाऐं॥ पद्मावती...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पार्श्वनाथभक्त धरणेन्द्र भार्यायै श्री पद्मावती महादेव्यै पुष्पाणि समर्पयामीति स्वाहा।

हम आपके बच्चे हैं आप मात हमारी।
स्वीकार के मिठाई हरो रोग बीमारी।।
पद्मावती माँ हमको संकटों से तार दे।।
हे भगवती ! पद्मावती बिगड़ी सुधार दे।।5।।

ॐ आं ..... नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

संगीत संग आरती हे मात ! तिहारी।
वरदानी वर में गीतकला दीजिए न्यारी।। पद्मावती...।।6।।

ॐ आं ..... दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

ले धूप मात नाम जाप जो सदा करें।
वो भूत-प्रेत-व्यंतरों की आपदा हरें।। पद्मावती...।।7।।

ॐ आं ..... धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

हर भक्त के हृदय बसी तू भक्त वत्सला।
हम फल चढ़ा रहे हैं मात कीजिए भला।। पद्मावती...।।8।।

ॐ आं ..... फलं समर्पयामीति स्वाहा।

जिसने बिठाया सिर पे प्रभु पार्श्वनाथ को।
हम अर्घ चढ़ायें उसी जगपूज्य मात को।। पद्मावती...।।9।।

ॐ आं ..... अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

माँ दिव्य वस्त्र आभरण से आपको सजा।
हर भक्त आपका महान भाग्य से सजा ।। पद्मावती...।।10।।

ॐ आं ..... वस्त्राभरणं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- पद्मरागमणि से सजा, कलश पद्म[1] आकार।
पद्मरूप पद्मिनि तुझे, भेंट शांति की धार।।

शांतये शांतिधारा।

1. कमल।

पद्मादिक बहु पुष्प से, हस्त पद्म सज जाय।
पुष्पाञ्जलि कर भक्त का, भाग्य पद्म सज जाय॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पदमावती देव्यै नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा– प्रिया देव धरणेन्द्र की, सर्व लोकप्रिय आप।
हम उसकी जयमाल के, गायें सुर आलाप॥

(चौपाई)

पार्श्वनाथ की चरण पुजारी, जिनशासन यक्षी माँ न्यारी।
श्री धरणेन्द्र प्रिया सुकुमारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥1॥

पद्म पुष्प सम मुखड़े वाली, पद्म पुष्प पर बसने वाली।
हृदय पद्म की मूरत न्यारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥2॥

पारस का रस पीने वाली, माताओं में मात निराली।
हम बच्चे तुझ पर बलिहारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥3॥

पारस का उपसर्ग मिटाया, मुनियों का संकट कटवाया।
सतियों की रक्षक महतारी[1], जय माँ पद्मावती हमारी॥4॥

मदनसुंदरी इक महारानी, जिसका जिनरथ रोके मानी।
तूने ही तब नैया तारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥5॥

पात्र केसरी जिनमत द्वेषी, तूने सपना दिया हितैषी।
अहिक्षेत्र नगरी वो प्यारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥6॥

श्लोक लिखा प्रभु फण पर प्यारा, पात्र केसरी पढ़कर हारा।
बना तभी वो मुनिपद धारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥7॥

1. माता।

जो जिनेन्द्र प्रभु का मतवाला, चाहे निर्धन या धन वाला।
तूने उसकी अरज न टारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥8॥

जिनको रोगों ने आ घेरा, रहे वेदना शाम सवेरा।
तूने उसकी हरी बीमारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥9॥

जिस माता की सूनी गोदी, उसको तू देती कुल ज्योती।
माता तू माँ पद दातारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥10॥

जो तेरा श्रृंगार करायें, मैया तेरी गोद भराये।
सदा सुहागन हो वह नारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥11॥

सज्जन पर तू प्रेम लुटायें, दुर्जन को सन्मार्ग बतायें।
ममता स्नेह दया भंडारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥12॥

दुर्घटना पर दुर्घटना हो, मुख पर बस दुखड़ा रटना हो।
तब तू ही इक संकटहारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥13॥

शुक्रवार संपत व्रत न्यारा, जिसने भी उसको स्वीकारा।
उसे मात देती खुशहाली, जय माँ पद्मावती हमारी॥14॥

चरण चंद्र में मुझे बसाओ, हृदय चंद्र सबके बस जाओ।
चरण चंद्र तेरे सुखकारी, जय माँ पद्मावती हमारी॥15॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री प्रशस्त सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहन-सचिह्न सपरिवार हे पद्मावती ! महादेव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- वरदानी का वर मिले, यही हमारी आस।
मात पद्मिके भक्त के, कर दो विघ्न विनाश॥
'चंद्रगुप्त' कहता तुम्हें, तुम समकित गुण खान।
जो तुमको पूजे भजे, उसका हो उत्थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री घंटाकर्ण यक्ष पूजन

स्थापना (गीता छंद)

सर्वज्ञ जिन के भक्त में, श्री यक्ष घंटाकर्ण हैं।
जिनवचन से पावन हुए, जिनके मनोहर कर्ण है॥
आह्वान घंटाकर्ण का, घन-घन घनन घंटा बजा।
आ जाइये हे यक्ष ! तुम, जिनधर्म का डंका बजा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिह्न सपरिवार हे घंटाकर्ण यक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इति आह्वाननम् - स्थापनं - सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

जीवन का अस्तित्व नहीं जल के बिना।
जल अर्पण कर पायें हम सुख अनगिना॥
यक्षराज श्री घंटाकर्ण जहाँ रहे।
सुख-वैभव खुशहाली धर्म वहाँ रहे॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

चंद[1] समय का चंदन लेप महान है।
चंद समय में मिलता सुख वरदान है॥ यक्षराज...॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

यक्षराज तुम अक्षय सुख को चाहते।
अतः अक्षतार्चन करना हम चाहते॥ यक्षराज...॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

पुष्प सरीखा कोमल मन है आपका।
पुष्प चढ़ा विष हरूँ पाप के साँप का॥ यक्षराज...॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय पुष्पाणि समर्पयामीति स्वाहा।

श्वेत श्याम तिल की तिलपट्टी लाइये।
चढ़ा यक्ष को दुःख से छुट्टी पाइये॥ यक्षराज...॥5॥

1. थोड़ा (कम)।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दीपथाल में रूनझुन रूनझुन झालरें।
यक्ष आरती करो बजा कर ताल रे।।
यक्षराज श्री घंटाकर्ण जहाँ रहे।
सुख-वैभव खुशहाली धर्म वहाँ रहे।।6।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

यक्षभूप को धूप चढ़ा मन खुश हुआ।
पाप ताप संतापों पर अंकुश हुआ।। यक्षराज...।।7।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

फल गुच्छों के तोरण द्वार चढ़ायके।
सुख हो दुख रण में जय ध्वज फहरायके।। यक्षराज...।।8।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय फलं समर्पयामीति स्वाहा।

यक्षराज को अर्घ चढ़ायें झूमके।
हम सब गरबा घूमर नाचें घूम के।। यक्षराज...।।9।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

सुंदर वस्त्राभूषण अर्पित आपको।
हरलो बाबा हम सबके संताप को।। यक्षराज...।।10।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण यक्षाय वस्त्राभरणं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- विश्वशांति की कामना, शांतिधार के साथ।
पुष्पाञ्जलि हम कर रहे, जैसे हो बरसात।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घंटाकर्ण महावीराय नमोस्तुते मम सर्वकार्य सिद्धिं कुरु-कुरु सर्व रोगोपद्रव शांतिं कुरु-कुरु ठः ठः ठः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- जिनमत की जो जय ध्वजा, फहराते दिन रात।
घंटाकर्ण सुयक्ष से, सुधरे बिगड़ी बात।।

(नरेन्द्र छंद)

जय जय घंटाकर्ण यक्ष की, जय जिनशासन रक्षक की।
जय जय जय मुनिभक्त यक्ष की, जय संस्कृति संरक्षक की॥
घंटाकर्ण महावीरा का, जिनआगम में नाम बड़ा।
सम्यग्दर्शन सहित आपका, नाम सरीखा काम बड़ा॥1॥
समोशरण के द्वादशगण में, व्यंतर देवों का गण है।
उसमें जा सम्यक्त्व नीर से, तुमने धोया निज मन है॥
यक्षराज तुम सम्मानित हो, समदृष्टि जन के द्वारा।
पूजे जाते वस्त्र तेल गुड़, पुष्प सिंदूरादिक द्वारा॥2॥
आप स्वयं को भक्त बताते, भगवन नहीं बताते हो।
इस कारण मुनियों के द्वारा, सम्यग्दृष्टि कहाते हो॥
गुणपूजक इस जैनधर्म में, पूजा की जाती गुण की।
अतः करें हम पूजा अर्चा, देव आपके सद्गुण की॥3॥
रोगों के दुर्योगों द्वारा, लोगों को जब दुःख होता।
शासन को कर[1] पे कर देकर, जन मानस जब जब रोता।
या फिर मुनि सति धर्म राष्ट्र पर, जब जब अत्याचार मचे।
तब तब घंटाकर्ण यक्ष का, क्रांति बिगुल साकार बजे॥4॥
हे यक्षेश्वर ! हमने तुमको, केवल इस कारण पूजा।
क्योंकि इस जिन धर्म अलावा, धर्म आपका ना दूजा॥
'चंद्रगुप्त' की मनोकामना, घंटाकर्ण करो पूरण।
जिनशासन संवर्द्धन के हित, कर दो तन मन धन अर्पण॥5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहन-सचिह्न सपरिवार घंटाकर्ण यक्षाय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- सुर असुरों से मान्य हैं, घंटाकर्ण महान्।
धर्म प्रीत रख देव तुम, रखो भक्त का ध्यान॥

इत्याशीर्वादः दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. टैक्स।

श्री मणिभद्र क्षेत्रपाल पूजा

स्थापना (हरिगीता छंद)

श्री क्षेत्रपाल महान जिनका, नाम श्री मणिभद्र है।
सम्यक्त्व मणि से दिव्य जिनकी आतमा अतिभद्र है॥
मणिभद्र को मणि पुष्प ले, सब भक्त आज पुकारिये।
दुःख शोक संकट विघ्न से, मणिभद्र देव उबारिये॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिह्न सपरिवार हे मणिभद्र क्षेत्रपाल ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इति आह्वाननम् - स्थापनं - सन्निधिकरणम्।

(छंद-मोतियादाम) (तर्ज-मारने वाला है भगवान....)

चढ़ाकर तीर्थक्षेत्र का नीर, भजे हम क्षेत्रपाल गुणधीर।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान॥1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

कषायें करली जिनने मंद, चढ़ाओ इनको इत्र सुगंध।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान॥2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

अक्षतार्चन में मणिमय हार, चढ़ाकर मिट जाता दुःख भार।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान॥3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय अक्षतान् समर्पयामीति स्वाहा।

क्षेत्ररक्षक को पुष्प चढ़ाय, खुशी से हृदय पुष्प खिल जाय।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय पुष्पाणि समर्पयामीति स्वाहा।

समर्पित मधुर मधुर बहु भोग[1], हरो मधुमेह आदि सब रोग।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान॥5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दीप में बाती नवरंगीन, करूँ आरती बजाकर बीन।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान॥6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

1. भोजन (व्यंजन)

धूप के संग चढ़ा कर्पूर, मिले हम सबको सुख भरपूर॥
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान ॥7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

फलों से सजी धजी ये थाल, चढ़ाकर हम हो मालामाल।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान ॥8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय फलं समर्पयामीति स्वाहा।

द्रव्य ये सुंदर आठों आठ, चढ़ाकर मिले जगत का ठाठ।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान ॥9॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

आपका कर सुंदर श्रृंगार, सुखी हो हम सबका परिवार।
जयति जय-जय मणिभद्र महान, क्षेत्रपालों में मणि गुणवान ॥10॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्र क्षेत्रपालाय दिव्य वस्त्राभरणं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिधार के बाद में, पुष्पाञ्जलि बरसाय।
बाबा आप प्रसन्न हो, यही हमारे भाव॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः मणिभद्र क्षेत्रपालाय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- क्षेत्रपाल मणिभद्र की, गाकर के जयमाल।
जयमाला के रूप में, अर्पित हैं मणिमाल॥

(त्रोटक)

जय श्री मणिभद्र अधर्म हरो, जय श्री मणिभद्र अशर्म[1] हरो।
दुःख संकट क्लेश विनष्ट करो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥1॥
जय श्री मणिभद्र पिता सम हो, जय देव आप जननी सम हो।
सिर पे हमरे द्वय हस्त धरो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥2॥

1. दुःख

जय श्री मणिभद्र सुधर्म धनी, जय श्री मणिभद्र अधर्म हनी।
मत वाद-विवाद कुपंथ हरो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥3॥
तुम दीन दुःखी जनपालक हो, मुनि के उपसर्ग निवारक हो।
मुनिपूजक को दुःख मुक्त करो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥4॥
शुचि दर्शन ज्ञान धनी तुम हो, नय भंग प्रमाण गुणी तुम हो।
सतियों पर कष्ट विनष्ट करो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥5॥
तुम शासनदेव प्रजापति हो, बहु ऋद्धि धनी व कृपापति हो।
सब आधि उपाधि अरिष्ट हरो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥6॥
तुम श्री जिनधर्म प्रचारक हो, करुणामय उच्च विचारक हो।
करुणा हम पे हर वक्त करो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥7॥
तुम आप्त उपासक देव अहो, हम पे खुश आप सदैव रहो॥
रवि आदिक नौ ग्रहरिष्ट हरो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥8॥
धन निर्धन को सुत[1] बांझन[2] को, खुशहाल निहाल करो हमको।
सब रोग मरी कफ कुष्ठ हरो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥9॥
सुख में दुख में तुम साथ रहो, जग के हित की शुभ बात कहो।
हमको सुख से तुम तुष्ट करो, मणिभद्र सभी दुःख कष्ट हरो॥10॥
जग में तुम भक्त दिवाकर हो, तुम 'चंद्र' समान प्रभाकर हो।
दुख क्लेश अशांति समस्त हरो, मणिभद्र सभी दुख कष्ट हरो॥11॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिह्न सपरिवार मणिभद्र क्षेत्रपालाय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा- तुम हो शासन देवता, जिनभक्तों के प्राण।
'चंद्रगुप्त' ने आपको, माना सद्गुण खान॥

इत्याशीर्वादः दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

---

1. पुत्र, 2. संतानरहित स्त्री।

चतुर्थ खण्ड (आरती, चालीसा, स्तोत्र आदि)

श्री पंच परमेष्ठी आरती

रचयित्री -ग.आ. राजश्री माताजी

ॐ जय केवलज्ञानी, हो स्वामी जय केवलज्ञानी।
आरती करते सब मिल, बन जायें ज्ञानी।। ॐ जय...
अतिशय चौंतीस के तुम धारी, हित उपदेशी महान्। हो स्वामी हित...
वीतराग अरिहंत प्रभुजी-2, छोड़ूँ मिथ्याज्ञान ।। ॐ जय...
अष्टकर्म से रहित जिनेश्वर, गुण अनंत धारी। हो स्वामी गुण...
ज्ञाता दृष्टा सिद्ध प्रभुजी-2, वर ली शिवनारी ।। ॐ जय...
रत्नत्रय के धारी गुरुवर, श्रमण संघ नायक। हो स्वामी श्रमण...
पंचाचारी ऋषिवर-2, हो मंगल दायक ।। ॐ जय...
मोह तिमिर को हरने वाले, मुनियों के पाठक। हो स्वामी मुनियों...
ज्ञान किरण विकसाते-2, बोधि ज्ञान दायक ।। ॐ जय...
मुनिव्रतों को धारण करके, करते आतम ध्यान। हो स्वामी करते...
सुर-नर-किन्नर ध्यावे-2, गाते तव यशगान ।। ॐ जय...
विषय विकार मिटावो भगवन्, शरण पड़ा तेरी। हो स्वामी शरण...
'राज' मुक्ति को पावे-2, छूटे भव फेरी ।। ॐ जय...

श्री कुन्थुगिरी पार्श्वनाथ की आरती

रचनाकार-मुनि चन्द्रगुप्त

(तर्ज - माईन-माईन....)

कुंथुगिरी के पारस बाबा, कलिकुण्ड सांवरियाँ।
चम-चम दीप जलाकर प्रभु की, गायें हम आरतियाँ।।
बोलो पार्श्व प्रभु की जय, बोलो कुंथुगिरी की जय।
वामा माँ के गर्भ पली जब, पारस रूपी ज्योति।
तब अंबर से इस धरती पर, बरसे हीरे-मोती।।
देव-देवियाँ नृत्य रचायें, बजा ढ़ोल झाँझरियाँ। चम-चम...

पारस जन्में नगर बनारस, पौष वदी ग्यारस को।
दीक्षा ले मुनिराज बने प्रभु, पीने आतम रस को॥
हरने को उपसर्ग आपका, आई पद्मा मैया। चम-चम...
हे शिवगामी ! पारस प्रभु तुम, कुंथुगिरी में राजे॥
आरतियाँ गा हम भक्तों का, मनवा झूमे नाचे।
पिहु-पिहु बोले मोर यहाँ और, कुह-कुह-कुह कोयलियाँ। चम-चम...
कुंथुसागर गुरु हमारे, ये तीरथ बनवाये।
जहाँ पार्श्व प्रभुवर से सब कुछ, बिन माँगे मिल जाये॥
'चंद्रगुप्त' पारस बाबा की, गाता है आरतियाँ॥ चम-चम...

ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव की आरती

रचनाकार-मुनि सुयशगुप्त

(तर्ज - माईन-माईन....)

मणिमय घृत के दीप सजाकर, मंगल वाद्य बजायें।
कुन्थुसागर गुरुवर की सब, आरती भव्य रचायें॥
गुरुवर के चरणों में नमन-2
बाठेड़ा के रेवाचंदजी, विद्वत पिता तुम्हारे।
माता सोहनदेवी के तुम, बाल कन्हैया प्यारे॥
बाल्यकाल की नटखट लीला, देख सभी हर्षायें॥
कुन्थुसागर गुरुवर....
बाल उम्र में धर्म मार्ग पर, चलना उनको भाया।
महावीरकीर्ति गुरुवर से, मुनिदीक्षा को पाया॥
यंत्र-तंत्र-मंत्रों के ज्ञाता, धर्म ध्वजा फहराये।
कुन्थुसागर गुरुवर....
गुरुवर तुम वात्सल्य दिवाकर, कुन्थुगिरी प्रणेता।
शरणागत के रक्षक तुम हो, नंदी संघ के नेता॥
गुप्ति नंदन 'सुयशगुप्त' भी तुम चरणों को ध्याये।
कुन्थुसागर गुरुवर....

आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव की आरती

रचनाकार-मुनि चन्द्रगुप्त

(तर्ज : दिल जाने जिगर...)

गुरुदेव गुप्तिनंदि की जयकार करो रे,
आरती करो रे सभी आरती करो।
आशीष दे गुरुवर ये झोली भरो रे,
आरती करो रे सभी आरती करो॥
गुरुवर हमारे ये कविता बनाते।
पूजा विधानों की रचना रचाते॥
सबको जगायें, सबको पढ़ायें-2
ज्ञानी गुरुवर से ज्ञान वरो रे॥ आरती करो...
हमने सजाई है दीपों की थाली।
गुरुवर की मूरत है सबसे निराली॥
उसको निहारूँ, मन में बसाऊँ-2
गुरुवर के चरणों में ध्यान धरो रे॥ आरती करो...
ढ़ोलक बजायें और झाँझर बजायें।
दीपों की थाली ले भक्ति रचाये॥
गुणगान गायें, बाजे बजायें-2
गुरुदेव 'चन्द्र' को भी धन्य करो रे॥ आरती करो...

श्री क्षेत्रपाल की आरती

रचनाकार-ब्र. कपिल (वर्तमान में मुनि चन्द्रगुप्त)

(तर्ज-जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा)

क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल क्षेत्रपाल राजा।
आरती करें तिहारी हम बजा के बाजा॥
क्षेत्रपाल देव को, जिनदेव प्यारे।
हमको इसलिए ही, क्षेत्रपाल देव प्यारे॥
आप उनके भक्त जो भवोदधि जिहाजा। आरती....

एक हाथ में त्रिशूल, दूजे में भाला।
तीजे में डमरू और, चौथा फूल वाला॥
अस्त्र-शस्त्र धरते धर्म रक्षा के काजा। आरती....
सम्यक्त्ववान आप भक्तों के त्राता।
दीनों को सुख व निर्धनों को धन प्रदाता॥
आपकी कृपा का छत्र भक्त पे विराजा। आरती....
दुर्जन सुधार आप सज्जन को तारे।
जिनधर्मी जन के देव आप ही सहारे॥
पापी को कहते पाप मार्ग में तू ना जा। आरती....
डाकिन पिशाचिन व भूत-प्रेत बाधा।
बाबा प्रसन्न हो तो हो नहीं ये बाधा॥
भक्त 'कपिल' के हो आप प्राणप्रिय राजा। आरती....

जिनशासन भक्त धरणेन्द्र देव की आरती

(तर्ज : म्हारा हिवड़ा में ...)

हम आरती गायें आज, ततथइया थइया।
सब मिलके बजाओ साज, ढोलक बांसुरिया।
समोशरण के शासन देवा पद्मावती के सैंया...हम आरती...
तुम पार्श्वप्रभु के रक्षक हो, धरणेन्द्र देव उपकारी हो-होऽऽ तुम...
कच्छप आसन पर शोभ रहे, तुम चार भुजा के धारी हो।
तेरे चरणों में हम आये, पाने तेरी छैया-हम आरती....
नवकार सुना पारस प्रभु से, पारस प्रभु के सेवक बनने। होऽऽ नवकार..
उपकार मान पारस प्रभु का, उपसर्ग मिटाया था तुमने।
फण फैलाया था तुमने और हर्षे पद्मा मैया-हम आरती...
जिन भक्तों की रक्षा करते, दु:खियों के दु:ख हर लेते हो। होऽऽजिन...
करुणासागर धरणेन्द्र देव, इच्छा पूरी कर देते हो।
थाल सजाकर तुम्हे चढ़ायें, 'अम्मु' खीर सिवैया-हम आरती...

माँ पद्मावती की आरती

रचनाकार-ब्र. कपिल (वर्तमान में मुनि चन्द्रगुप्त)

(तर्ज : 1. इंजन की सीटी... 2. सगला चालो रे....)

भक्तों आओ रे-2 पद्मावती माँ की आरती बोले-2
ढ़ोल मंजीरों के संग मेरा मन डोले-2
पार्श्वप्रभु की चरण सेविका-2, श्री धरणेन्द्र प्रिया हो।
संकट दूर किये जिसने भी, तेरा ध्यान किया हो॥ भक्तों...
पार्श्व प्रभु के उपसर्गों का-2, नाश किया था तुमने।
मेरे उपसर्गों का क्षय हो, शीश झुकाया हमने॥ भक्तों...
भक्तों की तुम भाग्य विधाता-2, दुखियों की दु:खहारी।
दो आशीष तुम्हारा हमको, आये शरण तिहारी ॥ भक्तों...
मुक्तिमार्ग से प्रीत मुझे है-2, रक्षा करो हमारी।
कर्मों से संघर्ष करूँ मैं, शक्ति दो मनहारी॥ भक्तों...
भवनलोक में तेरी कीर्ति-2, है यशगान तुम्हारा।
'कपिल' तुम्हारी गाथा का माँ, कर न सके विस्तारा॥ भक्तों...

श्री कुंथुगिरी पार्श्वनाथ चालीसा

रचनाकार - मुनि चन्द्रगुप्त

दोहा- सिद्ध अनंतानंत को, नमन अनंतों बार।
नवदेवों के चरण में, वंदन बारम्बार॥
कुंथुगिरी में राजते, पारसनाथ विशाल।
भक्त भक्ति से गा रहे, चालीसे की चाल॥

(चौपाई)

जय-जय-जय सांवरियां बाबा, जय-जय मन मोहनियाँ बाबा।
जय-जय कुंथुगिरी के बाबा, जय-जय कुंथु गुरु के बाबा॥1॥
नाम आपका पारस देवा, तुम हो सब देवों के देवा।
करते जो प्रभु तेरी सेवा, पाते वो सब सुख का मेवा॥2॥
अश्वसेन को पिता बनाया, वामा का दामन महकाया।
नगर बनारस का रस मीठा, जो पारस प्रभु का रस पीता॥3॥

इक दिन गज पर करी सवारी, देखी वन की लीला न्यारी।
वहाँ एक तापस को देखा, जो की नाना था प्रभुजी का॥4॥
जो पंचाग्नि तप तपता था, खोटे मंत्रों को जपता था।
जला अशोधी लकड़ी गीली, करता था हठ बड़ी हठीली॥5॥
अवधिज्ञान प्रभु तभी लगाये, पापी को समझाने जाये।
प्रभु बोले ओ तापस बाबा, तू क्यों नाग जलावन लागा॥6॥
हुआ तापसी आग बबूला, अपने नाती को भी भूला।
जैसे ही लकड़ी को चीरा, देखी नाग युगल की पीरा[1]॥7॥
जिनके सारे अंग जले थे, फिर भी प्राण नहीं निकले थे।
क्योंकि पारस से मिलना था, णमोकार प्रभु से सुनना था॥8॥
प्रभु ने श्री नवकार सुनाया, यक्ष-यक्षिणी उन्हें बनाया।
नाग बना धरणेन्द्र निराला, नागिन पद्मावती विशाला॥9॥
तापस मरकर दुर्गति पाये, कालासुर शंबर बन जाये।
इक दिन प्रभुजी बने विरागी, महाश्रमण बनते बड़भागी॥10॥
जब पारस प्रभु ध्यान लगाये, कालासुर उपसर्ग रचाये।
अहिपति[2] वा पद्मा माँ आये, प्रभुवर का उपसर्ग नशाये॥11॥
प्रभु को केवलज्ञान हुआ था, क्रम से मोक्ष प्रयाण हुआ था।
ऐसे ही प्रभु पारस बाबा, कुंथुगिरी तीरथ के राजा॥12॥
कुंथुसिंधु गुरुदेव हमारे, कुंथुगिरी के प्रेरक न्यारे।
गुरुवर को इक सपना आया, जो पद्मा माँ ने दिखलाया॥13॥
सपने में ये तीर्थ दिखा था, चंद्राकार पहाड़ दिखा था।
फिर जब गुरु कुंथुगिरि आये, तब पद्मा माँ पथ दिखलाये॥14॥
श्री कलिकुंड सुयंत्र बनाया, उस पर कमलासन गढ़वाया।
उस पर प्रभु तुमको बैठाया, रूप तुम्हारा सबको भाया॥15॥
यहाँ प्राकृतिक भव्य छटाऐं, मोर मोरनी नृत्य रचाऐं।
पिहु-पिहु शोर करें जो भारी, कुहु-कुहु कोयल गायें भारी॥16॥
पंचामृत धारा मनहारी, प्रभु पर करते नर वा नारी।
यहाँ बनी मंदिर की माला, बना शिखर सम्मेद निराला॥17॥

1. कष्ट, 2. धरणेन्द्र।

बाबा तुम हो श्याम सलौने, तुमसे कष्ट हरे भक्तों ने।
भगवन सूनी गोद भरायें, बहरे को सुनना सिखलायें॥18॥
अंधों की तू अंखियाँ खोले, गूँगा तुम दर मीठा बोले।
निर्धन को तुम धन देते हो, दुःखियों के दुःख हर लेते हो॥19॥
बाबा तुम हो भोले-भाले, भूत-प्रेत दुःख हरने वाले।
एक तरफ अहिपति की प्रतिमा, एक तरफ प्रभु के पद्मा माँ॥20॥
हे प्रभु ! हम कुंथुगिरी आये, आकर सारे कष्ट नशायें।
'चन्द्रगुप्त' गायें चालीसा, हो प्रसन्न पारस जगदीशा॥21॥

दोहा- कुंथुगिरी के पार्श्व का, चालीसा जो गाय।
भक्ति से उस भक्त को, इच्छित फल मिल जाय॥
सर्व रोग दुःख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख संपदा, बने धर्ममय श्वांस॥

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री क्षेत्रपाल चालीसा

रचनाकार-आर्यिका आस्थाश्री माताजी

दोहा- चौबीसों भगवान के, शासन रक्षक देव।
जिनशासन के भक्त ये, रक्षा करे सदैव॥
चालीसा भूपाल का, पढ़ो सुनो मन लाय।
कर इनका सम्मान हम, मनवांछित फल पाय॥

चौपाई

क्षेत्रपाल ये बड़े निराले, धर्म प्रभाव बढ़ाने वाले।
हर तीर्थंकर के ये होते, मोह नाश सम्यकरत होते॥1॥
प्रभु के समवशरण में बैठे, निज संसार भ्रमण को मेटे।
ये सम्यक्दृष्टि कहलाते, कभी किसी को नहीं सताते॥2॥
मुनियों के उपसर्ग मिटाते, जैनधर्म की शान बढ़ाते।
सतियों का ये शील बचाते, जैनधर्म का यश फैलाते॥3॥

मुनि श्रुतसागर ध्यान लगाये, सब मंत्री तलवार चलाये।
क्षेत्रपाल रक्षक बन आवे, मंत्री नहीं वहाँ हिल पावे॥4॥
वृथा दोष नीली पे आये, नगर द्वार किलित हो जाये।
नीली आकर पैर लगाये, क्षेत्रपाल महिमा दिखलाये॥5॥
सती अंजना वन में जाती, विपदा उस पर भारी आती।
क्षेत्रपाल अष्टापद होके, दुष्ट सिंह को तत्क्षण रोके॥6॥
इनको जो यज्ञांश चढ़ावे, अपने संकट कष्ट मिटावे।
तेल चना गुड़ माल चढ़ाओ, इत्र वस्त्र आभूषण लाओ॥7॥
क्षेत्रपाल ये जहाँ विराजे, उस मंदिर में बजते बाजे।
अतिशय प्रभु का ये दिखलाते, सर्व उपद्रव दूर भगाते॥8॥
अतिशय क्षेत्र व सिद्धक्षेत्र हो, चाहे कोई तीर्थ क्षेत्र हो।
मध्यलोक में वास तुम्हारा, भक्तों ने मिल तुम्हें पुकारा॥9॥
हर उत्सव में तुम्हें बुलावे, तुमको सब मिल अर्घ चढ़ावे।
आने वाले विघ्न नशाओ, हम सबके तुम कष्ट मिटाओ॥10॥
तन सिंदुरी कर में डमरु, छम-छम करते बाजे घुँघरुँ।
स्वर्ण मुकुट मस्तक की शोभा, तुमने भक्तों का मन लोभा॥11॥
कुंडल रत्नहार पहनाये, मणिमय बाजूबंद सजाये।
रूप तुम्हारा सुन्दर प्यारा, वाहन श्वान तिहारा न्यारा॥12॥
पहना स्वर्णिम रजत जनेऊँ, यज्ञ दान नित तुमको देऊँ।
कंकण केयूर तिलक लगाऊँ, कमर करधनी पायल लाऊँ॥13॥
प्रभुजी से जो प्रीत लगाते, प्रभु को अपना कष्ट सुनाते।
उन सबके ये कष्ट मिटाते, गिरते को ये पुनः उठाते॥14॥
इनसे सभी बलायें डरती, इनको देख दूर वो भगती।
अला-बला सारी भग जाती, डाकिन हाकिन नहीं सताती॥15॥
प्रेत पिशाचिन जिसे सतावे, व्यन्तर बाधा जिन्हें रुलावे।
काकिन शाकिन कोई लागे, क्षेत्रपाल के सन्मुख भागे॥16॥
भूत व्याधि जिसको लग जावे, उसकी सुध बुध सब खो जावे।
रोवे कभी-कभी चिल्लावे, तन मन अति चंचल हो जावे॥17॥
चऊदिश से विपदा जब आवे, अर्थहीन प्राणी दुःख पावे।
क्षेत्रपाल मेटे दुःख सारे, धन वैभव दे कष्ट निवारे॥18॥

क्षेत्रपाल के मंदिर देखो, उनमें अतिशय हुये अनेको।
तेल दीप जो नित्य जलावे, उसके दुःख के दिन फिर जावे॥19॥
कीर्त्तन से इच्छित फल पावे, उसके दुःख के दिन फिर जावे।
दशाहीन को दिशा दिखावे, बिगड़े काम सभी बन जावे॥20॥
साधर्मी का साथ निभाते, सर्व उपद्रव दूर भगाते।
'आस्था' से जो इनको ध्याते, सुख-शांति खुशहाली पाते॥21॥

दोहा- चालीसा भूपाल का, चालीस दिन कर पाठ।
करो कराओ भक्ति से, दीप धूप के साथ॥
सर्व रोग दुःख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-सम्पदा, बने धर्ममय श्वांस॥

चतुर्विंशति तीर्थंकराणां षण्णवति क्षेत्रपालानां नामांकित स्तोत्र लिख्यते-

वंदेहं सन्मति वीरं महासुमति दायकं।
क्षेत्रपालं विधि वक्ष्ये भव्यानां विघ्न हानये॥1॥
जयो विजयो नामत्ति स्तोष्यथपराजितः।
मणिभद्र श्चतुर्थोऽपि यक्षराट वृषभस्य च॥2॥
क्षेमभद्रो क्षांतिभद्रो श्री भद्रः शांति भद्रकः।
अजित स्याजिनेन्द्रस्य सेवका यक्षकाः श्चतुः॥3॥
वीरभद्रो बलिभद्रो गुणभद्रः तृतीयकः।
चतुर्थोऽयं चंद्रभाख्य संभवस्य तुसेवकाः॥4॥
महाभद्रो भद्रभद्रः शतभद्रः तृतीयकः।
दान भद्रश्चतुर्थोऽपि अभिनंदन सुसेवकाः॥5॥
कल्याणादौ तथा चंद्रः महाचंद्र द्वितीयकः।
पद्चंद्रो नयचंद्रः सुमते नित्य सेवकाः॥6॥
कलाचंद्रः कल्पचंद्रः तृतीयक कुमुताशशि।
चतुर्थः कुमुदचंद्रः यक्षः पद्मप्रभस्यच॥7॥
विद्याचंद्रो गुणचंद्रः खेमचंद्रस्तृतीयकः।
चतुर्थो विनयचंद्रः श्री सुपार्श्वस्य यक्षकाः॥8॥
सोमकांति रविकांतौ शुभ्रकांति स्तृतीयकः।
हेमकांति चतुर्थोऽपि चंद्रप्रभस्य सेवकाः॥9॥

वज्रकांति वीरकांतो विष्णुकांति प्रसिद्धभाक् ।
चतुर्थो चंद्रकान्तार पुष्पदंतस्य वंदिकाः ॥10॥
शतवीर्यो महावीर्यो बलवीर्योऽपि कीर्तिभाक् ।
शीतलस्य महायक्षाः कथितागण नायकैः ॥11॥
तीर्थरुचिः भावरुचिः भव्यरुचि स्तृतीयकः ।
शांतिरुचिश्चतुर्थोऽपिश्रेयसतीर्थस्य द्वारपाः ॥12॥
लब्धिरूचिस्तत्त्वरुचिः सम्यक्त्व रुचिनामकः ।
तूर्य वाद्य रुचिः प्रोक्तः वासुपूजस्य सेवकाः ॥13॥
विमल भक्ति भावस्यो आराध्य रुचि नामकः ।
वैद्यावाद्यरुचिस्तूर्यः विमलस्यात्र यक्षकाः ॥14॥
स्वभाव परभावाख्यो अनोपम्य तृतीयकः ।
तूर्योस्यात्सहजानंद अनंतस्य तु सेवकाः ॥15॥
धर्मकरा धर्मकरी तृतीयंशान्त कर्म्मकः ।
चतुर्थो विनयोनाम धर्मनाथस्य सेवकाः ॥16॥
सिद्धिसेनः महासेनः लोकसेनस्तृतीयकः ।
चतुर्थोविनयकेतु शांतिनाथस्य क्षेत्रपा ॥17॥
यक्षनाथो भूमिनाथो देशनाथाख्य संमतः ।
चतुर्थोअवनिनाथाख्य कुंथुनाथस्य सेवकाः ॥18॥
गिरिग गव्हरनाथाख्यो नाथंति वरुणस्मृतः ।
तुरीय मैत्रनामाख्य अरनाथस्य द्वारपाः ॥19॥
क्षितिपोभवपतुनाम्नः क्षांतिपो यक्षंस्यतथा ।
मल्लिनाथ जिनेन्द्रस्य तुरीयः क्षेत्रपस्मृतः ॥20॥
तंद्रराज गुणराजो कल्याणाद्वय भव्यराट् ।
मुनिसुव्रतदेवस्य क्षेत्रपाल- स्मृतगणैः ॥21॥
कपिलः बटुको प्रोक्तो भैरवे भैरवस्तथा ।
मल्लाकाख्य चतुर्थोऽपि नमि देवस्य द्वारपाः ॥22॥
कौकल खगनामायत्रिनेत्राख्य कलिंगकः ।
समवसरणे प्रोक्ता नेमिनाथस्य क्षेत्रपाः ॥23॥

कीर्तिधर स्मृतिधरः विनयाख्य धरस्तथा।
अब्जाख्य तुरिय प्रोक्ताः पार्श्वनाथस्य सेवकाः॥24॥
कुमुदांजननामाख्यो चामरोऽपि तृतीयकं।
पुष्पदंताव्हपतुर्यः वर्द्धमानस्य सेवकाः॥25॥
एतेषण्णवति प्रोक्ताः क्षेत्रपा जिन शासने।
सनाथाः पुजिता नित्यं कुर्वंतु मंगलं नृणां॥26॥

॥ इति सम्पूर्ण॥ (साभार- मूलकृति से प्राप्त)

अथ श्री भैरव ध्यानमंत्रः

भैरवः पातुमूर्धानां शिखायां बटुकस्तथा।
शिखाग्रं पातु चंद्र त्वं ललाटं भीम दर्शनाः॥
भ्रूमौ पातु महाशूरो भ्रूमध्यंतु दिगम्बरः।
नेत्रे भूताश्रयः पातु कर्णौमें भूतनायकः॥1॥
नासिकां पातु गंधात्मा मुखं पातु सुरेश्वरः।
तालुं पायादगण श्रेष्ठो गंडौ पातु महाबलः॥
ओष्ठं पायाद्यज्ञ भोक्ता जिह्वां पातु लसात्मकः।
चिबुकं पातु सिद्धेशः कंठं विषधरोऽवतु॥2॥
स्कंधौ पातु वृषस्कंधः श्रवणो पातु शात्रवं।
अपराजितो भुजौ पातु क्षेत्रज्ञः पातु में करौ॥
हृदयं क्षेत्रपालस्तु नाभिं रक्षतु क्षेत्रपः।
जठरं पातु शीतश्च कटि सर्वौघनाशनः॥3॥
गुह्यं पातु निधि श्रेष्ठो गुदं पात्व सुरांतकृत्।
अरु पादुमासूनूः जानुनि पातु भूतहत्॥
जंघे पातु जगन्नायो गुल्फ योः पात्वरिंदमा।
पादौ पायात् पद्मपादः सर्वांगं वटुकस्तथा॥4॥
आसितांगः पूर्व दिशां, आग्नेयां च उरुस्तथा।
पातुयाम्यां दिशोचंडो नैऋत्यां क्रोधनस्तथा॥
वारुण्यां भैरवोन्मत्तः वायव्यां च कपालितु।
भीषणोदि गुदीच्यां च ऐशाण्यां दिशी क्षेत्रपः॥5॥

ऊर्ध्वकेशो महाकेशो मध्यस्ताच्च दिगंबरः।
संध्ययोरु भयोश्चापि कपाली संवरोवतु॥
शैलारण्ये महादुर्गे पातु मां च धनुर्धरः।
शुनः पातुच मां शंभो स्थितेमां शंकरस्तथा॥6॥
मार्गे परशुहस्तश्च क्षेत्रपालश्च सर्वदा।
दिवसे प्रथमे यामे पातु मां भद्रनायकः॥
यामे दिनीये यज्ञांगो तृतीये प्रमथाधिपः।
विराद चतुर्थ यामेतु निशादौ चंद्रशेखरः॥7॥
सर्व पापहरं स्तोत्रं ! स्तोत्रव्यं भैरवाष्टकं
ब्रह्मराक्षसनाशं च ! व्याध्यपस्मारिनाशनं!॥8॥
अपुत्रो लभते पुत्रं ! निर्धनो धनवान् भवेत्
व्याधितो मुच्यते रोगी पठ्यमाने हि नित्यशः ! ॥9॥
त्रिकरण शुद्धिदैर्भव्यैः ! स्तोत्रमेऽतच्च भाक्तिकैः !
त्रिसंध्यं पठितं नित्यं। सर्वसिद्धिमवाप्नुवात्॥10॥

॥ इति भैरव ध्यान मंत्र सम्पूर्ण॥

श्री घंटाकर्ण स्तोत्र

(मनोकामना प्रीत्यर्थ प्रतिदिन 21 बार जपना)

ॐ घंटाकर्णे महावीरः सर्वव्याधि विनाशकः।
विस्फोटकभयं प्राप्ते रक्ष-रक्ष महाबलः॥1॥
यत्र त्वं तिष्ठते देव, लिखितोऽक्षर पंक्तिभिः।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वातपित्तकफोद्भवाः॥2॥
तत्र राजभयं नास्ति, यान्ति कर्णे जपात्यक्षम्।
शाकिनी भूतवेताला, राक्षसाः प्रभवन्ति न॥3॥
नाकाले मरणं तस्य न च सर्पेण दश्यते।
अग्निचौरभयं नास्ति ॐ ह्रीं श्रीं घंटाकर्ण।
नमोस्तुते ! ॐ नर वीर ! ठः ठः ठः स्वाहा !!

श्री क्षेत्रपाल शृंगार पाठ (गीत)

रचयित्री-ब्र. अलका

(तर्ज - हे दीनबंधु श्रीपति....)

तीर्थंकरों के भक्त देव क्षेत्रपाल जी।
अरिहंत सिद्ध भक्त देव क्षेत्रपाल जी॥
जिनवाणी माँ के भक्त देव क्षेत्रपाल जी।
मुनि आर्यिकादि भक्त देव क्षेत्रपाल जी॥
वस्त्राभरण मैं लाऊँ आज घूम-घूमके।
श्री क्षेत्रपाल को सजाऊँ झूम-झूमके॥1॥

मैं सर्वप्रथम पंचरंगी वस्त्र मँगाऊँ।
फिर पंच परावर्तनों के विघ्न नशाऊँ॥
पहनाऊँ धोती जो सजी हैं स्वर्ण गोट से।
बाबा तिराओ मुझको सर्व ऐब खोट से॥ वस्त्राभरण...॥2॥

पहनाऊँ देव ! तुमको वस्त्र उत्तरीय[1] मैं।
हे देव ! तुमसे पाऊँ सुफल वांछनीय मैं॥
लाऊँ जनेऊ स्वर्ण रजत रत्न से बनी।
हो उन्नति दिन दूनी और रात चौगुनी॥ वस्त्राभरण...॥3॥

चरणों में वा हथेली में रचाऊँ महावर।
ये हाथ जुड़े उनको ही जो श्रेष्ठ गुणागर॥
पाँवों में बाँध छमछमाते स्वर्ण घुँघरू।
जब आप साथ हो तो संकटों से क्यूँ डरूँ॥ वस्त्राभरण...॥4॥

घुँघरुँ से सजी करधनी सजाऊँ कमर में।
समझाना मोक्षपथ से भटक जाऊँ अगर मैं॥
मणियों से जड़े स्वर्ण के कड़े भी चढ़ाऊँ।
हाथों में हाथ थाम मित्रता को बढ़ाऊँ॥ वस्त्राभरण...॥5॥

1. ऊपर का वस्त्र (दुपट्टा)।

जो आपको चढ़ाऐं रत्न स्वर्ण अंगूठी।
उस भक्त की धन संपदा चोरों ने न लूटी॥
फिर आपकी बाजू को बाँध बाजूबंद से।
परिवार महके मेरा शांति की सुगंध से॥
वस्त्राभरण मैं लाऊँ आज घूम-घूमके।
श्री क्षेत्रपाल को सजाऊँ झूम-झूमके॥6॥

नवरत्न की कण्ठी सजा तुम्हारे कण्ठ[1] में।
संगीत की कला बसे हमारे कण्ठ में॥
नवरत्न माल लाऊँ जिसकी दिव्य नौ लड़ी।
फिर टूट जाय नवग्रहों के रिष्ट की कड़ी॥ वस्त्राभरण...॥7॥

कुंडल चढ़ाऊँ तुमको सूर्य चंद्र सरीखे।
जिन वच श्रवण का ढंग भक्त आपसे सीखे॥
कुम्कुम तिलक लगाऊँ, मैं उन्नत ललाट पे।
नवरत्न की बिंदी लगाऊँ छाँट छाँट के॥ वस्त्राभरण...॥8॥

पहनाऊँ सिर पे मुकुट जिसमें चमके नगीने।
साधन धरम व सुख के, मिले मुझको अनगिने॥
फिर अंत में जयमाल, दिव्य पुष्प से सजी।
पहनाने तुम्हें देखिये ये भीड़ हैं मची॥ वस्त्राभरण...॥9॥

हाथों में डमरु अस्त्र-शस्त्र आदि चढ़ाऊँ।
रक्षा की भावना से रक्षपाल को ध्याऊँ॥
जल आदि अष्ट द्रव्य मैं चढ़ाऊँ भक्ति से।
बलवान बनूँ आपके समान शक्ति से॥ वस्त्राभरण...॥10॥

तिलपट्टी श्वेत श्याम तिल की रोज चढ़ाऊँ।
मिष्ठान्न वा पकवान्न चढ़ा विघ्न नशाऊँ॥
भज तेल चना तिल व इत्र सिंदूरादि ले।
पूजूँ तुम्हें उड़द मसूर वा ध्वजादि ले॥ वस्त्राभरण...॥11॥

1. गला

हे देवपुरुष भक्त के दुर्दैव नशाओ।
धनवान पुण्यवान पुत्रवान बनाओ।।
डाकिन पिशाचिनी व कष्ट भूत-प्रेत के।
श्री क्षेत्रपाल भक्त को नहीं सता सके।।
वस्त्राभरण मैं लाऊँ आज घूम-घूमके।
श्री क्षेत्रपाल को सजाऊँ झूम-झूमके।।6।।

हे देव ! तुमने भक्त का उपकार किया है।
इस हेतु मैंने आपका शृंगार किया है।।
इस भक्त के दुःख क्लेश व संकट को काटिये।
धन-धान्य पुण्य धर्म सौख्य शांति बाँटिये।। वस्त्राभरण...।।13।।

रवि चंद्र के समान, देव तेज आपका।
उस तेज से अरिष्ट हरो, पाप ताप का।।
हम क्षेत्रपाल देव को प्रसन्न करेंगे।
श्री क्षेत्रपाल हमको नित प्रसन्न रखेंगे।। वस्त्राभरण...।।14।।

दोहा- क्षेत्रपाल जी आपका, करते हम शृंगार।
'अलका' की अरजी सुनो, मिट जाये दुःख भार।।

(यह गीत बोलते हुए क्षेत्रपालजी का शृंगार करें।)

क्षेत्रपालजी के शृंगार का सामान

वस्त्र (धोती-दुपट्टा), मुकुट, हार, कंकण, कान के कुण्डल, माला (गुलाब, पुष्प, स्वर्ण या चाँदी आदि की), तिलक (बिन्दी), करधनी, अंगूठी, जनेऊ (धातु या सूत की) आदि स्वर्ण अथवा चाँदी के आभूषण तथा स्वर्ण या चाँदी की मूँछ-आँखें आदि (शक्ति अनुसार)।

तेल, तिल, गुड़, चना, उड़द, मसूर, मिठाई (घर की शुद्ध बनी), छप्पन भोग, पुष्प, गन्ना, फल, सुपारी, गोला, श्रीफल, इत्र, दर्पण एवं दूध-दही आदि पंचामृत अभिषेक की सामग्री आदि शृंगार सामग्री अपनी शक्ति अनुसार लाकर अभिषेक शृंगार आदि करें।

***

प.पू. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव संघ

आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव

मुनि श्री सुयशगुप्त जी

मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी

समाधिस्थ गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

ग.आर्यिका क्षमाश्री माताजी

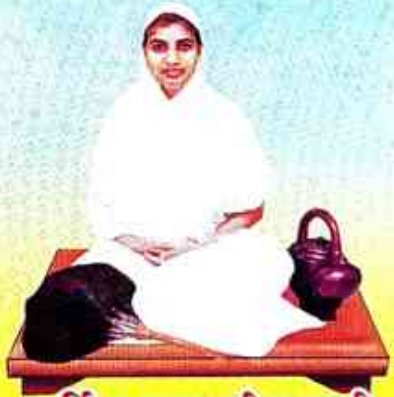

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

आर्यिका सुनिधिमति माताजी

क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी

आर्यिका सुनीतिमति माताजी

श्री क्षेत्रपालजी-स्तवनिधि

श्री क्षेत्रपालजी-रोहतक

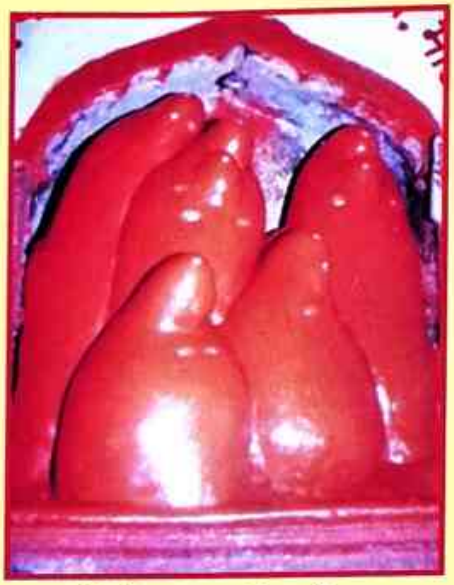

श्री क्षेत्रपालजी-मांडल

श्री क्षेत्रपालजी

श्री क्षेत्रपालजी-सागवाड़ा

श्री क्षेत्रपालजी-सीपूर

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर • मो.: 9829050791, फोन : 2363339, Email : rajugraphicart@gmail.com